# ललिता महात्रिपुरसुन्दरी

## (संक्षिप्त परिचय एवं श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् हिंदी भावार्थ के साथ)

---

**डॉ यतेंद्र शर्मा**

**श्री राम कथा संस्थान, पर्थ**
**ऑस्ट्रेलिया – ६०२५**

## श्री राम कथा संस्थान पर्थ उद्देश्य

- श्री राम कथा संस्थान भगवान् स्वामी श्री रामानंद जी महाराज (१४वीं शताब्दी) की शिक्षाओं पर आधारित एक सनातन वैष्णव धार्मिक संस्था है।
- श्री संस्थान का सिद्धांत धर्म, जाति, लिंग एवं नैतिक पृष्ठभूमि के आधार पर भेदभाव रहित है। 'हरि को भजे सो हरि को होई' संस्थान का मूल मन्त्र है।
- श्री संस्थान का मानना है कि शुद्ध हृदय एवं निःस्वार्थ भाव भक्ति ईश्वर को अति प्रिय है। सभी प्रभु-भक्त एक दूसरे के भाई बहन हैं।
- <u>ब्रह्म मनोभाव</u>: भगवान् श्री राम, माता सीता एवं उनके विविध अवतार ही सर्वोच्च ब्रह्म हैं। वह सर्व-व्याप्त एवं विश्व के संरक्षक हैं।
- <u>आत्मा मनोभाव</u>: आत्मा का अस्तित्व सर्वोच्च ब्रह्म के परमानंद पर निर्भर है। आत्मा को सर्वोच्च ब्रह्म ही निर्देशित एवं प्रबुद्ध करते हैं। श्री राम, माता सीता एवं उनके अवतार ही जीवन का अंतिम उद्देश्य, मोक्ष दिलाने में समर्थ हैं।
- <u>माया मनोभाव</u>: माया प्रकृति के तीन गुण - सत, रज और तमस, के प्रभाव से प्राकट्य होती है। माया को सर्वोच्च ब्रह्म ही नियंत्रित करने में समर्थ हैं। सर्वोच्च ब्रह्म पर ध्यान केंद्र करने से माया का विनाश होता है, और जन्म-मृत्यु के चक्र से छुटकारा मिल मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- श्री संस्थान इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निरंतर सनातन धार्मिक पत्रिकाएं, पुस्तकें, पुस्तिकाएं, काव्य ग्रन्थ आदि की रचनाएं एवं प्रकाशन करता है। साथ ही, समय समय पर श्री राम एवं अन्य धार्मिक कथाओं के संयोजन का भी प्रयास करता रहता है।

# ललिता महात्रिपुरसुन्दरी
## (संक्षिप्त परिचय एवं श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् हिंदी भावार्थ के साथ)

**डॉ यतेंद्र शर्मा**

**प्रकाशक**

**श्री राम कथा संस्थान पर्थ**
**३५ मायना रिट्रीट, हिलरीज़, पर्थ**
**ऑस्ट्रेलिया – ६०२५**

**Website: https://shriramkatha.org**
**Email: srkperth@outlook.com**

# क्रमावली

प्रार्थना.....5
ललिता-महात्रिपुर-सुन्दरी: संक्षिप्त परिचय.....11
माँ ललिता-त्रिपुर-सुंदरी ध्यान.....15
श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् - ध्यानम्.....17
अथ श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रम् – भावार्थ सहित.....19
श्रीललितापञ्चरत्नम्.....94
गुरु-शब्द.....96

# प्रार्थना

श्रुति में ऐसा वर्णन है कि जब जगदम्बा ललिता-त्रिपुर-सुंदरी ने भण्डासुर का वध कर देवराज इंद्र पर कृपा की तथा समस्त देवताओं को भय मुक्त किया, तद्पश्चात महर्षि अगस्त्य ने माँ की प्रशंसा में श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् की रचना की। इस रचना को उन्होंने सर्व प्रथम भगवान् हयग्रीव (भगवान् विष्णु के रूप) के समक्ष प्रकट किया, इसी कारण इसे भगवान् हयग्रीव एवं महर्षि अगस्त्य के संवाद के रूप में भी दर्शाया गया है।

सनातन संस्कृति में श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का विशेष महत्व है। ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् एक ऐसा पवित्र स्तोत्रम् है जिसमें देवी ललिता-त्रिपुर-सुंदरी (आकाश, भूमि व पाताल रुपी तीनों लोकों की सुंदर सर्वोच्च ऊर्जा) के सहस्र नाम सम्मिलित हैं। श्री विद्या पूजा प्रणाली के अनुसार देवी ललिता का निवास बिन्दु (श्री चक्र या महा मेरु का बीज चक्र) में है जो कि कुल लौकिक ऊर्जा के उपरिकेंद्र का प्रतीक है तथा जो सभी जीवों में विस्तारित होता है। प्राचीन ग्रंथों के अनुसार सर्वोच्च देवी के प्रतीकात्मक रूप महामेरु ( त्रि-आयामी, श्री चक्र यंत्र का जयाशमतीय रूप) की पूजा करने से स्वास्थ्य, धन, समृद्धि, समग्र सफलता, मानसिक शांति, पारवारिक सुख आदि प्राप्त होता है तथा आस पास स्थित नकारात्मक ऊर्जा का शमन होकर इच्छाओं की पूर्ति होती है। माँ ललिता आत्मा की उल्लासपूर्ण, क्रियाशील और प्रकाशमय अभिव्यक्ति हैं। वह मुक्त चेतना हैं जिसमे कोई राग द्वेष नहीं। वह आत्मस्थित हैं। वह स्वतः ही उल्लासपूर्ण, उत्साह से भरी हुई हैं। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् में हम देवी माँ के एक सहस्त्र नामों का उच्चारण करते हैं। हर नाम का अपना एक महत्त्व है। यदि हम चन्दन के पेड़ को स्मरण करते हैं तो हम उसके इत्र की स्मृति को भी स्मरण करते हैं। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् में देवी के प्रत्येक नाम से देवी का कोई गुण या विशेषता बताई गई है। हमारे जीवन के विभिन्न पड़ावों में, बालपन से किशोरावस्था, किशोरावस्था से युवावस्था, और इसी प्रकार, हमारी आवश्यक्ताएं और इच्छाएं भी बदलती रहती हैं। इस सब के साथ हमारी चेतना की अवस्था में भी महत्वपूर्ण बदलाव होते रहते हैं। जब हम प्रत्येक नाम का

उच्चारण करते हैं, तब वह गुण हमारी चेतना में जागृत होते हैं और जीवन में आवश्यक्तानुसार प्रकट होते हैं। माता श्री ललिताम्बा के नाम के पाठ से हम अपने भीतर विभिन्न गुणों को जागृत करके उन गुणों को अपने चारों ओर के संसार में प्रकट होते देख और समझ पाने की शक्ति पाते हैं। हम प्राचीन ऋषियों के आभारी हैं जिन्होंने दिव्यता का आराधन उसके संपूर्ण वैविध्य गुणों के साथ किया। जिन्होंने हमारे जीवन को पूर्णता से जीने का मार्ग प्रशस्त किया। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का पाठ स्वयं में ही एक अनुष्ठानात्मक विधि है। ये मन को शुद्ध करके चेतना का उत्थान करता है। इस जप से हमारा चंचल मन शांत होता है। मन ईश्वर से एक रूप और उनके गुणों के प्रति एकाग्र होता है। मन का भटकना रुक जाता है। यह विश्राम का सामान्य रूप है।

श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् में भाषा का सौंदर्य अद्भुत है। भाषा अत्यंत मोहक है। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् में सामान्य और गहरे अर्थ दोनों ही चित्ताकर्षक हैं। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् पाठक को माँ के एक सहस्र नाम में वर्णित विभिन्न गुणों की पहचान कराकर उनके दोनों प्रकार के (गूढ़ और सामान्य) अर्थों की झलक देने के उद्देश्य को पूरा करती है। इस ग्रन्थ में माँ ललिताम्बा के विशिष्ट गुण के विभिन्न सन्दर्भ को अत्यंत सुंदर विधि से पिरोया गया है। हम मनुष्यों का जन्म इस धरा पर एक अत्यंत सुन्दर और महान लक्ष्य के लिए हुआ है। जब श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का श्रद्धा और विश्वास के साथ पाठ किया जाता है, तब माता ललिताम्बा हमारी चेतना को शुद्धि प्रदान कर सकारात्मकता, क्रियाशीलता और उल्लास का भंडार बना देती हैं। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् के पाठ करते हुए मन को अत्यंत शांति मिलती है। अवांछित चिंताओं और विचलित करने वाले विचारों से मुक्ति मिलती है। इससे मन में सकारात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने और कुशलता सीखने की शक्ति प्राप्त होती है। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् जीवन में बाधाओं को दूर करने का एक अद्भुत उपाय है। यह मनुष्य के जीवन में उपस्थित महत्वपूर्ण योजनाओं को शीघ्रता से और मार्ग में बाधाओं और चुनौतियों को दूर करने में सहायता करता है। बढ़ती ऊर्जा स्तर और आत्मविश्वास के साथ मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्यों की ओर शीघ्रता पूर्वक और ऊर्जावान रूप से आगे बढ़ते हैं।

श्रुति में ऐसा उल्लेख है कि श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् के पाठ से इष्टदेवी प्रसन्न हो जाती हैं और उपासक की कामना को पूर्ण करती हैं। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् के जप से दुष्ट ग्रहों की बुरी दशा के कारण आ रही कठिनाईयों से विश्राम मिलता है। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् से अभिमंत्रित भस्म को धारण करने से सभी ऋतुजनित रोग शान्त हो जाते हैं। इसी प्रकार श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् से अभिमंत्रित जल से अभिषेक करने से दुःखी मनुष्यों की पीड़ा शांत हो जाती है। सुधासागर के मध्य में श्री ललिताम्बा का ध्यान कर पंचोपचार पूजन करके श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् पाठ करने या सुनने से आन्तरिक व्याधियों से विश्राम एवं सर्प आदि की विष पीड़ा भी शांत हो जाती है। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् एवं श्री ललितासहस्रनामावली के पाठ से आकस्मिक मृत्यु और दुर्घटना का भय नहीं रहता है। श्री श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का पाठ करने वाले साधक को देखकर सभी लोग मुग्ध होने लगते है। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का पाठ करने वाले साधक के शत्रुओं को पक्षीराज भगवान शरभेश्वर नष्ट कर देते हैं। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का पाठ करने वाले साधक के विरुद्ध अभिचार करने वाले शत्रु को माँ प्रत्यंगिरा नष्ट कर देती हैं। साधक को क्रूर दृष्टि से देखने वाले वैरी को मार्तंड भैरव अंधा कर देते हैं। जो श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का पाठ करने वाले साधक की चोरी करता है उसे क्षेत्रपाल देवता दण्ड देते हैं। यदि कोई विद्वान विद्वता के गर्व में आकर श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का पाठ करने वाले साधक से शास्त्रार्थ करता है, तो माता उसका वाकस्तम्भन कर देती हैं। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का पाठ करने वाले साधक के शत्रु चाहे वह राजा ही क्यों न हो, माँ दण्डिनी उसे नष्ट कर देती हैं। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का पाठ करने से व्यक्ति यश एवं प्रसिद्धि को प्राप्त कर लेता है। व्यक्ति को जीवन की मूलभूत आवश्यक्ताओं के लिए दुःखी नहीं होना पड़ता। वन्ध्या (बाँझ) स्त्री को श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् से अभिमंत्रित माखन खिलाने से वह शीघ्र गर्भ धारण करती है। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का पाठ करने से घर का वातावरण शुद्ध होता है। पाठ करने वाले व्यक्ति के शरीर का एक-एक कण अद्भुत ऊर्जा और ओज से भर जाता है। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का निष्काम पाठ करने से ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति होती है, जिससे साधक आवागमन के बंधन से मुक्त हो जाता है।

श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का पाठ करने से धनकामी को धन, विद्यार्थी को विद्या एवं यशकामी को यश की प्राप्ति होती है।

माँ ललिता माहेश्वरी शक्ति स्वरुपिणी षोडशी सबसे मनोहर श्री विग्रह वाली सिद्ध देवी हैं। महाविद्याओं में भगवती षोडशी का चौथा स्थान है। षोडशी महाविद्या को श्रीविद्या भी कहा जाता है। षोडशी महाविद्या के ललिता, त्रिपुरा, राज-राजेश्वरी, महा-त्रिपुर-सुन्दरी, बालापञ्चदशी आदि अनेक नाम हैं। लक्ष्मी, सरस्वती, ब्रह्माणी- तीनों लोकों की सम्पत्ति एवं शोभा का ही नाम श्री है।

'त्रिपुरा' शब्द का अर्थ बताते हुए 'शक्तिमहिम्न स्तोत्रम्' में कहा गया है:

**'तिसृभ्यो मूर्तिभ्यः पुरातनत्वात् त्रिपुरा ।**

अर्थात: ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश, इन तीनों से जो पुरातन है, वही त्रिपुरा है।

'त्रिपुरार्णव' ग्रन्थ में कहा गया है:

**नाडीत्रयं तु त्रिपुरा सुषुम्ना पिङ्गला विडा |**
**मनो बुद्धिस्तथा चित्तं पुरत्रयमुदाहृतम् |**
**तत्र तत्र वसत्येषा तस्मात् तु त्रिपुरा मता ||**

अर्थात: सुषुम्ना, पिंगला और इडा, ये तीन नाडियां हैं। मन, बुद्धि एवं चित्त, ये तीन पुर हैं। इनमें रहने के कारण इनका नाम त्रिपुरा है।

सोलह अक्षरों के मन्त्र वाली ललिता देवी की अङ्गकान्ति उदीयमान सूर्यमण्डल की आभा की भांति है। षोडशी माता चार भुजाएं एवं तीन नेत्र वाली हैं। ये शान्त मुद्रा में लेटे हुए सदाशिव पर स्थित कमल के आसन पर आसीन हैं। भगवती षोडशी के चारों हाथों में क्रमश: पाश, अङ्कुश, धनुष और बाण सुशोभित हैं।

वर देने के लिये सदा-सर्वदा तत्पर भगवती षोडशी का श्रीविग्रह सौम्य और हृदय दया से आपूरित है।

प्रशान्त हिरण्यगर्भ ही शिव हैं और उन्हीं की शक्ति षोडशी हैं। तन्त्रशास्त्रों में महाविद्या षोडशी देवी को पञ्चवक्त्रा अर्थात् पाँच मुखों वाली बताया गया है। चारों दिशाओं में चार मुख, और एक ऊपर की ओर मुख होने से इन्हें पञ्चवक्त्रा भी कहा जाता है। देवी के पाँच मुख, तत्पुरुष, सद्योजात, वामदेव, अघोर और ईशान, शिव के पाँच रूपों के प्रतीक हैं। पाँचों दिशाओं के रंग क्रमशः हरित, रक्त, धूम्र, नील और पीत होने से ये मुख भी इन्हीं रंगों के हैं। देवी षोडशी के दस हाथों में क्रमश: अभय, टंक, शूल, वज्र, पाश, खड्ग, अंकुश, घण्टा, नाग और अग्नि हैं। षोडश कलाएँ पूर्णरूप से विकसित होने के कारण ये महाविद्या षोडशी कहलाती हैं।

भैरवयामल तथा शक्तिलहरी में षोडशी मां की उपासना का विस्तृत परिचय मिलता है। दुर्वासा ऋषि श्रीविद्या के परमाराधक हुए हैं। षोडशी महाविद्या की उपासना श्रीचक्र में होती है। श्रीयन्त्र को यन्त्रराज की संज्ञा दी गई है इसमें दसों महाविद्याओं का अर्चन सम्पन्न हो जाता है। यदि पूजा के लिए कोई विग्रह उपलब्ध न हो तो मान्यता है कि शालग्राम, पारद शिवलिंग और श्रीयन्त्र इन तीनों में से कोई एक विग्रह भी उपलब्ध हो तो उसमें ही समस्त देवी-देवताओं की आराधना सम्पन्न की जा सकती है।

माँ ललिता से हम प्रार्थना करते हैं कि वह पाठकों की समस्त इच्छाओं को पूर्ण कर उन्हें सुख, शान्ति, वैभव, धन-धान्य, आत्मिकता प्रदान करें एवं भव सागर से मुक्त करें।

मैं सभी श्री राम कथा संस्थान के परामर्श दाताओं, विशेषकर सुश्री श्रीमती सीमा सक्सेना का आभारी हूँ जिन्होंने किसी न किसी प्रकार इस पुस्तिका के लेखन में मदद की।

माँ के चरणों में,

डॉ यतेंद्र शर्मा

**श्री राम कथा संस्थान पर्थ**
**३५ मायना रिट्रीट, हिलरीज़, पर्थ**
**ऑस्ट्रेलिया – ६०२५**
**Website: https://shriramkatha.org**
**Email: srkperth@outlook.com**

१९ अगस्त २०२३

# ललिता-महात्रिपुर-सुन्दरी: संक्षिप्त परिचय

हिंदू पौराणिक कथाओं (ब्रह्म-पुराण) में देवी त्रिपुर-सुंदरी के उत्पत्ति का रहस्य विस्तार पूर्वक बताया गया है।

माँ सती ने प्रजापति दक्ष के यज्ञ में भगवान महादेव का भाग न देखकर योगाग्नि से अपना शरीर त्याग दिया था। सती वियोग के पश्चात भगवान महादेव सर्वदा ध्यानमग्न रहते थे। उन्होंने अपने संपूर्ण कर्म का परित्याग कर दिया था जिसके कारण तीनों लोकों के संचालन में व्याधि उत्पन्न हो रही थी। उधर तारकासुर ने ब्रह्मदेव की अत्यंत कठिन साधना कर उनसे वर प्राप्त किया था कि उसकी मृत्यु भगवान महादेव के पुत्र द्वारा ही हो। वह एक प्रकार से अमर हो गया था। माँ सती के देह त्याग करने के पश्चात भगवान महादेव संसार से विरक्त हो घोर ध्यान में चले गए थे। उनकी अर्धांग्नी न होने से उनके पुत्र की संभावना भी नहीं थी। तारकासुर ने तीनों लोकों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर समस्त देवताओं को प्रताड़ित कर स्वर्ग से निकाल दिया। वह समस्त भोगों को स्वयं ही भोगने लगा था।

इसी समय माँ सती ने हिमालय के गृह में माँ पार्वती के रूप में पुनर्जन्म लिया तथा नारद जी के आवाह्न पर भगवान महादेव को पति रूप में पाने हेतु उन की कठोर साधना की।

सभी देवगण तारकासुर के अत्याचार से भयभीत हो अब चाहते थे कि भगवान् महादेव अपनी साधना से जागें और माँ पार्वती से विवाह करें ताकि उनके पुत्र इस असुर तारकासुर का वध कर सकें। देवताओं ने भगवान महादेव को ध्यान से जगाने हेतु कामदेव को कैलाश भेजा। कामदेव ने कुसुम-सर-नमक मोहिनी वाण से भगवान शिव शंकर पर प्रहार किया। परिणामस्वरूप भगवान महादेव का ध्यान भंग हो गया। भगवान् महादेव अपनी तपस्या के भंग होने से कामदेव पर अत्यंत क्रोधित हो गए। तब महादेव ने अपना तीसरा नेत्र खोल दिया। देखते ही देखते भगवान महादेव के तीसरे नेत्र से उत्पन्न क्रोध-अग्नि ने कामदेव को जला कर भस्म कर दिया। कामदेव की पत्नी रति द्वारा अत्यंत दारुण विलाप करने पर भगवान महादेव ने तब कामदेव को पुनः द्वापर युग में भगवान कृष्ण के पुत्र रूप में जन्म धारण करने का वरदान दिया। सभी देवताओं तथा रति के जाने के पश्चात भगवान महादेव के एक गण द्वारा कामदेव की भस्म से एक मूर्ति निर्मित की गई।

उस निर्मित मूर्ति से एक पुरुष का प्राकट्य हुआ। उस प्राकट्य पुरुष ने भगवान महादेव की अति उत्तम स्तुति की। स्तुति से प्रसन्न हो भगवान महादेव ने भण्ड (अच्छा)! भण्ड (अच्छा)! कहा। तदन्तर भगवान महादेव द्वारा उस पुरुष का नाम भण्ड रखा गया तथा उसे ६० हजार वर्षों तक राज करने का वरदान दिया। चूँकि भण्ड की उत्पत्ति भगवान महादेव के क्रोध द्वारा भाष्मित कामदेव की भस्म से हुई थी, अतः भण्ड पूर्ण रूप से तमोगुण सम्पन्न था। उसकी इस आसुरीय प्रकृति के कारण उसका नाम भण्डासुर पड़ गया।

भण्डासुर को भगवान महादेव द्वारा वरदान मिलने की बात कुछ ही क्षणों में सम्पूर्ण भुवनों में फैल गयी। दैत्य एवं दानव वंश के गुरु शुक्राचार्य यह समाचार पाकर भण्डासुर के पास सभी दैत्य एवं दानव वंश के समुदाय के साथ मिलने आए। गुरु शुक्राचार्य ने दानव मय के द्वारा शोणितपुर को फिर से सुसज्जित कराकर वहाँ भण्डासुर का अभिषेक कर दिया।

प्रारम्भ में भण्डासुर भगवान महादेव की अर्चना करता और उनके आदेश पर चलता था। उसके अनुयायी दैत्य वंश के अन्य सम्राट एवं प्रजा भी धर्म का अनुसरण करते थे। प्रत्येक घर वेदों की ध्वनि से गुंजित रहता था। घर घर में यज्ञ होता था। इस तरह सौभाग्यशाली भण्ड के सुख-समृद्धि के साठ हजार वर्ष देखते देखते बीत गये ।

भण्डासुर बाद में माया की चपेट में पड़ गया। अब चार पत्नियों से भी उसे संतोष न था। वह एक दिव्य वारांगना के मोह में पड़ गया। उसका अनुसरण करते हुए उसके मन्त्री आदि अनुयायी भी विलासी बनते चले गये। अब न किसी को भगवान महादेव याद आते, न पूजा-पाठ ही। यज्ञ और वेद के उच्चारण भी अब बंद हो गये थे।

वह शनैः शनैः तीनों लोकों पर भयंकर उत्पात मचाने लगा। देवराज इंद्र के स्वर्ग समान ही भण्डासुर ने अपने राज्य का निर्माण किया तथा राज करने लगा। वह अपने राज्य की सीमाएं बढ़ाने के लालच में पड़ गया। तदन्तर भण्डासुर ने स्वर्ग लोक पर आक्रमण कर देवराज इन्द्र तथा स्वर्ग राज्य को चारों ओर से घेर लिया। भयभीत इंद्र ब्रह्मऋषि नारद की शरण में गए तथा इस समस्या के निवारण हेतु उपाय पूछा। ब्रह्मऋषि नारद ने आदि-शक्ति की यथा विधि आराधना करने का

परामर्श दिया। तब देवराज इंद्र ने ब्रह्मऋषि नारद द्वारा बताये हुए साधना पथ का अनुसरण करते हुए देवी की आराधना प्रारम्भ की।

इधर गुरु शुक्राचार्य भण्डासुर के पास आये और उसे सावधान करते हुए उन्होंने कहा, 'हे भण्डासुर, देवता अपनी विजय के लिये हिमालय में आदि-शक्ति की उपासना कर रहे हैं। यदि आदि-शक्ति उनकी आराधना से प्रसन्न हो गईं तो तुम कहीं के न रह जाओगे। अत: तुम शीघ्र ही देवताओं की आराधना में विघ्न डालो।'

गुरु शुक्राचार्य के आदेश पर तब भण्डासुर ने दल-बल के साथ देवताओं पर चढ़ाई कर दी। आदि-शक्ति ने अपनी शरण में आये हुए देवताओं की रक्षा के लिये ज्योति की एक अलंघ्य दीवार खड़ी कर दी। भण्डासुर यह देखकर क्रोध से जल उठा। उसने दानवास्त्र चलाकर उसे तोड़ डाला। परंतु तत्क्षण ही वहाँ पुन: अलंघ्य दीवार खड़ी हो गयी। इस बार भण्डासुर ने वायव्यास्त्र से इसे तोड़ा। किंतु तत्क्षण भण्डासुर ने उसी दीवार को फिर से खड़ी देखा। दीवार तोड़ने में समय लगता था, किंतु खड़ी होने में समय नहीं लगता था। भण्डासुर ने अंततः अपनी हार स्वीकार कर ली और वह वापस अपनी राजधानी शोणितपुर लौट आया।

युद्ध से हारकर भण्डासुर लौट तो अवश्य गया था, किंतु उसके भय से देवताओं की दशा दयनीय हो गयी थी। वह सोचते थे कि जिस दिन दीवार नहीं रहेगी उस दिन उनका भण्डासुर से बच सकना कठिन हो जायगा। कहीं छिपकर रहना भी असंभव हो हो गया था। अन्त में देवताओं ने निर्णय लिया कि या तो आदि-शक्ति दर्शन दें और हमारी रक्षा करें अथवा यहीं भण्डासुर के हाथों मारे जायें। उन्होंने अपनी आराधना और बढ़ा दी। हृदय की पुकार थी। आदि-शक्ति प्रकट हो गयीं। उनके अद्भुत दर्शन पाकर देवता कृतकृत्य हो गये। गद्गद होकर देवताओं ने माँ आदि-शक्ति की स्तुति की। ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी उस समय वहां आ गये।

आदि-शक्ति का स्वरूप श्रृंगार देवी के रूप में था। ब्रह्मा ने उन्हें ललिता महा सुंदरी नाम से सम्बोधित किया। यह देवी तो माँ सती का ही स्वरुप है, यह विचारकर ब्रह्मा ने इनका विवाह भगवान महादेव से कराने का संकल्प किया। संकल्प करते ही सौन्दर्यसार के स्वरूप में भगवान महादेव कुमार बनकर वहाँ प्रकट हो गये। यह देखकर सब देवगण आनन्द विभोर हो गये। ब्रह्मा ने तब भगवान महादेव का नाम कामेश्वर रख दिया। जब कामेश्वर आदि-शक्ति के सामने आए तब दोनों एक दूसरे को देखकर मुग्ध हो गये। ब्रह्मा ने उन दोनों का तब

तुरंत विवाह करा दिया और आदि-शक्ति को उस पुर की अधीश्वरी बना दिया। शक्ति और शक्तिमान् का मेल हो जाने से वहाँ अखण्ड आनन्द की वृष्टि होने लगी। बहुत दिनों तक उत्साह के साथ विवाहोत्सव मनाया गया।

उधर भण्डासुर ने सारे विश्व को त्रस्त कर रखा था। उसने अहंकार में आकर अपने जनक भगवान महादेव की भी घोर अवहेलना करना प्रारम्भ कर दिया था। विश्व की रक्षा के लिये भगवान महादेव के निर्देश पर तब देवी ललिताम्बा ने भण्डासुर के साथ युद्ध किया।

देवी ललिताम्बा के साथ युद्ध में भण्डासुर ने दैवीय अस्त्रों का प्रयोग किया। उस दुष्ट ने सर्व प्रथम 'पाषण्ड' नाम के दिव्य अस्त्र का प्रयोग किया। तब पराम्बा ने उसका प्रत्युत्तर 'गायत्री' नाम के अस्त्र से दिया और उसके प्रभाव को निरस्त किया। जब भण्डासुर ने 'स्मृतिनाश' अस्त्र का प्रयोग किया, तब माँ ने 'धारणा' अस्त्र द्वारा उसे नष्ट किया। जब भण्डासुर ने 'यक्ष्मा' आदि रोगरूप अस्त्रोंका प्रयोग किया, तब पराम्बा ने 'अच्युत, अनन्त, गोविन्द' (अच्युतानन्तगोविन्दनामोच्चारण भेषजात्) नाम रूप मन्त्रों से उसका निवारण किया। इसके बाद भण्डासुर ने हिरण्याक्ष, हिरण्यकशिपु, रावण, कंस और महिषासुर को उत्पन्न किया। तब ललिताम्बा ने अपनी दसों अंगुलियों के नख से वराह, नृसिंह, राम, कृष्ण, दुर्गा आदि को उत्पन्न किया। युद्ध के अन्तिम भाग में पराम्बा ने भण्डासुर का उद्धार 'कामेश्वर' अस्त्र से किया। माता ललिताम्बा के अस्त्र-शस्त्र इक्षु दण्ड और पुष्प थे। कामेश्वर का अस्त्र भी काम–बीजरूप प्रेमतत्त्व ही था।

इस तरह माँ ने भण्डासुर का वध कर देवराज इंद्र पर कृपा की तथा समस्त देवताओं को भय मुक्त किया।

# माँ ललिता-त्रिपुर-सुंदरी ध्यान

माँ देवी ललिता का ध्यान बहुत ही उज्ज्वल व प्रकाशमान है। माँ ललिता देवी की पूजा से समृद्धि की प्राप्त होती है ।

माँ की पूजा तीन स्वरूपों में होती है:

**१ . बाल सुंदरी: ८ वर्षीया कन्या रूप में।**

**अरुणकिरण-जालै रञ्जितासावकाशा।**
**विधृतजप-वटीका पुस्तकाभीति-हस्ता॥**
**इतरकर-वराढ्या फुल्ल-कलार-संस्था।**
**निवसतु हृदि बाला नित्य कल्याणरूपा ॥**

*भावार्थ: भगवती श्री बाला-त्रिपुर-सुन्दरी के शरीर की आभा अरुणोदय काल के सूर्य-बिम्ब के समान रक्त-वर्ण की है। उस आभा की किरणों से सभी दिशाएँ एवं अन्तरिक्ष लाल रङ्ग से रँगे हुए हैं। चार कर-कमलों में जप-माला, पुस्तक, अभय और वर-मुद्राएँ हैं। पूर्ण खिले हुए रक्त कमल के पुष्प पर माँ विराजमान हैं। ऐसी श्री बाला जगत् का नित्य कल्याण करने वाली हैं। वे मेरे हदय में निवास करें।*

**2. षोडशी त्रिपुर सुंदरी: १६ वर्षीया सुंदरी।**

**सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत् तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम्।**
**पाणिभ्यामलिपूर्णलनचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत् परामम्बिकाम्।।**

*भावार्थ: सिन्दूर के समान अरुण विग्रह वाली, तीन नेत्रों से सम्पन्न, माणिक्य जटित प्रकाशमान मुकुट तथा चन्द्रमा से सुशोभित मस्तक वाली, मुस्कान युक्त मुख मण्डल एवं स्थूल वक्षःस्थल वाली, अपने दोनों हाथों में से एक हाथ में मधु से परिपूर्ण रत्ननिर्मित मधु कलश तथा दूसरे हाथ में लाल कमल धारण करने वाली तथा रत्नमय घट पर अपना रक्त चरण रखकर सुशोभित होने वाली शान्त स्वभाव भगवती पराम्बिका का ध्यान करना चाहिये।*

## ३. ललिता त्रिपुर सुंदरी: युवा स्वरूप।

**ध्यायेत्पद्मासनस्थां पद्मपत्रायताक्षी वराङ्गीम्।**
**सर्वालङ्कारयुक्तां सततमभयदां भक्तनम्रां भवानी विकसितवदनां हेमाभां पीतवस्त्रां करकलितलसद्धेमपद्मां श्रीविद्यां शान्तमूर्ति सकलसुरनुतां सर्वसम्पत्प्रदात्रीम्॥**

*भावार्थ: कमल के आसन पर विराजमान, प्रसन्न मुख मण्डल वाली, कमल-दल के सदृश विशाल नेत्रों वाली, स्वर्ण के समान आभा वाली, पीतवर्ण वस्त्र धारण करने वाली, अपने कोमल हाथ में स्वर्णिम कमल धारण करने वाली, सुन्दर शरीरावायव से सुशोभित, सभी प्रकार के आभूषणों से अलंकृत, निरन्तर अभय प्रदान करने वाली, भक्तों के प्रति कोमल स्वभाव रखने वाली, शान्त मूर्ति, सभी देवताओं से नमस्कृत तथा सम्पूर्ण सम्पदा प्रदान करने वाली भवानी श्री विद्या का ध्यान करना चाहिये।*

माँ की दीक्षा और साधना भी इसी क्रम में की जाती है।

बृहन्नीला तंत्र के अनुसार काली के दो भेद कहे गए हैं, कृष्ण वर्ण और रक्त वर्ण। कृष्ण वर्ण काली दक्षिण कालिका स्वरुप है और रक्त वर्ण त्रिपुर सुंदरी। माँ ललिता त्रिपुर सुंदरी रक्त काली स्वरूपा मानी जाती हैं।

महा विद्याओं में कोई स्वरुप भोग देने में प्रधान है तो कोई स्वरूप मोक्ष देने में, परंतु ललिता त्रिपुर सुंदरी अपने साधक को दोनों ही देती हैं।

शुक्ल पक्ष के समय प्रात: काल माता की पूजा उपासना की जाती है। कालिका-पुराण के अनुसार देवी की दो भुजाएं हैं जो गौर वर्ण की रक्तिम कमल पर विराजित हैं।

ये श्री यंत्र की मूल अधिष्ठात्री देवी हैं। श्री यंत्र को पंचामृत से स्नान करवा कर यथोचित पूजन और श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम्, ललितात्रिशतिललितोपाख्यान और श्री सूक्त का पाठ करने से सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों ही लाभ होते हैं ।

# श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् - ध्यानम्

## न्यासः

**अस्य श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रमालामन्त्रस्य । वशिन्यादिवाग्देवता ऋषयः। अनुष्टुप्छन्दः । श्रीललितापरमेश्वरी देवता । श्रीमद्वाग्भवकूटेति बीजम् । मध्यकूटेति शक्तिः । शक्तिकूटेति कीलकम् । श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी-प्रसादसिद्धिद्वारा चिन्तितफलावाप्त्यर्थे जपे विनियोगः ।**

*भावार्थ: श्री ललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् स्तोत्र माला-मन्त्र वशिन्यादि वाग्देवता एवं अन्य ऋषियों द्वारा कथित एक महत्वपूर्ण अनुष्टुप छंद है। मैं श्री ललिता परमेश्वरी देवी को नमन करता हूँ। माँ ललिता ही पंचदसी मन्त्र, श्री ईश्वर रूप, काव्य एवं शक्ति हैं। श्रीललिता-महात्रिपुर-सुन्दरी के जप से वांछित फलों की प्राप्ति होती है।*

## ध्यानम्

**सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत्**
**तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम् ।**
**पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं**
**सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम् ॥**

*भावार्थ: हम उन माँ का ध्यान करते हैं जिनके तन पर सिन्दूर का लाल रंग चढ़ा हुआ है, जिनके तीन नेत्र हैं, जो मष्तिष्क पर मणिक जड़ित ताज पहने हुए हैं, जो चन्द्रमा के आभामंडल के सामान देदीप्यमान हैं, जिनके मुख पर चपल मुस्कुराहट है, जिनका दयावान रूप है, जिनके अंग अत्यंत सुन्दर हैं, जिनके एक हाथ में रत्न-जड़ित स्वर्ण कलश है जिसमें अमृत भरा हुआ है और दूसरे हाथ में कमल पुष्प है।*

**अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं धृतपाशाङ्कुशपुष्पबाणचापाम् ।**
**अणिमादिभिरावृतां मयुखैः अहमित्येव विभावये भवानीम् ॥**

*भावार्थ: मैं महान विश्व-साम्राज्ञी माँ पर ध्यान केंद्रित करता हूँ (पूजन करता हूँ) जिनका वर्ण (अति सुन्दर) लाल है, जिनके नेत्रों में करुणा भरी है, जिनके हाथों में बंधन, अंकुश, धनुष एवं पुष्प-बाण सुशोभित हैं, जो आभामान शक्तियों से घिरी हुई हैं तथा स्वयं ही ब्रह्म हैं।*

**ध्यायेत्पद्मासनस्थां विकसितवदनां पद्मपत्रायताक्षीं**
**हेमाभां पीतवस्त्रां करकलितलसद्धेमपद्मां वराङ्गीम् ।**
**सर्वालङ्कारयुक्तां सततमभयदां भक्तनम्रां भवानीं**
**श्रीविद्यां शान्तमूर्तिं सकलसुरनुतां सर्वसम्पत्प्रदात्रीम् ॥**

*भावार्थ: मैं उन दिव्य माँ पर ध्यान केंद्रित करता हूँ जो कमल-पत्र पर आसीन हैं, जिनका सिंहासन स्वर्ण से निर्मित है, जो हाथ में कमल पुष्प लिए हैं, जो अपने भक्तों के भय को दूर करती हैं, जो स्वयं शांति एवं विद्या का स्वरुप हैं, जो सभी देवी-देवताओं द्वारा प्रशंसनीय हैं, जो अपने भक्तों को धन-धान्य प्रदान करती हैं।*

**सकुङ्कुमविलेपनामलिकचुम्बिकस्तूरिकां**
**समन्दहसितेक्षणां सशरचापपाशाङ्कुशाम् ।**
**अशेषजनमोहिनीमरुणमाल्यभूषाम्बरां**
**जपाकुसुमभासुरां जपविधौ स्मरेदम्बिकाम् ॥**

*भावार्थ: मैं उन माँ पर ध्यान केंद्रित करता हूँ जो सदैव मुस्कुराती रहती हैं, जिनके हाथों में धनुष, बाण, बंधन एवं अंकुश सुशोभित हैं, जो लाल रंग की माला एवं विभिन्न आभूषणों से सुशोभित हो रहीं हैं, जिनके मस्तिष्क पर कुमकुम सुशोभित है, जिनका वर्ण अति सुन्दर लाल रंग का है और जिनका तन जप-पुष्प के समान सुगन्धित है।*

# अथ श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रम् – भावार्थ सहित

**श्रीमाता श्रीमहाराज्ञी श्रीमत्-सिंहासनेश्वरी ।**
**चिदग्नि-कुण्ड-सम्भूता देवकार्य-समुद्यता ॥ १॥**

१. ***श्रीमाता:*** *श्री (धन-धान्य एवं ऐश्वर्य) देने वाली पवित्र माँ*
२. ***श्रीमहाराज्ञी:*** *ब्रह्माण्ड की साम्राज्ञी माँ*
३. ***श्रीमत्-सिंहासनेश्वरी:*** *सिंह के सिंहासन पर विराजमान माँ*
४. ***चिदग्नि-कुण्ड-सम्भूता:*** *ज्ञान की अग्नि से उत्पन्न परम सत्य माँ*
५. ***देवकार्य-समुद्यता****: देवों के कार्य करने वाली माँ*

**उद्यद्भानु-सहस्राभा चतुर्बाहु-समन्विता ।**
**रागस्वरूप-पाशाढ्या क्रोधाकाराङ्कुशोज्ज्वला ॥ २॥**

६. ***उद्यद्भानु-सहस्राभा:*** *सहस्त्रों सूर्य सम आभा वाली माँ*
७. ***चतुर्बाहु-समन्विता:*** *चतुर्भुजी माँ*
८. ***रागस्वरूप-पाशाढ्या:*** *प्रेम की रस्सी से बंधी हुई (प्रेम-स्वरूपा) माँ*
९. ***क्रोधाकाराङ्कुशोज्ज्वला:*** *अति आभा वाली क्रोध की देवी माँ*

**मनोरूपेक्षु-कोदण्डा पञ्चतन्मात्र-सायका ।**
**निजारुण-प्रभापूर-मज्जद्ब्रह्माण्ड-मण्डला ॥ ३॥**

१०. ***मनोरूपेक्षु-कोदण्डा:*** *मष्तिस्क को निरूपित करने वाले गन्ने से निर्मित धनुष धारणी माँ*
११. ***पञ्चतन्मात्र-सायका:*** *स्पर्श, गंध, श्रवण, स्वाद एवं दृष्टि - पञ्च धनुष धारिणी माँ*
१२. ***निजारुण-प्रभापूर-मज्जद्ब्रह्माण्ड-मण्डला:*** *भोर सूर्य भांति समस्त ब्रह्माण्ड को लाल आभा में डुबाने वाली माँ (अर्थात तन एवं मन को दीप्ति प्रदान करने वाली माँ)*

**चम्पकाशोक-पुन्नाग-सौगन्धिक-लसत्कचा ।**
**कुरुविन्दमणि-श्रेणी-कनत्कोटीर-मण्डिता ॥ ४॥**

१३. ***चम्पकाशोक-पुन्नाग-सौगन्धिक-लसत्कचा:*** *चम्पक, पुन्नागा एवं सौगन्धिका के पुष्प को अपने केशों में धारण करने वाली माँ*
१४. ***कुरुविन्दमणि-श्रेणी-कनत्कोटीर-मण्डिता:*** *कुरविन्द के समान बहुमूल्य रत्नों से जड़ित मुकुट धारण करने वाली माँ*

**अष्टमीचन्द्र-विभ्राज-दलिकस्थल-शोभिता ।**
**मुखचन्द्र-कलङ्काभ-मृगनाभि-विशेषका ॥ ५॥**

१५. ***अष्टमीचन्द्र-विभ्राज-दलिकस्थल-शोभिता:*** *मष्तिष्क पर शुक्ल पक्ष अष्टमी के चन्द्रमा की भांति अर्ध-चंद्र मुकुट धारिणी माँ*
१६. ***मुखचन्द्र-कलङ्काभ-मृगनाभि-विशेषका:*** *चन्द्रमा की काली छाया के समान चमकती हुई कस्तूरी बिंदी मस्तिष्क पर धारण करने वाली माँ*

**वदनस्मर-माङ्गल्य-गृहतोरण-चिल्लिका ।**
**वक्त्रलक्ष्मी-परीवाह-चलन्मीनाभ-लोचना ॥ ६॥**

१७. ***वदनस्मर-माङ्गल्य-गृहतोरण-चिल्लिका:*** *कामदेव की पलकों के समान आभूषण जैसी प्रदर्शित आभा वाली सुन्दर पलकों वाली माँ*
१८. ***वक्त्रलक्ष्मी-परीवाह-चलन्मीनाभ-लोचना:*** *तालाब में तैरती मछली के चमकते नेत्रों के समान आभित नयनों वाली माँ*

**नवचम्पक-पुष्पाभ-नासादण्ड-विराजिता ।**
**ताराकान्ति-तिरस्कारि-नासाभरण-भासुरा ॥ ७॥**

१९. ***नवचम्पक-पुष्पाभ-नासादण्ड-विराजिता:*** *चम्पक के नव-पुष्पण पुष्प के समान सुन्दर नासिका वाली माँ*

२०. ***ताराकान्ति-तिरस्कारि-नासाभरण-भासुरा:*** *नक्षत्रों के समान शोभित नासिका आभूषण से अलंकृत माँ*

**कदम्बमञ्जरी-कॢप्त-कर्णपूर-मनोहरा ।**
**ताटङ्क-युगली-भूत-तपनोडुप-मण्डला ॥ ८॥**

२१. ***कदम्बमञ्जरी-कॢप्त-कर्णपूर-मनोहरा:*** *कदम्ब पुष्प समान सुन्दर कर्ण आभूषण धारिता माँ*
२२. ***ताटङ्क-युगली-भूत-तपनोडुप-मण्डला:*** *चन्द्रमा एवं सूर्य को आभूषण की भांति अपने कर्णों में धारण करने वाली माँ*

**पद्मराग-शिलादर्श-परिभावि-कपोलभू: ।**
**नवविद्रुम-बिम्बश्री-न्यक्कारि-रदनच्छदा ॥ ९॥**

२३. ***पद्मराग-शिलादर्श-परिभावि-कपोलभू::*** *पद्मराग (रूबी रत्न) निर्मित दर्पण से भी अधिक उत्कृष्ट कपोल वाली माँ*
२४. ***नवविद्रुम-बिम्बश्री-न्यक्कारि-रदनच्छदा:*** *मूंगा एवं कुंदरू के नव-छेदित फलों के समान प्रतिबिंबित आभामान होठों वाली माँ*

**शुद्ध-विद्याङ्कुराकार-द्विजपङ्क्ति-द्वयोज्ज्वला ।**
**कर्पूर-वीटिकामोद-समाकर्षि-दिगन्तरा ॥ १०॥**

२५. ***शुद्ध-विद्याङ्कुराकार-द्विजपङ्क्ति-द्वयोज्ज्वला:*** *पवित्र ज्ञान के अंकुर के समान दीप्तिमान दांतों वाली माँ*
२६. ***कर्पूर-वीटिकामोद-समाकर्षि-दिगन्तरा:*** *कर्पूर से भरे पान-पर्ण को चबाती हुई जिसकी सुगंध समस्त दिशाओं में व्याप्त है, ऐसी माँ*

**निज-सल्लाप-माधुर्य-विनिर्भर्त्सित-कच्छपी ।**
**मन्दस्मित-प्रभापूर-मज्जत्कामेश-मानसा ॥ ११॥**

२७. ***निज-सल्लाप-माधुर्य-विनिर्भर्त्सित-कच्छपी***: *माँ सरस्वती के वीणा वादन से भी अधिक मधुर एवं उत्कृष्ट संगीत-वादन करने वाली माँ*

२८. ***मन्दस्मित-प्रभापूर-मज्जत्कामेश-मानसा:*** *अपनी मुस्कान की आभा से भगवान् शिव के मष्तिष्क को भी निमग्न करने वाली माँ*

**अनाकलित-सादृश्य-चिबुकश्री-विराजिता ।**
**कामेश-बद्ध-माङ्गल्य-सूत्र-शोभित-कन्धरा ॥ १२॥**

२९. ***अनाकलित-सादृश्य-चिबुकश्री-विराजिता:*** *जिनकी ठोड़ी की अद्वितीय सुंदरता की उपमा करना संभव नहीं, ऐसी माँ*

३०. ***कामेश-बद्ध-माङ्गल्य-सूत्र-शोभित-कन्धरा:*** *जिनकी ग्रीवा भगवान् शंकर द्वारा दिए गए पवित्र धागे से सुशोभित है, ऐसी माँ*

**कनकाङ्गद-केयूर-कमनीय-भुजान्विता ।**
**रत्नग्रैवेय-चिन्ताक-लोल-मुक्ता-फलान्विता ॥ १३॥**

३१. ***कनकाङ्गद-केयूर-कमनीय-भुजान्विता:*** *जिनकी भुजाएं स्वर्ण भुजबंध से सुशोभित हैं, ऐसी माँ*

३२. ***रत्नग्रैवेय-चिन्ताक-लोल-मुक्ता-फलान्विता:*** *जिनकी ग्रीवा मोती एवं मणि जड़ित हार से देदीप्यमान हैं, ऐसी माँ*

**कामेश्वर-प्रेमरत्न-मणि-प्रतिपण-स्तनी ।**
**नाभ्यालवाल-रोमालि-लता-फल-कुचद्वयी ॥ १४॥**

३३. ***कामेश्वर-प्रेमरत्न-मणि-प्रतिपण-स्तनी:*** *जिनके स्तन भगवान् शिव शंकर के प्रेम रूपी रत्न को समर्पित हैं, ऐसी माँ*

३४. ***नाभ्यालवाल-रोमालि-लता-फल-कुचद्वयी:*** *जिनके अति सुन्दर स्तन नाभि से ऊपर उदर की ओर लता के पुष्प समान विकसित हैं, ऐसी माँ*

**लक्ष्यरोम-लताधारता-समुन्नेय-मध्यमा ।**
**स्तनभार-दलन्मध्य-पट्टबन्ध-वलित्रया ॥ १५॥**

३५. ***लक्ष्यरोम-लताधारता-समुन्नेय-मध्यमा:*** *जिनके कटि के अस्तित्व का अनुमान लता-तंतु से विकसित रस्सी से लगाया जा सकता है, ऐसी माँ (अर्थात जिनकी कटि लता-तंतु समान अत्यंत तनुक है, ऐसी माँ)*

३६. ***स्तनभार-दलन्मध्य-पट्टबन्ध-वलित्रया:*** *जिनके उदर की तीन धारियां उनके स्तन का भार सहन करने के लिए मेखला बनातीं हैं, ऐसी माँ*

**अरुणारुण-कौसुम्भ-वस्त्र-भास्वत्-कटीतटी ।**
**रत्न-किङ्किणिका-रम्य-रशना-दाम-भूषिता ॥ १६॥**

३७. ***अरुणारुण-कौसुम्भ-वस्त्र-भास्वत्-कटीतटी:*** *जिनके नितम्ब उगते लाल रंग के सूर्य समान इस प्रकार सुशोभित हो रहे हैं जैसे उन्हें सूर्यमुखी पुष्प के अर्क से रंगा गया हो, ऐसी माँ*

३८. ***रत्न-किङ्किणिका-रम्य-रशना-दाम-भूषिता:*** *जिनकी करधनी अनगिनत मणि जड़ित घंटियों से सुशोभित है, ऐसी माँ*

**कामेश-ज्ञात-सौभाग्य-मार्दवोरु-द्वयान्विता ।**
**माणिक्य-मुकुटाकार-जानुद्वय-विराजिता ॥ १७॥**

३९. ***कामेश-ज्ञात-सौभाग्य-मार्दवोरु-द्वयान्विता:*** *जिनके जाँघों की कोमलता एवं रमणीयता उनके पति भगवान् शंकर को ही ज्ञात है, ऐसी माँ*

४०. ***माणिक्य-मकुटाकार-जानुद्वय-विराजिता:*** *जिनके घुटने अनमोल लाल माणिक्य (रूबी) से निर्मित मुकुट के आकार के आभूषणों से सुशोभित हैं, ऐसी माँ*

**इन्द्रगोप-परिक्षिप्त-स्मरतूणाभ-जङ्घिका ।**
**गूढगुल्फा कूर्मपृष्ठ-जयिष्णु-प्रपदान्विता ॥ १८॥**

४१. ***इन्द्रगोप-परिक्षिप्त-स्मरतूणाभ-जङ्घिका:*** *जिनकी जंघिका इंद्रदेव के गोप नामक तरकस के समान मणियों से युक्त सुशोभित है, ऐसी माँ*
४२. ***गूढगुल्फा:*** *जिनके टखने अदृश्य हैं, ऐसी माँ (अर्थात जिनकी पाद सुंदरता वक्री टखनों से प्रभावित नहीं है, ऐसी माँ)*
४३. ***कूर्मपृष्ठ-जयिष्णु-प्रपदान्विता:*** *जिनके चरण तोरण कछुवे की पीठ के समान सहज, चिकने एवं सुन्दर हैं, ऐसी माँ*

**नख-दीधिति-संछन्न-नमज्जन-तमोगुणा ।**
**पदद्वय-प्रभाजाल-पराकृत-सरोरुहा ॥ १९॥**

४४. ***नख-दीधिति-संछन्न-नमज्जन-तमोगुणा:*** *जिनके चरणों को नमन करने पर उनके नखों की प्रभा भक्तों के अज्ञान को दूर कर देती है, ऐसी माँ*
४५. ***पदद्वय-प्रभाजाल-पराकृत-सरोरुहा:*** *जिनके चरणों की आभा कमल पुष्प की आभा को भी मलिन कर देती है, ऐसी माँ*

**सिञ्जान-मणिमञ्जीर-मण्डित-श्री-पदाम्बुजा ।**
**मराली-मन्दगमना महालावण्य-शेवधिः ॥ २०॥**

४६. ***सिञ्जान-मणिमञ्जीर-मण्डित-श्री-पदाम्बुजा:*** *जिनके कमल रूपी चरण मणियों से जड़ित मधुर झंकार करती हुई पायल से सुशोभित हैं, ऐसी माँ*
४७. ***मराली-मन्दगमना:*** *जिनकी चाल हंस के समान धीमी एवं सौम्य है, ऐसी माँ*
४८. ***महालावण्य-शेवधिः*** *जो सौंदर्य का परम भण्डार हैं, ऐसी माँ*

**सर्वारुणाऽनवद्याङ्गी सर्वाभरण-भूषिता ।**
**शिव-कामेश्वराङ्कस्था शिवा स्वाधीन-वल्लभा ॥ २१॥**

४९. ***सर्वारुणा:*** *जिनका वर्ण (तेजस्वी) लाल है, ऐसी माँ*
५०. ***अनवद्याङ्गी:*** *जिनका तन पूजन योग्य है, ऐसी माँ*
५१. ***सर्वाभरण-भूषिता:*** *जो हर प्रकार के आभूषणों से देदीप्यमान हैं, ऐसी माँ*
५२. ***शिवकामेश्वराङ्कस्था:*** *जो कामजित भगवान् शिव शंकर के अंक में विराजमान हैं, ऐसी माँ*
५३. ***शिवा:*** *जो शिव (कल्याण) प्रदान करती हैं, ऐसी माँ*
५४. ***स्वाधीन-वल्लभा:*** *पति (भगवान् शिव शंकर) जिनके विचारों का सम्मान करते हैं, ऐसी माँ*

**सुमेरु-मध्य-शृङ्गस्था श्रीमन्नगर-नायिका ।**
**चिन्तामणि-गृहान्तस्था पञ्च-ब्रह्मासन-स्थिता ॥ २२॥**

५५. ***सुमेरु-मध्य-शृङ्गस्था:*** *जो सुमेरु पर्वत की मध्य श्रंखला में विराजमान हैं, ऐसी माँ*
५६. ***श्रीमन्नगर-नायिका:*** *जो समृद्धि की नायिका हैं, ऐसी माँ (अर्थात जो समृद्धि प्रदान करती हैं, ऐसी माँ)*
५७. ***चिन्तामणि-गृहान्तस्था:*** *जो चिंतामणि से सुसज्जित गृह में निवास करती हैं, ऐसी माँ*
५८. ***पञ्च-ब्रह्मासन-स्थिता:*** *जो पांच ब्रह्म (ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र, एसाना एवं सदाशिव) समान आसन पर विराजमान हैं, ऐसी माँ (अर्थात जिनकी आभा पञ्च-ब्रह्म समान है, ऐसी माँ)*

**महापद्माटवी-संस्था कदम्बवन-वासिनी ।**
**सुधासागर-मध्यस्था कामाक्षी कामदायिनी ॥ २३॥**

५९. ***महापद्माटवी-संस्था:*** *जो महान पद्म वन में निवास करती हैं, ऐसी माँ*
६०. ***कदम्बवन-वासिनी:*** *जिनका निवास कदम्ब वन में है, ऐसी माँ*
६१. ***सुधासागर-मध्यस्था:*** *जो सुधासागर के मध्य में निवास करती हैं, ऐसी माँ*
६२. ***कामाक्षी:*** *जो अपनी दृष्टि से (भक्तों के) मनोरथ पूर्ण करती हैं, ऐसी माँ*
६३. ***कामदायिनी:*** *समस्त मनोरथों को पूर्ण करने वाली माँ*

**देवर्षि-गण-संघात-स्तूयमानात्म-वैभवा ।**
**भण्डासुर-वधोद्युक्त-शक्तिसेना-समन्विता ॥ २४॥**

६४. ***देवर्षि-गण-सङ्घात-स्तूयमानात्म-वैभवा:*** *जिनकी शक्ति की सभी संत एवं देवगण प्रशंसा करते हैं, ऐसी माँ*
६५. ***भण्डासुर-वधोद्युक्त-शक्तिसेना-समन्विता:*** *जो भण्डासुर (असुर) का वध करने वाली सेना की शक्तिओ से संपन्न हैं, ऐसी माँ (अर्थात जिनमें भण्डासुर जैसे महाबलशाली असुर का वध करने की शक्ति है, ऐसी माँ)*

**सम्पत्करी-समारूढ-सिन्धुर-व्रज-सेविता ।**
**अश्वारूढाधिष्ठिताश्व-कोटि-कोटिभिरावृता ॥ २५॥**

६६. ***सम्पत्करी-समारूढ-सिन्धुर-व्रज-सेविता:*** *जो धन-धान्य प्रदान करने वाले गज समूह से सेवित हैं, ऐसी माँ (अर्थात उनकी स्वामिनी हैं)*
६७. ***अश्वारूढाधिष्ठिताश्व-कोटि-कोटिभिरावृता:*** *जिनके नेतृत्व में करोड़ों अश्वों के समूह अश्वरुधा नामक शक्ति से नियंत्रित हैं, ऐसी माँ*

**चक्रराज-रथारूढ-सर्वायुध-परिष्कृता ।**
**गेयचक्र-रथारूढ-मन्त्रिणी-परिसेविता ॥ २६॥**

६८. ***चक्रराज-रथारूढ-सर्वायुध-परिष्कृता:*** *जो सभी आयुधों से सुसज्जित चक्रराज रथ में विराजमान होकर सुशोभित हैं, ऐसी माँ*

६९. ***गेयचक्र-रथारूढ-मन्त्रिणी-परिसेविता:*** *जो गेयचक्र रथ पर आरूढ़ मंत्रिणी नामक शक्ति से सेवित हैं, ऐसी माँ*

**किरिचक्र-रथारूढ-दण्डनाथा-पुरस्कृता ।**
**ज्वाला-मालिनिकाक्षिप्त-वह्निप्राकार-मध्यगा ॥ २७॥**

७०. ***किरिचक्र-रथारूढ-दण्डनाथा-पुरस्कृता:*** *जो किरिचक्र रथ पर आरूढ़ दण्डनाथा शक्ति से रक्षित हैं, ऐसी माँ*

७१. ***ज्वाला-मालिनिकाक्षिप्त-वह्निप्राकार-मध्यगा:*** *जो ज्वाला-मालिन नामक देवी द्वारा सृजित अग्नि दुर्ग के मध्य में विराजमान हैं, ऐसी माँ*

**भण्डसैन्य-वधोद्युक्त-शक्ति-विक्रम-हर्षिता ।**
**नित्या-पराक्रमाटोप-निरीक्षण-समुत्सुका ॥ २८॥**

७२. ***भण्डसैन्य-वधोद्युक्त-शक्ति-विक्रम-हर्षिता:*** *भण्डासुर असुर की शक्तियों को नष्ट करने में वीरत्व से आनंदित माँ*

७३. ***नित्या-पराक्रमाटोप-निरीक्षण-समुत्सुका:*** *'नित्या' स्वरूप में प्रतिष्ठित पराक्रमी एवं गौरवशाली देवी की अनुभूति करने वाली माँ*

**भण्डपुत्र-वधोद्युक्त-बाला-विक्रम-नन्दिता ।**
**मन्त्रिण्यम्बा-विरचित-विषङ्ग-वध-तोषिता ॥ २९॥**

७४. ***भण्डपुत्र-वधोद्युक्त-बाला-विक्रम-नन्दिता:*** *भण्डासुर के पुत्रों को नष्ट करने वाली देवी 'बाला' स्वरुप की अनुभूति में प्रतिष्ठित माँ*

७५. ***मन्त्रिण्यम्बा-विरचित—विषङ्ग-वध-तोषिता:*** *मंत्रिणी शक्ति द्वारा रण में विषंग असुर के वध करने पर आनंदित होने वाली माँ*

**विशुक्र-प्राणहरण-वाराही-वीर्य-नन्दिता ।**
**कामेश्वर-मुखालोक-कल्पित-श्रीगणेश्वरा ॥ ३०॥**

७६. ***विशुक्र-प्राणहरण-वाराही-वीर्य-नन्दिता:*** *विशुक्र असुर के प्राण हरने पर 'वाराही' स्वरुप में आनंदित होने वाली माँ*
७७. ***कामेश्वर-मुखालोक-कल्पित-श्रीगणेश्वरा:*** *कामेश्वर प्रभु के मुख अवलोकन से गणेश (भगवान्) की जन्मदात्री माँ*

**महागणेश-निर्भिन्न-विघ्नयन्त्र-प्रहर्षिता ।**
**भण्डासुरेन्द्र-निर्मुक्त-शस्त्र-प्रत्यस्त्र-वर्षिणी ॥ ३१॥**

७८. **महागणेश-निर्भिन्न-विघ्नयन्त्र-प्रहर्षिता**: गणेश (भगवान्) द्वारा विघ्न हरण करने पर आनंदित होने वाली माँ
७९. **भण्डासुरेन्द्र-निर्मुक्त-शस्त्र-प्रत्यस्त्र-वर्षिणी:** भण्डासुर द्वारा छोड़े हुए प्रत्येक शस्त्र का प्रत्युत्तर देने वाली माँ

**कराङ्गुलि-नखोत्पन्न-नारायण-दशाकृतिः ।**
**महा-पाशुपतास्त्राग्नि-निर्दग्धासुर-सैनिका ॥ ३२॥**

८०. ***कराङ्गुलि-नखोत्पन्न-नारायण-दशाकृतिः*** *अपने नखों द्वारा विष्णु के दशावतारों को प्रगट करने वाली माँ*
८१. ***महा-पाशुपतास्त्राग्नि-निर्दग्धासुर-सैनिका:*** *महा-पशुपति नामक अग्नि शस्त्र से शत्रुओं की सेना को नष्ट करने वाली माँ*

**कामेश्वरास्त्र-निर्दग्ध-सभण्डासुर-शून्यका ।**
**ब्रह्मोपेन्द्र-महेन्द्रादि-देव-संस्तुत-वैभवा ॥ ३३॥**

८२. ***कामेश्वरास्त्र-निर्दग्ध-सभण्डासुर-शून्यका:*** *कामेश्वर नामक अग्नि शस्त्र से भण्डासुर एवं उसकी राजधानी शून्यका को भस्म करने वाली माँ*

*८३. **ब्रह्मोपेन्द्र-महेन्द्रादि-देव-संस्तुत-वैभवा:** ब्रह्मा, विष्णु, महेश एवं अन्य सभी देवतागण जिनकी शक्ति का गुणगान करते हैं, ऐसी माँ*

**हर-नेत्राग्नि-संदग्ध-काम-सञ्जीवनौषधिः ।**
**श्रीमद्वाग्भव-कूटैक-स्वरूप-मुख-पङ्कजा ॥ ३४॥**

*८४. **हर-नेत्राग्नि-सन्दग्ध-काम-सञ्जीवनौषधिः** कामदेव, जो भगवान् शिव शंकर के तीसरे नेत्र से उत्पन्न अग्नि द्वारा भस्मित हो गए थे, उन्हें संजीवनी औषधि द्वारा जीवन दान देने वाली माँ*

*८५. **श्रीमद्वाग्भव-कूटैक-स्वरूप-मुख-पङ्कजा:** अपने कमल स्वरूपी मुख से पवित्र श्रीमद-भाग्भव (पंचदसी मन्त्र) का ज्ञान देने वाली माँ*

**कण्ठाधः-कटि-पर्यन्त-मध्यकूट-स्वरूपिणी ।**
**शक्ति-कूटैकतापन्न-कट्यधोभाग-धारिणी ॥ ३५॥**

*८६. **कण्ठाधः-कटि-पर्यन्त-मध्यकूट-स्वरूपिणी:** ग्रीवा से कटि तक मध्यकूट मन्त्र (पञ्चदशाक्षरी मन्त्र के मध्य के छै अक्षर) स्वरूपिणी माँ*

*८७. **शक्ति-कूटैकतापन्न-कट्यधोभाग-धारिणी:** कटि से नीचे शक्तिकूट मन्त्र (पञ्चदशाक्षरी मन्त्र के अंतिन चार अक्षर) धात्री माँ*

**मूल-मन्त्रात्मिका मूलकूटत्रय-कलेबरा ।**
**कुलामृतैक-रसिका कुलसंकेत-पालिनी ॥ ३६॥**

*८८. **मूल-मन्त्रात्मिका:** मूल मन्त्र (पञ्चदशाक्षरी मन्त्र) की जननी माँ*

*८९. **मूलकूटत्रय-कलेवरा:** जिनके तन में मूल मन्त्र (पञ्चदशाक्षरी मन्त्र) के तीन भाग समाहित हैं, ऐसी माँ*

*९०. **कुलामृतैक-रसिका:** कुल नामक अमृत की अनुरक्त माँ*

*९१. **कुलसङ्केत-पालिनी:** कुल नामक योग पथ के अनुष्ठान संहिता की रक्षिता माँ*

**कुलाङ्गना कुलान्तस्था कौलिनी कुलयोगिनी ।**
**अकुला समयान्तस्था समयाचार-तत्परा ॥ ३७॥**

९२. ***कुलाङ्गना:*** *उत्कृष्ट परिवारीय माँ*
९३. ***कुलान्तस्था:*** *कुल विद्या दात्री माँ*
९४. ***कौलिनी:*** *उच्च कुलीन माँ*
९५. ***कुलयोगिनी:*** *कुल देवी माँ*
९६. ***अकुला:*** *पारिवारिक मोह से विमुक्त माँ*
९७. ***समयान्तस्था:*** *समय को नियंत्रित करने वाली माँ*
९८. ***समयाचारतत्परा:*** *पूजन की समय विधि (समय जैसे प्रातः, उपराह्न, सांय, रात्रि इत्यादि से सम्बंधित विभिन्न पूजन विधि) से सलंग्नित माँ (विभिन्न समयानुसार पूजन विधि का ज्ञान देने वाली माँ)*

**मूलाधारैक-निलया ब्रह्मग्रन्थि-विभेदिनी ।**
**मणि-पूरान्तरुदिता विष्णुग्रन्थि-विभेदिनी ॥ ३८॥**

९९. ***मूलाधारैक-निलया:*** *मूलाधार (मूलाधार, चक्र तंत्र और योग साधना की चक्र संकल्पना का पहला चक्र है) जिनका प्रमुख निवास है, वह माँ*
१००. ***ब्रह्मग्रन्थि-विभेदिनी:*** *ब्रह्म-ग्रंथि (सत्य) को भेदने वाली माँ (अर्थात सत् गुण का ज्ञान कराने वाली माँ)*
१०१. ***मणि-पूरान्तरुदिता:*** *मणिपुर चक्र (मणिपुर चक्र, तंत्र और योग साधना की चक्र संकल्पना का तीसरा चक्र है) का ज्ञान देने वाली माँ*
१०२. ***विष्णुग्रन्थि-विभेदिनी:*** *विष्णु-ग्रंथि (रज गुण) का भेदन करने वाली माँ (अर्थात रज गुण का ज्ञान कराने वाली माँ)*

**आज्ञा-चक्रान्तरालस्था रुद्रग्रन्थि-विभेदिनी ।**
**सहस्राराम्बुजारूढा सुधा-साराभिवर्षिणी ॥ ३९॥**

*१०३. **आज्ञा-चक्रान्तरालस्था:** आज्ञा-चक्र के मध्य में निवास करने वाली माँ (आज्ञा, मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत और विशुद्ध, इन छै चक्रों का उपनिषद में वर्णन है। आज्ञा-चक्र भौंहों के बीच माथे के केंद्र में स्थित होता है।)*

*१०४. **रुद्रग्रन्थि-विभेदिनी:** रूद्र-ग्रंथि (तमस गुण) का भेदन करने वाली माँ (अर्थात तमस गुण का ज्ञान कराने वाली माँ)*

*१०५. **सहस्राराम्बुजारूढा:** सहस्त्र पंखुड़ी पद्म पर आरोहित माँ*

*१०६. **सुधासाराभिवर्षिणी:** अमृत धारा बहाने वाली माँ*

**तडिल्लता-समरुचिः षट्चक्रोपरि-संस्थिता ।**
**महासक्तिः कुण्डलिनी बिसतन्तु-तनीयसी ॥ ४०॥**

*१०७. **तडिल्लता-समरुचिः** बिजली की चमक समान आभावान माँ*

*१०८. **षट्चक्रोपरि-संस्थिता: (**आज्ञा, मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत और विशुद्ध) छै चक्रों पर आरूढ़ माँ*

*१०९. **महासक्तिः** शिव-शक्ति के पवित्र बंधन में बंधी माँ*

*११०. **कुण्डलिनी:** कुंडली स्वरुप में स्थित माँ*

*१११. **बिसतन्तु-तनीयसी:** कमल पुष्प के तंतु के समान कोमल एवं उत्कृष्ट माँ*

**भवानी भावनागम्या भवारण्य-कुठारिका ।**
**भद्रप्रिया भद्रमूर्तिर् भक्त-सौभाग्यदायिनी ॥ ४१॥**

*११२. **भवानी:** भगवान् शिव शंकर की अर्धांगिनी माँ*

*११३. **भावनागम्या:** भावना से गम्य माँ (अर्थात माँ को शुद्ध भावना से प्राप्त किया जा सकता है)*

*११४. **भवारण्य-कुठारिका:** संसार रूपी वन के लिए कुल्हाड़ी स्वरुप माँ (अर्थात भव सागर से पार कराने वाली माँ)*

*११५. **भद्रप्रिया:** भद्रों (संतों) की प्रिया माँ*

११६. ***भद्रमूर्तिः*** *पवित्रता की मूर्ति माँ*
११७. ***भक्तसौभाग्यदायिनी:*** *भक्तों को सौभाग्य देने वाली माँ*

**भक्तिप्रिया भक्तिगम्या भक्तिवश्या भयापहा ।**
**शाम्भवी शारदाराध्या शर्वाणी शर्मदायिनी ॥ ४२॥**

११८. ***भक्तिप्रिया:*** *भक्ति से प्रसन्न होने वाली माँ*
११९. ***भक्तिगम्या:*** *भक्ति से प्राप्त होने वाली माँ*
१२०. ***भक्तिवश्या:*** *भक्ति से वश में होने वाली माँ*
१२१. ***भयापहा:*** *भय हरण करने वाली माँ*
१२२. ***शाम्भवी:*** *भगवान् शम्भू की अर्धांगिनी*
१२३. ***शारदाराध्या:*** *देवी सरस्वती से आराधित माँ*
१२४. ***शर्वाणी:*** *शर्व (भगवान् शिव शंकर) की अर्धांगिनीं माँ*
१२५. ***शर्मदायिनी:*** *आनंद देने वाली माँ*

**शाङ्करी श्रीकरी साध्वी शरच्चन्द्र-निभानना ।**
**शातोदरी शान्तिमती निराधारा निरञ्जना ॥ ४३॥**

१२६. ***शाङ्करी:*** *प्रसन्नता देने वाली माँ*
१२७. ***श्रीकरी:*** *धन-धान्य देने वाली माँ*
१२८. ***साध्वी:*** *पवित्र माँ*
१२९. ***शरच्चन्द्र-निभानना:*** *निर्मल आकाश में पूर्ण चंद्र समान आभित मुखाकृति वाली माँ*
१३०. ***शातोदरी:*** *सुमध्यमा (सुगठित उदर वाली) माँ*
१३१. ***शान्तिमती:*** *शांति प्रिय माँ*
१३२. ***निराधारा:*** *स्वतंत्र माँ*
१३३. ***निरञ्जना:*** *मोह माया से दूर स्वाधीन माँ*

**निर्लेपा निर्मला नित्या निराकारा निराकुला ।**
**निर्गुणा निष्कला शान्ता निष्कामा निरुपप्लवा ॥ ४४॥**

*१३४. **निर्लेपा:** कार्मिक अशुद्धियों से मुक्त माँ*
*१३५. **निर्मला:** पवित्र माँ*
*१३६. **नित्या:** शाश्वत माँ*
*१३७. **निराकरा:** निराकार माँ (अर्थात माँ का कोई आकार नहीं है, वह सर्व-व्याप्त हैं)*
*१३८. **निराकुला:** शांत माँ (अर्थात माँ को कभी आकुलता नहीं होती)*
*१३९. **निर्गुणा:** तीनों गुण - तमस, रजस एवं सत्त्व, से अप्रभावित माँ*
*१४०. **निष्कला:** शुद्ध माँ*
*१४१. **शान्ता:** शांत चित्त माँ*
*१४२. **निष्कामा:** इच्छा रहित माँ*
*१४३. **निरुपप्लवा:** अविनाशी माँ*

**नित्यमुक्ता निर्विकारा निष्प्रपञ्चा निराश्रया ।**
**नित्यशुद्धा नित्यबुद्धा निरवद्या निरन्तरा ॥ ४५॥**

*१४४. **नित्यमुक्ता:** सांसारिक बंधनों से सदैव मुक्त माँ*
*१४५. **निर्विकारा:** दोष रहित माँ*
*१४६. **निष्प्रपञ्चा:** निःस्वार्थी माँ*
*१४७. **निराश्रया:** स्वाधीन माँ (माँ किसी पर आश्रित नहीं हैं, स्वाधीन हैं)*
*१४८. **नित्यशुद्धा:** शाश्वत शुद्ध माँ*
*१४९. **नित्यबुद्धा:** अति बुद्धिमान माँ*
*१५०. **निरवद्या:** सदैव प्रशंसनीय माँ*
*१५१. **निरन्तरा:** सर्व-व्यापी माँ*

**निष्कारणा निष्कलङ्का निरुपाधिर् निरीश्वरा ।**
**नीरागा रागमथनी निर्मदा मदनाशिनी ॥ ४६॥**

१५२. ***निष्कारणा:*** *स्वार्थ-रहित माँ*
१५३. ***निष्कलङ्का:*** *निष्कलंक (शुद्ध) माँ*
१५४. ***निरुपाधिर:*** *सीमा-रहित माँ (अर्थात माँ के कार्य-प्रणाली की कोई सीमा नहीं है)*
१५५. ***निरीश्वरा:*** *स्वयं ही ईश्वर स्वरुप माँ (अर्थात माँ से बड़ा कोई ईश्वर नहीं है)*
१५६. ***नीरागा:*** *इच्छा-रहित माँ*
१५७. ***रागमथनी:*** *जो (सांसारिक) इच्छाओं को ध्वस्त कर देती हैं, ऐसी माँ (अर्थात सांसारिक इच्छाओं को ध्वस्त कर आध्यात्मिकता का मार्ग प्रदर्शन करने वाली माँ)*
१५८. ***निर्मदा:*** *गर्व-रहित माँ*
१५९. ***मदनाशिनी:*** *(भक्तों को) गर्व रहित करने वाली माँ*

**निश्चिन्ता निरहङ्कारा निर्मोहा मोहनाशिनी ।**
**निर्ममा ममताहन्त्री निष्पापा पापनाशिनी ॥ ४७॥**

१६०. ***निश्चिन्ता:*** *चिंता-रहित (निश्चिंत) माँ*
१६१. ***निरहङ्कारा:*** *अहंकार-रहित माँ*
१६२. ***निर्मोहा:*** *माया-रहित माँ*
१६३. ***मोहनाशिनी:*** *(भक्तों के) मोह को नष्ट करने वाली माँ (अर्थात भक्तों के मोह को नष्ट कर उन्हें आध्यात्मिक एवं ईश्वरीय ज्ञान देने वाली माँ)*
१६४. ***निर्ममा:*** *निःस्वार्थी माँ*
१६५. ***ममताहन्त्री: (****भक्तों के सांसारिक) स्वार्थों का हरण करने वाली माँ (अर्थात भक्तों के व्यक्तिगत सांसारिक स्वार्थों का हरण कर उन्हें ईश्वरीय ज्ञान देने वाली माँ)*
१६६. ***निष्पापा:*** *पाप-रहित (शुद्ध) माँ*
१६७. ***पापनाशिनी:*** *(भक्तों के) पापों को नष्ट करने वाली माँ*

**निष्क्रोधा क्रोधशमनी निर्लोभा लोभनाशिनी ।**
**निःसंशया संशयघ्नी निर्भवा भवनाशिनी ॥ ४८॥**

*१६८. **निष्क्रोधा:** क्रोध रहित माँ*
*१६९. **क्रोधशमनी:** (भक्तों के) क्रोध को नष्ट करने वाली माँ*
*१७०. **निर्लोभा:** लोभ रहित माँ*
*१७१. **लोभनाशिनी:** (भक्तों के) लोभ का नाश करने वाली माँ (अर्थात भक्तों को सांसारिक लोभ से मुक्ति देकर ईश्वरता का ज्ञान देने वाली माँ)*
*१७२. **निःसंशया:** संदेह रहित माँ (अर्थात माँ को कोई कार्य पूर्ण करने में संदेह नहीं है)*
*१७३. **संशयघ्नी:** (भक्तो के) संशय दूर करने वाली माँ (अर्थात भक्तों में आत्मविश्वास बढ़ाने वाली माँ)*
*१७४. **निर्भवा:** अजन्मी माँ (माँ के जन्म के आदि, अंत का पता नहीं)*
*१७५. **भवनाशिनी:** (भक्तों को) भव-सागर से तारने वाली माँ (अर्थात भक्तों को जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति देने वाली माँ)*

**निर्विकल्पा निराबाधा निर्भेदा भेदनाशिनी ।**
**निर्नाशा मृत्युमथनी निष्क्रिया निष्परिग्रहा ॥ ४९॥**

*१७६. **निर्विकल्पा:** अनिश्चयता अथवा संदेह से परे माँ*
*१७७. **निराबाधा:** बाधा रहित माँ (अर्थात माँ को कोई बाधा व्याप्त नहीं कर सकती)*
*१७८. **निर्भेदा:** भेद भावना से परे माँ (अर्थात माँ समदर्शी हैं, अपने भक्तों में लिंग आदि का भेद भाव नहीं करतीं)*
*१७९. **भेदनाशिनी:** (भक्तों के हृदय से) भेद भावनाओं को नष्ट करने वाली माँ*
*१८०. **निर्नाशा:** अविनाशी माँ*
*१८१. **मृत्युमथनी:** मृत्यु का मंथन करने वाली माँ (अर्थात भक्तों में मृत्यु के भय को हरने वाली माँ)*
*१८२. **निष्क्रिया:** निष्क्रिय माँ (अर्थात सांसारिक कार्य-कलापों से दूर रहने*

*वाली माँ)*

*१८३. **निष्परिग्रहा:** सांसारिक वस्तुओं का अधिग्रहण न करने वाली माँ*

**निस्तुला नीलचिकुरा निरपाया निरत्यया ।**
**दुर्लभा दुर्गमा दुर्गा दुःखहन्त्री सुखप्रदा ॥ ५०॥**

*१८४. **निस्तुला:** अतुलनीय माँ*
*१८५. **नीलचिकुरा:** चमकते काले बालों वाली माँ*
*१८६. **निरपाया:** अविनाशी माँ*
*१८७. **निरत्यया:** जिनकी आज्ञा की अवहेलना नहीं की जा सकती, ऐसी माँ*
*१८८. **दुर्लभा:** दुर्लभता से प्राप्त होने वाली माँ (अर्थात कठिन तप से ही जिनकी प्राप्ति होती है)*
*१८९. **दुर्गमा:** जिन्हें पाने के लिए कठिन प्रयास करने आवश्यक हैं, ऐसी माँ*
*१९०. **दुर्गा:** आदि-शक्ति माँ*
*१९१. **दुःखहन्त्री:** दुःखों का हरण करने वाली माँ*
*१९२. **सुखप्रदा:** आनंद दायिनी माँ*

**दुष्टदूरा दुराचार-शमनी दोषवर्जिता ।**
**सर्वज्ञा सान्द्रकरुणा समानाधिक-वर्जिता ॥ ५१॥**

*१९३. **दुष्टदूरा:** दुष्टों को अगम्य माँ*
*१९४. **दुराचार-शमनी:** दुराचारों को रोकने वाली माँ*
*१९५. **दोषवर्जिता:** दोषों से रहित (पवित्र) माँ*
*१९६. **सर्वज्ञा:** अन्तर्यामी माँ*
*१९७. **सान्द्रकरुणा:** संवेदनशील माँ*
*१९८. **समानाधिक-वर्जिता:** श्रेष्ठतम माँ (इस ब्रह्माण्ड में जिनके समान अथवा अधिक श्रेष्ठ कोई और नहीं, ऐसी माँ)*

**सर्वशक्तिमयी सर्व-मङ्गला सद्गतिप्रदा ।**
**सर्वेश्वरी सर्वमयी सर्वमन्त्र-स्वरूपिणी ॥ ५२॥**

*१९९. **सर्वशक्तिमयी:** सर्व शक्ति संपन्न माँ*
*२००. **सर्व-मङ्गला:** सब का कल्याण करने वाली माँ*
*२०१. **सद्गतिप्रदा:** सबको उचित (सत्य) मार्ग दर्शाने वाली माँ*
*२०२. **सर्वेश्वरी:** सबकी स्वामिनी माँ*
*२०३. **सर्वमयी:** सब में व्याप्त माँ*
*२०४. **सर्वमन्त्र-स्वरूपिणी:** जो सभी (वैदिक) मन्त्रों का तत्व हैं, माँ*

**सर्व-यन्त्रात्मिका सर्व-तन्त्ररूपा मनोन्मनी ।**
**माहेश्वरी महादेवी महालक्ष्मीर् मृडप्रिया ॥ ५३॥**

*२०५. **सर्व-यन्त्रात्मिका:** सभी यंत्रों के आध्यात्मिक ज्ञान की ज्ञाता माँ*
*२०६. **सर्वतन्त्र-रूपा:** सभी तंत्रों की जननी, माँ*
*२०७. **मनोन्मनी:** योग साधना की अति उच्च स्थिति प्राप्त माँ (योग साधना की वह उच्च स्थिति जहां मन सारी चंचलता छोड़ पूर्ण रूप से शांत और स्थिर हो जाता है, ऐसी उच्च स्थिति को प्राप्त माँ)*
*२०८. **माहेश्वरी:** भगवान् शिव शंकर की अर्धांगिनी, माँ*
*२०९. **महादेवी:** महान देवी*
*२१०. **महालक्ष्मीर्:** धन-धान्य एवं ऐश्वर्य प्रदायिनी माँ*
*२११. **मृडप्रिया:** मृड (भगवान् शिव शंकर) की प्रिया, माँ*

**महारूपा महापूज्या महापातक-नाशिनी ।**
**महामाया महासत्त्वा महाशक्तिर् महारतिः ॥ ५४॥**

*२१२. **महारूपा:** अति विशाल रूप वाली माँ*
*२१३. **महापूज्या:** अति पूज्नीय माँ*
*२१४. **महापातक-नाशिनी:** घोर पापों का भी नाश करने वाली माँ*

२१५. ***महामाया:*** *स्वयं माया माँ (अर्थात माया की स्वामिनी होने के कारण अपने भक्तों को सांसारिक माया से दूर रखने वाली माँ)*
२१६. ***महासत्त्वा:*** *सतगुण धारी माँ*
२१७. ***महाशक्तिर्:*** *अत्यंत बलशाली माँ*
२१८. ***महारतिः*** *सुख से परिपूर्ण माँ*

**महाभोगा महैश्वर्या महावीर्या महाबला ।**
**महाबुद्धिर् महासिद्धिर् महायोगेश्वरेश्वरी ॥ ५५॥**

२१९. ***महाभोगा:*** *सर्पों की स्वामिनी माँ (इसका दूसरा अर्थ हो सकता है – सांसारिक भोगों की स्वामिनी अर्थात अपने भक्तों को सांसारिक भोगों से दूर रखने वाली माँ)*
२२०. ***महैश्वर्या:*** *सर्वोच्च सम्प्रभुता वाली माँ*
२२१. ***महावीर्या:*** *अत्यंत वीर माँ*
२२२. ***महाबला:*** *अत्यंत पराक्रमी माँ*
२२३. ***महाबुद्धिर्:*** *अत्यंत बुद्धिमान माँ*
२२४. ***महासिद्धिर्:*** *सिद्धियों की स्वामिनी माँ*
२२५. ***महायोगेश्वरेश्वरी:*** *महान योगियों से भी पूजित माँ*

**महातन्त्रा महामन्त्रा महायन्त्रा महासना ।**
**महायाग-क्रमाराध्या महाभैरव-पूजिता ॥ ५६॥**

२२६. ***महातन्त्रा:*** *महान तांत्रिकों द्वारा पूजित माँ*
२२७. ***महामन्त्रा:*** *स्वयं ही महा-मन्त्र, माँ*
२२८. ***महायन्त्रा:*** *स्वयं ही महा-यंत्र, माँ*
२२९. ***महासना:*** *उच्च स्थान पर विराजमान माँ*
२३०. ***महायाग-क्रमाराध्या:*** *महा-यज्ञों के धार्मिक संस्कारों में पूजित माँ*
२३१. ***महाभैरव-पूजिता:*** *महा-भैरव (भगवान् शिव शंकर) से भी पूजित माँ*

**महेश्वर-महाकल्प-महाताण्डव-साक्षिणी ।**
**महाकामेश-महिषी महात्रिपुर-सुन्दरी ॥ ५७॥**

*२३२. **महेश्वर-महाकल्प-महाताण्डव-साक्षिणी:** प्रलय के समय भगवान् शिव शंकर के महान तांडव नृत्य की साक्षी, माँ*
*२३३. **महाकामेश-महिषी:** भगवान् शिव शंकर की आदर्श अर्धांगिनी, माँ*
*२३४. **महात्रिपुर-सुन्दरी:** अकल्पनीय सुन्दर, धन, ऐश्वर्य, भोग और मोक्ष की अधिष्ठात्री देवी माँ*

**चतुःषष्ट्युपचाराढ्या चतुःषष्टिकलामयी ।**
**महाचतुः-षष्टिकोटि-योगिनी-गणसेविता ॥ ५८॥**

*२३५. **चतुष्षष्ट्युपचाराढ्या:** सनातन धर्म के ६४ कर्म-कांडों में पूजित माँ (वेदों के अनुसार सनातन धर्म में जन्म से लेकर मृत्यु तक ६४ कर्म-काण्ड होते हैं, उन सभी कर्म-कांडों की अधिष्ठात्री देवी माँ हैं)*
*२३६. **चतुष्षष्टिकलामयी:** सभी ६४ कलाओं की अधिष्ठात्री देवी माँ*
*२३७. **महाचतुः-षष्टिकोटि-योगिनी-गणसेविता:** ६४ करोड़ योगिनियों द्वारा सेवित माँ*

**मनुविद्या चन्द्रविद्या चन्द्रमण्डल-मध्यगा ।**
**चारुरूपा चारुहासा चारुचन्द्र-कलाधरा ॥ ५९॥**

*२३८. **मनुविद्या:** मनुविद्या की अधिष्ठात्री देवी माँ*
*२३९. **चन्द्रविद्या:** चन्द्रविद्या की अधिष्ठात्री देवी माँ*
*२४०. **चन्द्रमण्डल-मध्यगा:** चंद्र मंडल के मध्य में विराजमान माँ*
*२४१. **चारुरूपा:** स्थिर सुंदरता वाली माँ (अर्थात जिनकी सुंदरता कभी कम नहीं होती, ऐसी माँ)*
*२४२. **चारुहासा:** अति सुन्दर मुस्कान वाली माँ*
*२४३. **चारुचन्द्र-कलाधरा:** अत्यंत सुन्दर अर्ध-चंद्र को धारण करने वाली माँ*

**चराचर-जगन्नाथा चक्रराज-निकेतना ।**
**पार्वती पद्मनयना पद्मराग-समप्रभा ॥ ६०॥**

*२४४. **चराचर-जगन्नाथा:** समस्त चर एवं अचर जग की स्वामिनी माँ*
*२४५. **चक्रराज-निकेतना:** श्री चक्र में विराजित माँ*
*२४६. **पार्वती:** (हिमाचल) पर्वत की पुत्री माँ*
*२४७. **पद्मनयना:** कमल के समान सुन्दर नेत्रों वाली माँ*
*२४८. **पद्मराग-समप्रभा:** पद्मराग (रूबी) मणि के समान आभा वाली माँ*

**पञ्च-प्रेतासनासीना पञ्चब्रह्म-स्वरूपिणी ।**
**चिन्मयी परमानन्दा विज्ञान-घनरूपिणी ॥ ६१॥**

*२४९. **पञ्च-प्रेतासनासीना:** पञ्च-शव पीठासीन माँ (अर्थात पांच विकार – काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार का नाश करने वाली माँ)*
*२५०. **पञ्चब्रह्म-स्वरुपिणी:** पञ्च-ब्रह्म स्वरूपा माँ (अर्थात माँ स्वयं ही पञ्च-ब्रह्म उपनिषद् हैं)*
*२५१. **चिन्मयी:** स्व-चैतन्य स्वरुप माँ*
*२५२. **परमानन्दा:** सच्चिदानंद माँ*
*२५३. **विज्ञानघन-रूपिणी:** महा-वैज्ञानिक स्वरूपिणी माँ (अर्थात समस्त विज्ञान की ज्ञाता माँ)*

**ध्यान-ध्यातृ-ध्येयरूपा धर्माधर्म-विवर्जिता ।**
**विश्वरूपा जागरिणी स्वपन्ती तैजसात्मिका ॥ ६२॥**

*२५४. **ध्यान-ध्यातृ-ध्येयरूपा:** ध्यान, ध्यानी एवं ध्यान उद्देश्य स्वरूपिणी माँ (अर्थात जो स्वयं ही ध्यान, ध्यानी एवं ध्यान का उद्देश्य है, ऐसी माँ)*
*२५५. **धर्माधर्म-विवर्जिता:** गुणों और दोषों को नियंत्रित करने वाली माँ*
*२५६. **विश्वरुपा:** सर्व-भूत माँ (अर्थात सर्व-व्याप्त माँ)*
*२५७. **जागरिणी:** सदैव जाग्रत माँ (अर्थात जो भक्तों के हित के लिए सदैव*

*तत्पर रहती हैं, ऐसी माँ)*

२५८. ***स्वपन्ती:*** *स्वप्त अवस्था में उपस्थित माँ (अर्थात भक्तों के स्वप्न में भी उनके हित के लिए उपस्थित माँ)*

२५९. ***तैजसात्मिका:*** *अत्यंत तेज से युक्त माँ (अर्थात महा-पराक्रमी माँ)*

**सुप्ता प्राज्ञात्मिका तुर्या सर्वावस्था-विवर्जिता ।**
**सृष्टिकर्त्री ब्रह्मरूपा गोप्त्री गोविन्दरूपिणी ॥ ६३॥**

२६०. ***सुप्ता:*** *गहन सुप्तावस्था में लीन माँ (अर्थात भक्तों के गहन सुप्तावस्था में लीन होने पर भी माँ उनका हित करतीं हैं)*

२६१. ***प्राज्ञात्मिका:*** *दक्षिता की आत्मा माँ (अर्थात बुद्धिमता की स्रोत माँ)*

२६२. ***तुर्या:*** *ब्रह्म-ज्ञान में लीन माँ (अर्थात ब्रह्म-ज्ञान की स्रोत माँ)*

२६३. ***सर्वावस्था-विवर्जिता:*** *सभी अवस्थाओं (जागृत, स्वप्न और सुषुप्ति) में उपस्थित माँ*

२६४. ***सृष्टिकर्त्री:*** *सृष्टि की निर्माता माँ*

२६५. ***ब्रह्मरूपा:*** *ब्रह्म-स्वरूपिणी माँ*

२६६. ***गोप्त्री:*** *रक्षक माँ*

२६७. ***गोविन्दरूपिणी:*** *गोविन्द-स्वरूपिणी माँ (अर्थात ब्रह्माण्ड की रक्षा हेतु जिन्होंने गोविन्द का रूप धारण किया, ऐसी माँ)*

**संहारिणी रुद्ररूपा तिरोधानकरी ईश्वरी ।**
**सदाशिवा अनुग्रहदा पञ्चकृत्य-परायणा ॥ ६४॥**

२६८. ***संहारिणी:*** *(प्रलय से) ब्रह्माण्ड का नाश करने वाली माँ*

२६९. ***रुद्ररूपा:*** *(प्रलय के लिए) रूद्र रूप धारण करने वाली माँ*

२७०. ***तिरोधानकरी:*** *समस्त पदार्थों को विलुप्त करने वाली माँ (अर्थात प्रलय काल में सब पदार्थों को नष्ट करने वाली माँ)*

२७१. ***ईश्वरी:*** *दैवीय माँ*

२७२. ***सदाशिवा:*** *सदैव पवित्रता प्रदान करने वाली माँ*

२७३. ***अनुग्रहदा:*** *वरदान देने वाली माँ*
२७४. ***पञ्चकृत्य-परायणा:*** *पञ्च कृत्य (उत्पत्ति, सरंक्षण, संहार, विलोपन एवं पुनः-प्रकटन) में लीन माँ*

**भानुमण्डल-मध्यस्था भैरवी भगमालिनी ।**
**पद्मासना भगवती पद्मनाभ-सहोदरी ॥ ६५॥**

२७५. ***भानुमण्डल-मध्यस्था:*** *सूर्य चक्र के मध्य में निवास करने वाली माँ*

२७६. ***भैरवी:*** *भैरव (भगवान् शिव शंकर) की अर्धांगिनी, माँ*
२७७. ***भगमालिनी:*** *छै शुभताओं (पवित्रता, प्रभुत्व, प्रसिद्धि, पराक्रम, निर्लिप्तता एवं ज्ञान) की माला पहनने वाली माँ (अर्थात माँ में सभी छै भग गुण - पवित्रता, प्रभुत्व, प्रसिद्धि, पराक्रम, निर्लिप्तता एवं ज्ञान, विद्यमान हैं)*
२७८. ***पद्मासना:*** *कमलासन पर विराजमान माँ*
२७९. ***भगवती:*** *रक्षक देवी माँ*
२८०. ***पद्मनाभ-सहोदरी:*** *भगवान् विष्णु की बहन, माँ*

**उन्मेष-निमिषोत्पन्न-विपन्न-भुवनावली ।**
**सहस्र-शीर्षवदना सहस्राक्षी सहस्रपात् ॥ ६६॥**

२८१. ***उन्मेष-निमिषोत्पन्न-विपन्न-भुवनावली:*** *नेत्रों के खोलने और बंद करने मात्र से ब्रह्माण्ड को विलुप्त एवं पुनः प्रकट करने की सामर्थ्य रखने वाली माँ*
२८२. ***सहस्र-शीर्षवदना:*** *एक सहस्त्र शीश वाली माँ*
२८३. ***सहस्राक्षी:*** *एक सहस्त्र नेत्रों वाली माँ*
२८४. ***सहस्रपात्:*** *एक सहस्त्र पदों वाली माँ*

**आब्रह्म-कीट-जननी वर्णाश्रम-विधायिनी ।**
**निजाज्ञारूप-निगमा पुण्यापुण्य-फलप्रदा ॥ ६७॥**

२८५. ***आब्रह्म-कीट-जननी:*** *ब्रह्मा से तुच्छ कीट तक, सब की माँ*
२८६. ***वर्णाश्रम-विधायिनि:*** *वर्णाश्रम (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र) के नियम निर्धारण करने वाली माँ*
२८७. ***निजाज्ञारूप-निगमा:*** *वेद मार्ग (सत्य मार्ग) प्रदर्शित करने वाली माँ*
२८८. ***पुण्यापुण्य-फलप्रदा:*** *शुभ एवं अशुभ कर्मों के फल देने वाली माँ*

**श्रुति-सीमन्त-सिन्दूरी-कृत-पादाब्ज-धूलिका ।**
**सकलागम-सन्दोह-शुक्ति-सम्पुट-मौक्तिका ॥ ६८॥**

२८९. ***श्रुति-सीमन्त-सिन्दूरी-कृतपादाब्ज-धूलिका:*** *जिनकी पग-धूलि बालों की विभाजन रेखा में सिंदूर के समान है (अर्थात जिनकी पग-धूलि विवाहिता स्त्रीओं के पतियों को दीर्घायु एवं सौभाग्य प्रदान करती है), ऐसी माँ*
२९०. ***सकलागम-सन्दोह-शुक्ति-सम्पुट-मौक्तिका:*** *समस्त धार्मिक ग्रंथों के कवच में वास करने वाली रत्न स्वरूपिणी माँ (अर्थात समस्त धार्मिक ग्रन्थ जिनकी जिह्वया पर हैं, ऐसी माँ)*

**पुरुषार्थप्रदा पूर्णा भोगिनी भुवनेश्वरी ।**
**अम्बिका अनादि-निधना हरिब्रह्मेन्द्र-सेविता ॥ ६९॥**

२९१. ***पुरुषार्थप्रदा:*** *जीवों को उनके लक्ष्य (अर्थ, काम, धर्म एवं मोक्ष) प्रदान करने वाली माँ*
२९२. ***पूर्णा:*** *पूर्ण माँ (अर्थात सम्पूर्ण रूप में सदैव स्थित, अक्षय माँ)*
२९३. ***भोगिनी:*** *आनंदमयी माँ*
२९४. ***भुवनेश्वरी:*** *ब्रह्माण्ड की साम्राज्ञी माँ*
२९५. ***अम्बिका:*** *ब्रह्माण्ड की माँ*

२९६. ***अनादि-निधना:*** *जिनका न प्रारम्भ है, न ही अंत, ऐसी माँ*
२९७. ***हरिब्रह्मेन्द्र-सेविता:*** *ब्रह्मदेव, विष्णुदेव एवं इंद्रदेव भी जिनकी सेवा करते हैं, ऐसी माँ*

**नारायणी नादरूपा नामरूप-विवर्जिता ।**
**ह्रींकारी ह्रीमती हृद्या हेयोपादेय-वर्जिता ॥ ७०॥**

२९८. ***नारायणी:*** *ईश्वर समकक्ष माँ*
२९९. ***नादरूपा:*** *स्वर स्वरूपिणी माँ (अर्थात स्वर को जन्म देने वाली माँ)*
३००. ***नामरूप-विवर्जिता:*** *अनाकार (निराकार) माँ*
३०१. ***ह्रींकारी:*** *'ह्रीं' शब्दांश की जननी ,माँ*
३०२. ***ह्रीमती:*** *सुशील माँ*
३०३. ***हृद्या: (****भक्तों के) हृदय में रहने वाली माँ*
३०४. ***हेयोपादेय-वर्जिता:*** *स्वीकृति एवं अस्वीकृति से परे माँ (अर्थात सभी इच्छाओं से परे माँ)*

**राजराजार्चिता राज्ञी रम्या राजीवलोचना ।**
**रञ्जनी रमणी रस्या रणत्किङ्किणि-मेखला ॥ ७१॥**

३०५. ***राजराजार्चिता:*** *सम्राटों के सम्राट से भी वन्दित माँ*
३०६. ***राज्ञी:*** *(प्रलय के समय) संहार-कर्ता महादेव की अर्धांगिनी, माँ*
३०७. ***रम्या:*** *आनंददायी माँ*
३०८. ***राजीवलोचना:*** *कमल के समान नेत्र वाली माँ*
३०९. ***रञ्जनी:*** *सच्चिदानंद माँ*
३१०. ***रमणी:*** *आनंद दायिनी माँ*
३११. ***रस्या:*** *सभी रसों (११ प्रकार के रस - श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत, शांत, वात्सल्य एवं भक्ति रस) का आनंद लेने वाली माँ*
३१२. ***रणत्किङ्किणि-मेखला:*** *खनकती घंटियों की करधनी धारण करने वाली*

*माँ*

**रमा राकेन्दुवदना रतिरूपा रतिप्रिया ।**
**रक्षाकरी राक्षसघ्नी रामा रमणलम्पटा ॥ ७२॥**

*३१३. **रमा:** सौभाग्यशाली माँ*
*३१४. **राकेन्दुवदना**: चंद्र-मुखी (अति सुन्दर) माँ*
*३१५. **रतिरूपा:** रति (कामदेव की पत्नी) स्वरूपिणी माँ (अर्थात रति जैसी अति सुन्दर माँ)*
*३१६. **रतिप्रिया:** रति की अति प्रिय, (स्वामिनी) माँ*
*३१७. **रक्षाकरी:** रक्षक माँ*
*३१८. **राक्षसघ्नी:** राक्षसों का संहार करने वाली माँ*
*३१९. **रामा:** प्रवीण माँ*
*३२०. **रमणलम्पटा:** अपने प्रिय पति भगवान् शिव शंकर को समर्पित, माँ*

**काम्या कामकलारूपा कदम्ब-कुसुम-प्रिया ।**
**कल्याणी जगतीकन्दा करुणा-रस-सागरा ॥ ७३॥**

*३२१. **काम्या:** सभी की वांछित माँ*
*३२२. **कामकलारूपा:** (रति, कामदेव की पत्नी समान) काम कला से पूर्ण माँ*
*३२३. **कदम्बकुसुमप्रिया:** कदम्ब (देव-वृक्ष) के पुष्पों की अनुरक्त माँ*

*३२४. **कल्याणी:** कल्याण करने वाली माँ*
*३२५. **जगतीकन्दा:** समस्त ब्रह्माण्ड का मूल, माँ*
*३२६. **करुणा-रस-सागरा:** करुणा का सागर, माँ*

**कलावती कलालापा कान्ता कादम्बरीप्रिया ।**
**वरदा वामनयना वारुणी-मद-विह्वला ॥ ७४॥**

*३२७. **कलावती:** समस्त कलाओं में निपुण, माँ*
*३२८. **कलालापा:** मधुर संगीतमय वक्ता माँ*
*३२९. **कान्ता**: अति सुन्दर माँ*
*३३०. **कादम्बरीप्रिया:** मध्वासव की अनुरक्त माँ*
*३३१. **वरदा:** वर दायिनी माँ*
*३३२. **वामनयना:** अति सुन्दर नेत्रों वाली माँ*
*३३३. **वारुणी-मद-विह्वला:** अमृतमय पेय से मादक माँ*

**विश्वाधिका वेदवेद्या विन्ध्याचल-निवासिनी ।**
**विधात्री वेदजननी विष्णुमाया विलासिनी ॥ ७५॥**

*३३४. **विश्वाधिका:** विश्व की स्वामिनी माँ*
*३३५. **वेदवेद्या:** वेदों की ज्ञाता माँ*
*३३६. **विन्ध्याचल-निवासिनी:** विंध्याचल (पर्वत) निवासिनी माँ*
*३३७. **विधात्री:** ब्रह्माण्ड की सर्जक माँ*
*३३८. **वेदजननी:** वेदों की सृजक माँ*
*३३९. **विष्णुमाया:** ईश्वर की मायावी शक्ति की स्वामिनी माँ*
*३४०. **विलासिनी:** आनंदित माँ*

**क्षेत्रस्वरूपा क्षेत्रेशी क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ-पालिनी ।**
**क्षयवृद्धि-विनिर्मुक्ता क्षेत्रपाल-समर्चिता ॥ ७६॥**

*३४१. **क्षेत्रस्वरूपा:** भू-मण्डल (पृथ्वी माँ) का प्रतिरूप माँ*
*३४२. **क्षेत्रेशी:** भू-मण्डल की स्वामिनी माँ (क्षेत्रेश भगवान् शिव शंकर को भी कहा जाता है जो भू-मंडल के स्वामी हैं, अर्थात क्षेत्रेशी को भगवान् शिव शंकर की अर्धांगिनी भी समझा जा सकता है)*
*३४३. **क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ-पालिनी:** भू-मंडल एवं भू-मण्डल के वासियों का पालन करने वाली माँ*
*३४४. **क्षयवृद्धि-विनिर्मुक्ता:** वृद्धि और क्षय से मुक्त माँ (अर्थात सदैव एक*

*स्वरूप में स्थिर माँ)*

*३४५. **क्षेत्रपाल-समर्चिता:** भू-मंडल के व्यवस्थापकों (अर्थात भू-मंडल निवासी सभी वर्ण - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र के नेताओं) द्वारा पूजित माँ*

**विजया विमला वन्द्या वन्दारु-जन-वत्सला ।**
**वाग्वादिनी वामकेशी वह्निमण्डल-वासिनी ॥ ७७॥**

*३४६. **विजया:** सदैव विजयी माँ (अर्थात अपराजित माँ)*
*३४७. **विमला:** पवित्र माँ*
*३४८. **वन्द्या:** सर्व-पूजित माँ*
*३४९. **वन्दारु-जन-वत्सला:** भक्तों को मातृ-प्रेम देने वाली माँ (अर्थात भक्तों के लिए वात्सल्य से परिपूर्ण माँ)*
*३५०. **वाग्वादिनी:** माँ सरस्वती समान वादक माँ*
*३५१. **वामकेशी:** अति सुन्दर केशों वाली माँ*
*३५२. **वह्निमण्डल-वासिनी:** अग्नि-चक्र के मध्य में निवास करने वाली माँ*

**भक्तिमत्-कल्पलतिका पशुपाश-विमोचिनी ।**
**संहृताशेष-पाषण्डा सदाचार-प्रवर्तिका ॥ ७८॥**

*३५३. **भक्तिमत्-कल्पलतिका:** भक्तों की इच्छा पूर्ण करने वाली लता स्वरुप माँ (जिस प्रकार लताएं मनचाहे पुष्प एवं फल देती हैं, उसी प्रकार माँ भक्तों को उनकी इच्छानुसार फल देती हैं)*
*३५४. **पशुपाश-विमोचिनी:** अज्ञानियों को अज्ञान से मुक्ति देने वाली माँ*
*३५५. **संहृताशेष-पाषण्डा:** विधर्मियों का नाश करने वाली माँ*
*३५६. **सदाचार-प्रवर्तिका:** सत्य मार्ग प्रदर्शित करने वाली माँ*

**तापत्रयाग्नि-सन्तप्त-समाह्लादन-चन्द्रिका ।**
**तरुणी तापसाराध्या तनुमध्या तमोऽपहा ॥ ७९॥**

३५७. ***तापत्रयाग्नि-सन्तप्त-समाह्लादन-चन्द्रिका:*** *दुःख की त्रिगुण अग्नि (तीन तत्व - जल, अग्नि एवं वायु से सम्बंधित रोग) से जलते हुए भक्तों को चन्द्रमा के समान शीतलता देने वाली माँ*
३५८. ***तरुणी:*** *सदैव यौवना माँ*
३५९. ***तापसाराध्या:*** *योगियों द्वारा पूजित माँ*
३६०. ***तनुमध्या:*** *अस्थूल-कटि वाली माँ*
३६१. ***तमोऽपहा:*** *तमोगुण को निर्मूल करने वाली माँ*

**चितिः तत्पद-लक्ष्यार्था चिदेकरस-रूपिणी ।**
**स्वात्मानन्द-लवीभूत-ब्रह्माद्यानन्द-सन्ततिः ॥ ८०॥**

३६२. ***चितिः*** *शुद्ध बुद्धि माँ*
३६३. ***तत्पद-लक्ष्यार्था:*** *सत्य की अभिव्यक्ति माँ*
३६४. ***चिदेकरस-रूपिणी:*** *ज्ञान स्वरूपिणी माँ*
३६५. ***स्वात्मानन्द-लवीभूत-ब्रह्माद्यानन्द-सन्ततिः*** *समस्त प्राणियों को ब्रह्मदेव एवं अन्य देवों के वर से भी अधिक आनंद देने वाले वर देने वाली माँ*

**परा प्रत्यक्चितीरूपा पश्यन्ती परदेवता ।**
**मध्यमा वैखरीरूपा भक्त-मानस-हंसिका ॥ ८१॥**

३६६. ***परा:*** *सर्वश्रेष्ठ माँ*
३६७. ***प्रत्यक्चितीरूपा:*** *अवयक्त चेतना स्वरुप माँ*
३६८. ***पश्यन्ती:*** *पश्यन्ति ध्वनि (एक प्रकार की सूक्ष्म ध्वनि जो वाक को उत्पन्न करने वाली वायु के मूलाधार से हटकर नाभि में पहुँचने पर होती है) उत्पन्न करने वाली माँ*
३६९. ***परदेवता:*** *सर्वश्रेष्ठ देवी माँ*
३७०. ***मध्यमा:*** *कमल के कर्णिका (हृदय) में निवास करने वाली माँ*
३७१. ***वैखरीरूपा:*** *माँ सरस्वती की भांति कंठ से विशेष स्वर वैखरी उच्चारण*

*करने में समर्थ माँ*

*३७२. **भक्त-मानस-हंसिका:** भक्तों के मस्तिष्क में हंस स्वरूपी माँ*

**कामेश्वर-प्राणनाडी कृतज्ञा कामपूजिता ।**
**शृङ्गार-रस-सम्पूर्णा जया जालन्धर-स्थिता ॥ ८२॥**

*३७३. **कामेश्वर-प्राणनाडी:** (पति) भगवान् शिव शंकर के प्राण स्वरूपा, माँ*
*३७४. **कृतज्ञा:** प्राणीओं के (शुभ-अशुभ) कर्मों की ज्ञाता, माँ*
*३७५. **कामपूजिता:** कामदेव से पूजित माँ*
*३७६. **शृङ्गार-रस-सम्पूर्णा:** शृङ्गार-रस सार से सम्पूर्ण माँ*
*३७७. **जया:** सदैव विजयी माँ*
*३७८. **जालन्धर-स्थिता:** जालंधर (एक योग मुद्रा) मुद्रा में स्थित माँ*

**ओड्याणपीठ-निलया बिन्दु-मण्डलवासिनी ।**
**रहोयाग-क्रमाराध्या रहस्तर्पण-तर्पिता ॥ ८३॥**

*३७९. **ओड्याणपीठ-निलया:** चित्तमय ओड्याण पीठ के मध्य में स्थित माँ (ओड्याण पीठ चित्त की वृत्ति के प्रतिरूप पर लिंग की स्थिति के सन्दर्भ में वर्णित है)*
*३८०. **बिन्दु-मण्डलवासिनी:** बिंदु-मंडल (श्री-चक्र) में निवास करने वाली माँ*
*३८१. **रहोयाग-क्रमाराध्या:** (बलि) कर्म-काण्ड संस्कारों में गुप्त रूप से पूजित माँ*
*३८२. **रहस्तर्पण-तर्पिता:** रहस्यमय पूजन विधि से प्रसन्न होने वाली माँ (कुछ कर्म-कांडों में जैसे बलि-कर्म-काण्ड, माँ की स्तुति रहस्यमय अथवा गुप्त विधि से की जाती है, जिससे माँ प्रसन्न होतीं हैं)*

**सद्यःप्रसादिनी विश्व-साक्षिणी साक्षिवर्जिता ।**
**षडङ्गदेवता-युक्ता षाड्गुण्य-परिपूरिता ॥ ८४॥**

*३८३. **सद्यःप्रसादिनी:** (श्रद्धा से पूजन करने पर) तुरंत कृपा प्रदान करने वाली माँ*
*३८४. **विश्व-साक्षिणी:** विश्व की साक्षी माँ (अर्थात विश्व की घटनाओं की साक्षी माँ)*
*३८५. **साक्षिवर्जिता:** माँ के अतिरिक्त कोई और (विश्व की घटनाओं का) विश्वसनीय साक्षी नहीं*
*३८६. **षडङ्गदेवता-युक्ता:** छै अंग (हृदय, मष्तिस्क, केश, नेत्र, कवच एवं शस्त्र) वाले देवताओं के सहगत माँ*
*३८७. **षाड्गुण्य-परिपूरिता:** छै गुण (समृद्धता, वीरता, विरागता, प्रसिद्धि, धन-धान्य एवं बुद्धिमता) से परिपूर्ण माँ*

**नित्यक्लिन्ना निरुपमा निर्वाण-सुख-दायिनी ।**
**नित्या-षोडशिका-रूपा श्रीकण्ठार्ध-शरीरिणी ॥ ८५॥**

*३८८. **नित्यक्लिन्ना:** सदैव करुणामयी माँ*
*३८९. **निरुपमा:** अतुलनीय माँ*
*३९०. **निर्वाण-सुखदायिनी:** मोक्ष सुख देने वाली माँ*
*३९१. **नित्या-षोडशिका-रूपा:** सोलह पवित्र देवी स्वरूपिणी माँ (कामेश्वरी, भगमालिनी, नित्यक्लिन्ना, भेरुण्डा, वाहिनिवासिनी, महावज्रेश्वरी, शिवदूती, त्वरिता, कुलसुंदरी, नित्या, नीलपटाकिनी, विजया, सर्वमंगला, ज्वालामालिनी, चित्रा एवं त्रिपुर-सुंदरी)*
*३९२. **श्रीकण्ठार्ध-शरीरिणी:** अर्ध-नारीश्वर स्वरूपिणी माँ*

**प्रभावती प्रभारूपा प्रसिद्धा परमेश्वरी ।**
**मूलप्रकृतिर् अव्यक्ता व्यक्ताव्यक्त-स्वरूपिणी ॥ ८६॥**

*३९३. **प्रभावती:** दीप्तिमान माँ*
*३९४. प्र**भारूपा:** उज्जवल किरण रुपी माँ*
*३९५. **प्रसिद्धा:** यशस्वी माँ*

*३९६. **परमेश्वरी:** सर्वोच्च संप्रभुता वाली माँ*
*३९७. **मूलप्रकृतिर्:** समस्त ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का मूल कारण, माँ*
*३९८. **अव्यक्ता:** अव्यक्त ब्रह्म माँ*
*३९९. **व्यक्ताव्यक्त-स्वरूपीणि:** व्यक्त एवं अव्यक्त, दोनों ही रूप में स्थित माँ*

**व्यापिनी विविधाकारा विद्याविद्या-स्वरूपिणी ।**
**महाकामेश-नयन-कुमुदाह्लाद-कौमुदी ॥ ८७॥**

*४००. **व्यापिनी:** सर्व-व्यापी माँ*
*४०१. **विविधाकारा:** अनेक आकारों वाली माँ*
*४०२. **विद्याऽविद्या-स्वरूपिणी:** अज्ञान एवं ज्ञान (अर्थात तमस एवं सत), दोनों ही स्वरुप में स्थित माँ*
*४०३. **महाकामेश-नयन-कुमुदाह्लाद-कौमुदी:** भगवान् शिव शंकर के जल-कुमुदिनी समान नेत्रों में चंद्र प्रकाश (चांदनी) की तरह चमकती माँ*

**भक्त-हार्द-तमोभेद-भानुमद्भानु-सन्ततिः ।**
**शिवदूती शिवाराध्या शिवमूर्तिः शिवङ्करी ॥ ८८॥**

*४०४. **भक्त-हार्द-तमोभेद-भानुमद्भानु-सन्ततिः** भक्तों के हृदय से अंधकार दूर करने वाली सूर्य की किरण समान माँ*
*४०५. **शिवदूती:** भगवान् शिव शंकर का प्रतिनिधित्व करने वाली माँ*
*४०६. **शिवाराध्या:** भगवान् शिव शंकर से भी आराध्य, माँ*
*४०७. **शिवमूर्तिः** भगवान् शिव शंकर की प्रतिरूप माँ*
*४०८. **शिवङ्करी:** मंगलता प्रदान करने वाली माँ*

**शिवप्रिया शिवपरा शिष्टेष्टा शिष्टपूजिता ।**
**अप्रमेया स्वप्रकाशा मनोवाचामगोचरा ॥ ८९॥**

४०९. ***शिवप्रिया:*** *भगवान् शिव शंकर की प्रिया, माँ*
४१०. ***शिवपरा: (****अपने पति) भगवान् शिव शंकर को पूर्णतः समर्पित, माँ*
४११. ***शिष्टेष्टा:*** *सत्य-मार्गी प्राणीओं की प्रियतम माँ*
४१२. ***शिष्टपूजिता:*** *सत्य-मार्गी प्राणीओं द्वारा पूजित माँ*
४१३. ***अप्रमेया:*** *अनंत माँ*
४१४. ***स्वप्रकाशा:*** *स्वतःदीप्त माँ*
४१५. ***मनोवाचामगोचरा:*** *अकल्पनित माँ (माँ का आंकलन बुद्धि, वाणी इत्यादि से नहीं किया जा सकता)*

**चिच्छक्तिश् चेतनारूपा जडशक्तिर् जडात्मिका ।**
**गायत्री व्याहृतिः सन्ध्या द्विजबृन्द-निषेविता ॥ ९०॥**

४१६. ***चिच्छक्तिश्:*** *चेतना की शक्ति माँ*
४१७. ***चेतनारूपा:*** *शुद्ध चेतना स्वरुप माँ*
४१८. ***जडशक्तिर्:*** *सृजन-शक्ति की स्वामिनी माँ*
४१९. ***जडात्मिका:*** *ब्रह्माण्ड की आत्मा माँ*
४२०. ***गायत्री:*** *गायत्री मन्त्र दायिनी माँ (ॐ भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात्। अर्थात - हम पृथ्वीलोक, भुवर्लोक और स्वर्लोक में व्याप्त उस सृष्टिकर्ता प्रकाशमान परमात्मा के तेज का ध्यान करते हैं। हमारी बुद्धि को सन्मार्ग की ओर ले चलने के लिए परमात्मा का तेज हमें प्रेरित करे, ऐसा ज्ञान देने वाली माँ )*
४२१. ***व्याहृतिः*** *वाक्य देवी माँ*
४२२. ***सन्ध्या:*** *गोधूलि स्वरूपा माँ (पूजा-पाठ और मांगलिक कार्यों के लिए गोधूलि बेला अत्यंत शुभ मानी जाती है, अतः इस पावन समय का प्रतिनिधित्व करने वाली माँ)*
४२३. ***द्विजवृन्द-निषेविता:*** *द्विज प्राणीओं द्वारा पूजित माँ (गृहस्थ आश्रम से जब प्राणी आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर होता है तो उसे द्विज कहा जाता है)*

**तत्त्वासना तत् त्वं अयी पञ्च-कोशान्तर-स्थिता ।**
**निःसीम-महिमा नित्य-यौवना मदशालिनी ॥ ९१॥**

*४२४. **तत्त्वासना:** तत्व (आकाश, अग्नि, जल, थल एवं पवन) में वास करने वाली माँ*
*४२५. **तत्:** सर्वोच्च सत्य (ब्रह्म) माँ*
*४२६. **त्वं:** आदर के साथ 'आप' सम्बोधित माँ*
*४२७. **अयी:** पोषण करने वाली माँ*
*४२८. **पञ्च-कोशान्तर-स्थिता:** पांचो कोश (अन्नमय कोष, प्रणम्य कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष एवं आनंदमय कोष) में विद्यमान माँ*
*४२९. **निःसीम-महिमा:** अपरिमित महिमा वाली माँ*
*४३०. **नित्य-यौवना:** सदैव युवती माँ*
*४३१. **मदशालिनी:** मदमस्त माँ*

**मदघूर्णित-रक्ताक्षी मदपाटल-गण्डभूः ।**
**चन्दन-द्रव-दिग्धाङ्गी चाम्पेय-कुसुम-प्रिया ॥ ९२॥**

*४३२. **मदघूर्णित-रक्ताक्षी:** रक्त समान लाल आकर्षित मदमस्त नेत्रों वाली माँ*
*४३३. **मदपाटल-गण्डभू:** गुलाबी आकर्षक कपोल वाली माँ*
*४३४. **चन्दन-द्रव-दिग्धाङ्गी:** चन्दन के लेप से लिप्त शरीर वाली माँ*
*४३५. **चाम्पेय-कुसुम-प्रिया:** चम्पक के पुष्पों को पसंद करने वाली माँ*

**कुशला कोमलाकारा कुरुकुल्ला कुलेश्वरी ।**
**कुलकुण्डालया कौल-मार्ग-तत्पर-सेविता ॥ ९३॥**

*४३६. **कुशला:** अति निपुण माँ*
*४३७. **कोमलाका:** कोमल अंगों वाली अति सुन्दर माँ*
*४३८. **कुरुकुल्ला:** उत्पति एवं संहार करने वाली माँ*
*४३९. **कुलेश्वरी:** कुल देवी माँ*

*४४०. **कुलकुण्डालया:** मूलाधार चक्र (तंत्र और योग साधना की चक्र संकल्पना का पहला चक्र) में स्थित माँ*

*४४१. **कौल-मार्ग-तत्पर-सेविता:** कौलाचार परम्परा का अनुसरण करने वाले प्राणियों द्वारा पूजित माँ (वेदाचार, वैष्णवाचार, शैवाचार, दक्षिणाचार, वामाचार, सिद्धांताचार एवं कौलाचार, ये भावत्रय से संबद्ध सात आचार हैं)*

**कुमार-गणनाथाम्बा तुष्टिः पुष्टिर् मतिर् धृतिः ।**
**शान्तिः स्वस्तिमती कान्तिर् नन्दिनी विघ्ननाशिनी ॥ ९४॥**

*४४२. **कुमार-गणनाथाम्बा:** कुमार सुब्रह्मण्य (कार्तिकेय) एवं गणपति की जननी माँ*

*४४३. **तुष्टिः** सदैव संतुष्ट माँ*

*४४४. **पुष्टिर्:** पोषिता माँ*

*४४५. **मतिर्:** बुद्धिमान माँ*

*४४६. **धृतिः** धैर्यवान माँ*

*४४७. **शान्तिः** शांतिप्रिय माँ*

*४४८. **स्वस्तिमती:** परम सत्य माँ*

*४४९. **कान्तिर्:** आभामयी माँ*

*४५०. **नन्दिनी:** आनंद दायिनी माँ*

*४५१. **विघ्ननाशिनी:** विघ्न-हर्ता माँ*

**तेजोवती त्रिनयना लोलाक्षी-कामरूपिणी ।**
**मालिनी हंसिनी माता मलयाचल-वासिनी ॥ ९५॥**

*४५२. **तेजोवती:** प्रभावान माँ*

*४५३. **त्रिनयना:** तीन नेत्रों वाली माँ (सूर्य, चंद्र एवं अग्नि, यह माँ के तीन नेत्र माने जाते हैं)*

*४५४. **लोलाक्षी-कामरूपिणी:** चंचल नेत्रों वाली एवं स्व-इच्छा से विभिन्न रूप*

*धारण करने वाली माँ*

४५५. ***मालिनी:*** *(पुष्पों की) माला धारण करने वाली माँ*

४५६. ***हंसिनी:*** *हंस पर विराजमान माँ*

४५७. ***माता:*** *जननी, माँ*

४५८. ***मलयाचल-वासि:*** *मलय पर्वत पर निवास करने वाली माँ*

**सुमुखी नलिनी सुभ्रूः शोभना सुरनायिका ।**
**कालकण्ठी कान्तिमती क्षोभिणी सूक्ष्मरूपिणी ॥ ९६॥**

४५९. ***सुमुखी:*** *अत्यंत सुन्दर मुख वाली माँ*

४६०. ***नलिनी:*** *कोमल कमल-पत्र समान शरीर वाली माँ*

४६१. ***सुभ्रू:*** *अत्यंत सुन्दर भौहें वाली माँ*

४६२. ***शोभना:*** *सदैव दीप्तिमान माँ*

४६३. ***सुरनायिका:*** *देवों की नायिका माँ*

४६४. ***कालकण्ठी:*** *भगवान् शिव शंकर की अर्धांगिनी माँ*

४६५. ***कान्तिमती:*** *आभामयी माँ*

४६६. ***क्षोभिणी:*** *निषाद स्वर की दो श्रुतियों में अंतिम श्रुति की ज्ञाता माँ (अर्थात संगीतज्ञ माँ)*

४६७. ***सूक्ष्मरूपिणी****: सूक्ष्म रूप में सदैव उपस्थित माँ (सूक्ष्म रूप जिसे ज्ञानेन्द्रियों से सांसारिकता में अनुभव न किया जा सके, लेकिन जो आध्यात्मिक रूप में उपस्थित हो)*

**वज्रेश्वरी वामदेवी वयोऽवस्था-विवर्जिता ।**
**सिद्धेश्वरी सिद्धविद्या सिद्धमाता यशस्विनी ॥ ९७॥**

४६८. ***वज्रेश्वरी:*** *वज्र तांत्रिक अनुष्ठान की देवी माँ (एक प्रकार का तान्त्रिक अनुष्ठान, वज्रवाहनिका, जिसे शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए वज्र बनाकर मन्त्रों द्वारा अभिषेक, पूजन और हवन के द्वारा किया जाता, उसकी स्वामिनी देवी माँ)*

४६९. ***वामदेवी:*** *भगवान् शिव शंकर की अर्धांगिनी*
४७०. ***वयोऽवस्था-विवर्जिता:*** *आयु (अथवा समय) का जिन पर कोई प्रभाव न हो, ऐसी माँ (अर्थात सदैव यौवना माँ)*
४७१. ***सिद्धेश्वरी:*** *सिद्ध प्राणियों द्वारा पूजित माँ*
४७२. ***सिद्धविद्या:*** *सिद्धि देने वाले पंद्रह अक्षर काली मन्त्र (ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अद्य कालिका परम् ईश्वरी स्वाहा) की स्वामिनी माँ*
४७३. ***सिद्धमाता:*** *सिद्ध प्राणीओं की माँ*
४७४. ***यशस्विनी:*** *प्रसिद्द माँ*

**विशुद्धिचक्र-निलया आरक्तवर्णा त्रिलोचना ।**
**खट्वाङ्गादि-प्रहरणा वदनैक-समन्विता ॥ ९८॥**

४७५. ***विशुद्धिचक्र-निलया:*** *विशुद्धि चक्र में निवास करने वाली माँ (हमारे शरीर में सात चक्र होते हैं जिसमे से पांचवां चक्र है, विशुद्धि चक्र। इसे कंठ चक्र भी कहा जाता है। विशुद्धि चक्र आध्यात्म से जुड़ा हुआ माना जाता है। इसे आत्मा की शुद्धि का प्रतीक भी माना जाता है। इसलिए इस चक्र को जाग्रत करने से मन व आत्मा की शुद्धि होती है।)*
४७६. ***आरक्तवर्णा:*** *हल्के लाल वर्ण वाली (अत्यंत सुन्दर) माँ*
४७७. ***त्रिलोचना:*** *तीन नेत्रों वाली माँ (सूर्य, चंद्र एवं अग्नि, यह माँ के तीन नेत्र माने जाते हैं)*
४७८. ***खट्वाङ्गादि-प्रहरणा:*** *गदा आदि अस्त्रों से सुसज्जित माँ*
४७९. ***वदनैक-समन्विता:*** *एक-मुखी माँ*

**पायसान्नप्रिया त्वक्स्था पशुलोक-भयङ्करी ।**
**अमृतादि-महाशक्ति-संवृता डाकिनीश्वरी ॥ ९९॥**

४८०. ***पायसान्नप्रिया:*** *मीठे चावल की अनुरक्त माँ*
४८१. ***त्वक्स्था:*** *स्पर्श अनुभूति की देवी माँ*
४८२. ***पशुलोक-भयङ्करी:*** *पशुलोक वासिओं के हृदय में भय भरने वाली माँ*

*(अर्थात दुष्ट लोगों के हृदय को भयभीत करने वाली माँ)*

४८३. ***अमृतादि-महाशक्ति-संवृता:*** *अमृत एवं अन्य शक्तिओं को धारण करने वाली माँ*

४८४. ***डाकिनीश्वरी:*** *डाकिनी (माँ की एक अनुचरी) की स्वामिनी माँ*

**अनाहताब्ज-निलया श्यामाभा वदनद्वया ।**
**दंष्ट्रोज्ज्वला अक्ष-मालादि-धरा रुधिरसंस्थिता ॥ १००॥**

४८५. ***अनाहताब्ज-निलया:*** *दर्द दूर करने वाले स्थानों (चिकित्सालयों) में निवास करने वाली माँ (अर्थात चिकित्सालयों में रोगियों को रोग-मुक्त करने वाली माँ)*

४८६. ***श्यामाभा:*** *श्याम वर्ण की कांतिमान माँ*

४८७. ***वदनद्वया:*** *द्वि-शरीर वाली माँ*

४८८. ***दंष्ट्रोज्ज्वला:*** *उज्जवल दांतों वाली माँ*

४८९. ***अक्ष-मालादि-धरा:*** *रुद्राक्ष मनका की माला धारण करने वाली माँ*

४९०. ***रुधिरसंस्थिता:*** *रक्त को नियन्त्र करने वाली माँ (अर्थात जीवन दान देने वाली माँ)*

**कालरात्र्यादि-शक्त्यौघ-वृता स्निग्धौदनप्रिया ।**
**महावीरेन्द्र-वरदा राकिण्यम्बा-स्वरूपिणी ॥ १०१॥**

४९१. ***कालरात्र्यादि-शक्त्यौघ-वृता:*** *कालरात्रि शक्ति की स्वामिनी माँ (माँ की सातवीं शक्ति कालरात्रि के नाम से जानी जाती हैं)*

४९२. ***स्निग्धौदनप्रिया:*** *गौ घी एवं मक्खन से निर्मित खाद्य पदार्थों की अनुरक्त माँ*

४९३. ***महावीरेन्द्र-वरदा:*** *महावीरों को वरदान देने वाली माँ*

४९४. ***राकिण्यम्बा-स्वरूपिणी:*** *राकिनी स्वरूपिणी माँ (राकिनी एक तंत्र देवी का नाम है)*

**मणिपूराब्ज-निलया वदनत्रय-संयुता ।**
**वज्रादिकायुधोपेता डामर्यादिभिरावृता ॥ १०२॥**

४९५. ***मणिपूराब्ज-निलया:*** *दस-पत्री कमल के मणिपूरक चक्र में निवास करने वाली माँ*
४९६. ***वदनत्रय-संयुता:*** *त्रि-मुख आकृति वाली माँ*
४९७. ***वज्रादिकायुधोपेता:*** *वज्र (बिजली जैसी चमक वाला अस्त्र) जैसे घातक अस्त्रों को धारण करने वाली माँ*
४९८. ***डामर्यादिभिरावृता:*** *डिम्ब (मादा प्राणी के गर्भ की आरंभिक अवस्था) को नियंत्रित करने वाली माँ (अर्थात जननी, माँ)*

**रक्तवर्णा मांसनिष्ठा गुडान्न-प्रीत-मानसा ।**
**समस्तभक्त-सुखदा लाकिन्यम्बा-स्वरूपिणी ॥ १०३॥**

४९९. ***रक्तवर्णा:*** *रक्त (लाल) वर्ण वाली अत्यंत सुन्दर माँ*
५००. ***मांसनिष्ठा:*** *मांस-पेशियों को नियंत्रण करने वाली माँ (अर्थात शरीर में शक्ति देने वाली माँ)*
५०१. ***गुडान्न-प्रीत-मानसा:*** *गुड़ से निर्मित मीठे चावल पसंद करने वाली माँ*
५०२. ***समस्तभक्त-सुखदा:*** *समस्त भक्तों को सुख देने वाली माँ*
५०३. ***लाकिन्यम्बा-स्वरूपिणी:*** *लाकिनी देवी (एक तांत्रिक दिव्य देवी) स्वरूपिणी माँ*

**स्वाधिष्ठानाम्बुज-गता चतुर्वक्त्र-मनोहरा ।**
**शूलाद्यायुध-सम्पन्ना पीतवर्णा अतिगर्विता ॥ १०४॥**

५०४. ***स्वाधिष्ठानाम्बुज-गता:*** *स्वाधिष्ठान योग में कमल पत्र पर अधिष्ठापित माँ (स्वाधिष्ठान योग, हठयोग का ही भाग माना जाता है। शरीर के आठ चक्रों में से शिश्न मूल रूप (मूलाधार चक्र और मणिपूरक चक्र के मध्य) एवं स्वाधिष्ठान रूप का श्रुति में उल्लेख है। यह छह पत्रों वाले कमल में*

*अधिष्ठापित माँ का ही स्वरुप है। मान्यता है कि इस चक्र से यौवन शक्ति का विकास होता है। )*

५०५. ***चतुर्वक्त्र-मनोहरा:*** *अत्यंत सुन्दर चार मुखाकृति वाली माँ*

५०६. ***शूलाद्यायुध-सम्पन्ना:*** *त्रिशूल एवं अन्य घातक अस्त्रों को धारण करने वाली माँ*

५०७. ***पीतवर्णा:*** *पीत वर्ण में अति सुन्दर माँ*

५०८. ***अतिगर्विता:*** *गौरवशाली माँ*

**मेदोनिष्ठा मधुप्रीता बन्धिन्यादि-समन्विता ।**
**दध्यन्नासक्त-हृदया काकिनी-रूप-धारिणी ॥ १०५॥**

५०९. ***मेदोनिष्ठा:*** *प्राणीओं के स्थूल शरीर में निवास करने वाली माँ*

५१०. ***मधुप्रीता:*** *मधु (शहद) पान की प्रिया माँ*

५११. ***बन्धिन्यादि-समन्विता:*** *बंधिनी (वीर) एवं अन्य शक्तियों को प्रदान करने वाली माँ*

५१२. ***दध्यन्नासक्तहृ-दया:*** *दही द्वारा निर्मित प्रसाद की प्रिया माँ*

५१३. ***काकिनी-रूप-धारिणी:*** *काकिनी योगिनी (तंत्र विद्या की एक देवी) स्वरूपिणी माँ*

**मूलाधाराम्बुजारूढा पञ्च-वक्त्रा अस्थि-संस्थिता ।**
**अङ्कुशादि-प्रहरणा वरदादि-निषेविता ॥ १०६॥**

५१४. ***मूलाधाराम्बुजारूढा:*** *मूलाधार योग में कमल पत्र पर स्थित माँ (मूलाधार योग हठयोग के षट्चक्रों में से एक है)*

५१५. ***पञ्च-वक्त्रा:*** *पञ्च-मुखी आकृति वाली माँ*

५१६. ***अस्थि-संस्थिता:*** *प्राणीओं की अस्थि में निवास करने वाली माँ*

५१७. ***अङ्कुशादि-प्रहरणा:*** *अंकुश एवं अन्य घातक अस्त्रों को धारण करने वाली माँ*

५१८. ***वरदादि-निषेविता:*** *वरदा (एक देवी) एवं अन्य देवीयों द्वारा सेवित माँ*

**मुद्गौदनासक्त-चित्ता साकिन्यम्बा-स्वरूपिणी ।**
**आज्ञा-चक्राब्ज-निलया शुक्लवर्णा षडानना ॥ १०७॥**

५१९. ***मुद्गौदनासक्त-चित्ता:*** *मुद्गा (एक प्रकार की दाल) द्वारा निर्मित प्रसाद की प्रिया माँ*
५२०. ***साकिन्यम्बा-स्वरूपिणी:*** *साकिनी योगिनी (तंत्र की एक देवी) स्वरूपिणी माँ*
५२१. ***आज्ञा-चक्राब्ज-निलया:*** *आज्ञा चक्र में कमल के द्वि-पत्र में स्थित माँ (आज्ञा चक्र एक प्रकार का हठयोग है। इस के साधन से वाक्-सिद्धि प्राप्त होती है)*
५२२. ***शुक्लवर्णा:*** *श्वेत वर्ण में अति सुन्दर माँ*
५२३. ***षडानना:*** *छै मुखाकृति वाली माँ*

**मज्जासंस्था हंसवती-मुख्य-शक्ति-समन्विता ।**
**हरिद्रान्नैक-रसिका हाकिनी-रूप-धारिणी ॥ १०८॥**

५२४. ***मज्जासंस्था:*** *अस्थि-मज्जा को नियंत्रित करने वाली माँ (अर्थात प्राणीओं को जीवन दान देने वाली माँ)*
५२५. ***हंसवती-मुख्य-शक्ति-समन्विता:*** *हंसवति एवं क्षमावति (तंत्र साधना की दो देवियों) के साथ कमल के द्वि-पत्र में निवास करने वाली माँ*
५२६. ***हरिद्रान्नैक-रसिका:*** *हल्दी (मसाला) से बनाए गए द्रव्य की प्रिया माँ*
५२७. ***हाकिनी-रूप-धारिणी:*** *हाकिनी देवी (तंत्र विद्या की एक देवी) स्वरूपिणी माँ*

**सहस्रदल-पद्मस्था सर्व-वर्णोप-शोभिता ।**
**सर्वायुधधरा शुक्ल-संस्थिता सर्वतोमुखी ॥ १०९॥**

५२८. ***सहस्रदल-पद्मस्था:*** *सहस्त्र-पत्रों वाले कमल में निवास करने वाली माँ*
५२९. ***सर्व-वर्णोप-शोभिता:*** *सभी वर्णों में आभामयी माँ*

५३०. ***सर्वायुधधरा:*** *सभी प्रकार के घातक अस्त्रों को धारण करने वाली माँ*
५३१. ***शुक्ल-संस्थिता:*** *शुक्ल (वीर्य) की स्वामिनी माँ (अर्थात जन्म-दाता माँ)*
५३२. ***सर्वतोमुखी:*** *सभी दिशाओं में देखने वाली माँ (माँ हर समय ब्रह्माण्ड के प्रत्येक भाग को देख सकती हैं)*

**सर्वौदन-प्रीतचित्ता याकिन्यम्बा-स्वरूपिणी ।**
**स्वाहा स्वधा अमतिर् मेधा श्रुतिः स्मृतिर् अनुत्तमा ॥ ११०॥**

५३३. ***सर्वौदन-प्रीतचित्ता:*** *किसी भी प्रकार के प्रसाद (पत्र, पुष्प, नैवैद्य इत्यादि) अर्पण से प्रसन्न होने वाली माँ*
५३४. ***याकिन्यम्बा-स्वरूपिणी:*** *याकिनी योगिनी (तंत्र विद्या की एक देवी) स्वरूपिणी माँ*
५३५. ***स्वाहा:*** *यज्ञ-मन्त्र उच्चारण की स्वामिनी माँ (जब यज्ञ-मन्त्र के अंत में माँ के 'स्वाहा' उच्चारण के साथ अग्नि को आहुति अर्पित की जाती है, तो अग्नि देव प्रसन्न हो आहुति स्वीकार करते हैं)*
५३६. ***स्वधा:*** *यज्ञ आहुति में अन्न-दान की स्वामिनी माँ ('स्वधा' माँ का स्वरुप है जिसके यज्ञ-मन्त्र में उच्चारण से देवता पितरों को दी गई हवि स्वीकार करते हैं)*
५३७. ***अमतिर्:*** *अनभिज्ञता की स्वामिनी माँ (अर्थात चूँकि माँ अनभिज्ञता की स्वामिनी हैं, माँ के भक्तों को अज्ञानता नहीं सताती)*
५३८. ***मेधा:*** *बुद्धिमान माँ*
५३९. ***श्रुतिः*** *स्वयं ही धर्म-शास्त्र माँ*
५४०. ***स्मृतिः*** *स्वयं ही स्मृति (वेदों का मूल आधार) माँ*
५४१. ***अनुत्तमा:*** *असामान्य माँ (जिनके समान कोई न हो, ऐसी माँ)*

**पुण्यकीर्तिः पुण्यलभ्या पुण्यश्रवण-कीर्तना ।**
**पुलोमजार्चिता बन्ध-मोचनी बन्धुरालका ॥ १११॥**

५४२. ***पुण्यकीर्तिः*** *यशस्वी माँ*

५४३. ***पुण्यलभ्या:*** *पुण्य आत्माओं को प्राप्त माँ*
५४४. ***पुण्यश्रवण-कीर्तना:*** *(माँ की) पुण्य कीर्ति गाने वाले भक्तों को शुभ फल देने वाली माँ*
५४५. ***पुलोमजार्चिता:*** *पुलोम की पुत्री (शची - इंद्राणी) से आराध्य माँ*
५४६. ***बन्ध-मोचनी:*** *बंधनों से मुक्ति देनी वाली माँ*
५४७. ***बर्बरालका:*** *घुंघराले बालों वाली माँ*

**विमर्शरूपिणी विद्या वियदादि-जगत्प्रसूः ।**
**सर्वव्याधि-प्रशमनी सर्वमृत्यु-निवारिणी ॥ ११२॥**

५४८. ***विमर्शरूपिणी:*** *गुण-दोषों की विवेचना करने वाली माँ*
५४९. ***विद्या:*** *स्वयं ही ज्ञान स्वरूपिणी माँ*
५५०. ***वियदादि-जगत्प्रसूः*** *समस्त तत्व की स्वामिनी जगद्जननी माँ*
५५१. ***सर्वव्याधि-प्रशमनी:*** *समस्त दुःखों और रोगों को दूर करने वाली माँ*
५५२. ***सर्वमृत्यु-निवारिणी:*** *भक्तों में मृत्यु-भय का निवारण करने वाली माँ*

**अग्रगण्या अचिन्त्यरूपा कलिकल्मष-नाशिनी ।**
**कात्यायनी कालहन्त्री कमलाक्ष-निषेविता ॥ ११३॥**

५५३. ***अग्रगण्या:*** *सर्वश्रेष्ठ माँ*
५५४. ***अचिन्त्यरूपा:*** *विचारों से परे माँ (अर्थात अकल्पनीय माँ)*
५५५. ***कलिकल्मष-नाशिनी:*** *कलियुग के पापों को नष्ट करने वाली माँ*
५५६. ***कात्यायनी:*** *महर्षि कात्यायन की पुत्री, माँ (महर्षि कत नामक एक प्रसिद्ध महर्षि थे। उनके पुत्र महर्षि कात्य हुए। इन्हीं कात्य के गोत्र में विश्वप्रसिद्ध महर्षि कात्यायन उत्पन्न हुए थे। इन्होंने भगवती पराम्बा की उपासना करते हुए अनेक वर्षों तक कठिन तपस्या की थी। उनकी इच्छा थी माँ भगवती उनके घर पुत्री के रूप में जन्म लें। माँ भगवती ने उनकी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली और उनके गृह में पुत्री बन कर जन्म लिया। इस जन्म में माँ, कात्यानी कहलाईं।)*

५५७. ***कालहन्त्री:*** *काल को टालने वाली माँ (अर्थात अमरत्व का वर देने वाली माँ)*
५५८. ***कमलाक्ष-निषेविता:*** *भगवान् विष्णु को शरण देने वाली माँ*

**ताम्बूल-पूरित-मुखी दाडिमी-कुसुम-प्रभा ।**
**मृगाक्षी मोहिनी मुख्या मृडानी मित्ररूपिणी ॥ ११४॥**

५५९. ***ताम्बूल-पूरित-मुखी:*** *मुख में पान चबाती हुई माँ*
५६०. ***दाडिमी-कुसुम-प्रभा:*** *अनार के पुष्प के सामान आभा वाली माँ*
५६१. ***मृगाक्षी:*** *मृग के समान (बड़े बड़े सुन्दर) नेत्रों वाली माँ*
५६२. ***मोहिनी:*** *सम्मोहक माँ*
५६३. ***मुख्या:*** *प्रमुख माँ*
५६४. ***मृडानी:*** *भगवान् शिव शंकर की पत्नी, माँ*
५६५. ***मित्ररूपिणी:*** *सभी प्राणीओं की मित्र माँ*

**नित्यतृप्ता भक्तनिधिर् नियन्त्री निखिलेश्वरी ।**
**मैत्र्यादि-वासनालभ्या महाप्रलय-साक्षिणी ॥ ११५॥**

५६६. ***नित्यतृप्ता:*** *सदैव तृप्त माँ*
५६७. ***भक्तनिधिर्:*** *भक्तों के लिए कोष रुपी माँ*
५६८. ***नियन्त्री:*** *भक्तों को सत्य मार्ग पर चलने का निर्देश देने वाली माँ*
५६९. ***निखिलेश्वरी:*** *समस्त ब्रह्माण्ड की साम्राज्ञी माँ*
५७०. ***मैत्र्यादि-वासनालभ्या:*** *प्रेम एवं नैतिक स्वभाव से प्राप्त होने वाली माँ*
५७१. ***महाप्रलय-साक्षिणी:*** *प्रलय की साक्षी माँ*

**पराशक्तिः परानिष्ठा प्रज्ञानघन-रूपिणी ।**
**माध्वीपानालसा मत्ता मातृका-वर्ण-रूपिणी ॥ ११६॥**

५७२. ***पराशक्तिः*** *सर्वोच्च शक्ति माँ*

५७३. ***परानिष्ठा:*** *परम विश्वासपात्र एवं हितकारी माँ*
५७४. ***प्रज्ञानघन-रुपिणी:*** *प्रत्यक्ष ज्ञान स्वरूपिणी माँ (अर्थात्त स्वयं ही ज्ञान माँ)*
५७५. ***माध्वीपानालसा:*** *माध्वी नदी (शास्त्रों में उल्लेखित एक पवित्र नदी) के जल की प्रिया माँ (माध्वी नदी के जल को अमृत-तुल्य माना गया है)*
५७६. ***मत्ता:*** *मदमस्त माँ*
५७७. ***मातृका-वर्ण-रूपिणी****: सरस्वती स्वरूपिणी माँ*

**महाकैलास-निलया मृणाल-मृदु-दोर्लता ।**
**महनीया दयामूर्तिर् महासाम्राज्य-शालिनी ॥ ११७॥**

५७८. ***महाकैलास-निलया:*** *महा-कैलाश पर्वत निवासिनी माँ*
५७९. ***मृणाल-मृदु-दोर्लता:*** *कमल डंठल के समान कोमल एवं मृदु भुजाओं वाली माँ*
५८०. ***महनीया:*** *आराध्य माँ*
५८१. ***दयामूर्तिर्:*** *दया-मूर्ति माँ*
५८२. ***महासाम्राज्य-शालिनी:*** *महान साम्राज्य (त्रि-लोक) की साम्राज्ञी माँ*

**आत्मविद्या महाविद्या श्रीविद्या कामसेविता ।**
**श्री-षोडशाक्षरी-विद्या त्रिकूटा कामकोटिका ॥ ११८॥**

५८३. ***आत्मविद्या:*** *स्वयं ही ज्ञान माँ*
५८४. ***महाविद्या:*** *उत्कृष्ट ज्ञान की पीठ माँ*
५८५. ***श्रीविद्या:*** *श्री विद्या मन्त्र की जननी माँ (श्री विद्या मन्त्र - 'कामो योनिः कमला वज्रपाणि र्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूश्च्यैशा विश्वमातादिविद्योम', की साधना साधक के अज्ञान को दूर कर आत्म-तत्त्व को प्रकाशित करती है)*
५८६. ***कामसेविता:*** *कामदेव की आराध्य माँ*
५८७. ***श्री-षोडशाक्षरी-विद्या:*** *सोलह अक्षर मन्त्र की जननी माँ (महा-षोडशी*

*मन्त्र 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुर सुंदरीयै नमः' की जननी माँ। षोडशी-मन्त्र के जाप से सुंदर रूप की प्राप्ति होती है एवं वैवाहिक जीवन सुखमय बीतता है। कुंवारी स्त्रियों को इसके जाप से अच्छे जीवनसाथी की प्राप्ति होती है। इसके जाप से हृदय की चंचलता समाप्त हो जाती है और मन नियंत्रण में रहता है। यह मन्त्र मन को वश में करके उसे तृप्त करता है)*

५८८. ***त्रिकूटा:*** *तीन श्रंगियों वाले पर्वत पर निवास करने वाली माँ (वह पर्वत जिस पर लंका बसी हुई है 'गिरि त्रिकूट एक सिंधु मँझारी । विधि निर्मित दुर्गम अति भारी - 'श्री राम चारिस मानस')*

५८९. ***कामकोटिका:*** *करोड़ों काम समान सुंदरता वाली माँ*

**कटाक्ष-किङ्करी-भूत-कमला-कोटि-सेविता ।**
**शिरःस्थिता चन्द्रनिभा भालस्था इन्द्रधनु-प्रभा ॥ ११९॥**

५९०. ***कटाक्ष-किङ्करी-भुत-कमला-कोटि-सेविता:*** *करोड़ों देवीओं द्वारा आराध्य माँ जिनकी एक दृष्टि से सभी वशीभूत हो जाते हैं*

५९१. ***शिरःस्थिता:*** *शिर निवासित माँ (अर्थात उच्च स्थान पर निवास करने वाली)*

५९२. ***चन्द्रनिभा:*** *चन्द्रमा के समान देदीप्यमान माँ*

५९३. ***भालस्था:*** *मस्तिष्क में निवास करने वाली माँ*

५९४. ***इन्द्रधनु-प्रभा:*** *इंद्र-धनुष समान देदीप्यमान माँ*

**हृदयस्था रविप्रख्या त्रिकोणान्तर-दीपिका ।**
**दाक्षायणी दैत्यहन्त्री दक्षयज्ञ-विनाशिनी ॥ १२०॥**

५९५. ***हृदयस्था:*** *(भक्तों के) हृदय में निवास करने वाली माँ*

५९६. ***रविप्रख्या:*** *सूर्य समान दीप्तिमान माँ*

५९७. ***त्रिकोणान्तर-दीपिका:*** *त्रिभुजन श्रंखला में दीप्तिमान माँ (त्रिभुजन श्रृंखला ब्रह्माण्ड का एक बड़ा क्षेत्र है जिसके बीच एक बिंदु को मूलबिंदु चुनकर उसके देशांतर, अंक्षाश और उससे जानेवाली एक रेखा का*

*दिगंश तथा भू-गोलाभ से संबद्ध दो मापें स्वेच्छया से चुन ली जाती हैं)*

५९८. ***दाक्षायणी:*** *(प्रजापति) दक्ष की पुत्री, माँ (यहां माँ को सतीदेवी के रूप में प्रस्तुत किया गया है)*

५९९. ***दैत्यहन्त्री:*** *दैत्यों का संहार करने वाली माँ*

६००. ***दक्षयज्ञ-विनाशिनी:*** *(प्रजापति) दक्ष के यज्ञ को विध्वंस करने वाली माँ (प्रजापति दक्ष के यज्ञ में भगवान् शिव शंकर का अपमान सहन न कर पाने के कारण माँ ने अपने आपको योगाग्नि में भस्म कर दिया था एवं यज्ञ को विध्वंस कर दिया था, तदापि बाद में महर्षि भृगु ने यज्ञ की रक्षा की थी)*

**दरान्दोलित-दीर्घाक्षी दर-हासोज्ज्वलन्-मुखी ।**
**गुरुमूर्तिर् गुणनिधिर् गोमाता गुहजन्मभूः ॥ १२१॥**

६०१. ***दरान्दोलित-दीर्घाक्षी:*** *(दुष्टों के लिए) बड़े बड़े भयानक नेत्रों वाली माँ*

६०२. ***दर- हासोज्ज्वलन्-मुखी:*** *मुस्कुराती दीप्तिमान मुख वाली माँ*

६०३. ***गुरुमूर्तिर्:*** *गुरु माँ*

६०४. ***गुणनिधिर्:*** *उत्तम गुणों की कोष माँ*

६०५. ***गोमाता:*** *(इच्छा-पूर्ति करने वाली सुरभि गौ समान) गौ माता माँ*

६०६. ***गुहजन्मभूः*** *गुहा (सुब्रमण्या) की जननी, माँ*

**देवेशी दण्डनीतिस्था दहराकाश-रूपिणी ।**
**प्रतिपन्मुख्य-राकान्त-तिथि-मण्डल-पूजिता ॥ १२२॥**

६०७. ***देवेशी:*** *देवों की रक्षक माँ*

६०८. ***दण्डनीतिस्था:*** *विधि पालन-कर्ता माँ*

६०९. ***दहराकाशरूपिणी:*** *ईश्वर स्वरूपिणी माँ*

६१०. ***प्रतिपन्मुख्य-राकान्त-तिथि-मण्डल-पूजिता:*** *मास के प्रत्येक दिन, (कृष्णपक्ष की) प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक, आराध्य माँ*

**कलात्मिका कलानाथा काव्यालाप-विनोदिनी ।**
**सचामर-रमा-वाणी-सव्य-दक्षिण-सेविता ॥ १२३॥**

६११. ***कलात्मिका:*** *कला कौशल में निपुण माँ*
६१२. ***कलानाथा:*** *कला-कौशल की स्वामिनी माँ*
६१२. ***काव्यालाप-विनोदिनी:*** *काव्य सुनने में रूचि रखने वाली माँ*
६१४. ***सचामर-रमा-वाणी-सव्य-दक्षिण-सेविता:*** *जिनके बाईं ओर धन की देवी एवं दाहिनी ओर विद्या की देवी पंखा झलते हुए आराधना करती हों, ऐसी माँ*

**आदिशक्तिर् अमेया आत्मा परमा पावनाकृतिः ।**
**अनेककोटि-ब्रह्माण्ड-जननी दिव्यविग्रहा ॥ १२४॥**

६१५. ***आदिशक्तिर्:*** *मौलिक शक्ति वाली माँ*
६१६. ***अमेया:*** *जिन्हें मापा न जा सके, ऐसी माँ*
६१७. ***आत्मा:*** *शाश्वत तत्त्व माँ*
६१८. ***परमा:*** *सर्वश्रेष्ठ माँ*
६१९. ***पावनाकृतिः*** *अत्यंत पवित्र माँ*
६२०. ***अनेककोटि-ब्रह्माण्ड-जननी:*** *करोड़ों ब्रह्माण्ड की जननी, माँ*
६२१. ***दिव्यविग्रहा:*** *दिव्य शरीर वाली माँ*

**क्लींकारी केवला गुह्या कैवल्य-पददायिनी ।**
**त्रिपुरा त्रिजगद्वन्द्या त्रिमूर्तिस् त्रिदशेश्वरी ॥ १२५॥**

६२२. ***क्लीङ्कारी:*** *'क्लीं' अक्षर की जननी, माँ ('क्लीं' अक्षर के उच्चारण से दुर्गति-नाशिनी महाकाली को प्रसन्न कर शत्रुओं का नाश किया जा सकता है)*
६२३. ***केवला:*** *परम, पूर्ण एवं स्वतंत्र माँ*
६२४. ***गुह्या:*** *सभी गुप्त भेदों को जानने वाली माँ*

६२५. ***कैवल्य-पददायिनी:*** *मोक्ष-दायिनी माँ*
६२६. ***त्रिपुरा:*** *त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश) से भी अधिक पुरातन माँ*
६२७. ***त्रिजगद्वन्द्या:*** *तीनों लोकों के वासियों द्वारा आराध्य माँ*
६२८. ***त्रिमूर्तिस्:*** *त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश) की मूर्ति स्वरूपिणी माँ*
६२९. ***त्रिदशेश्वरी:*** *त्रिलोक (स्वर्ग, पृथ्वी एवं पाताल) में आराध्य माँ*

**त्र्यक्षरी दिव्य-गन्धाढ्या सिन्दूर-तिलकाञ्चिता ।**
**उमा शैलेन्द्रतनया गौरी गन्धर्व-सेविता ॥ १२६॥**

६३०. ***त्र्यक्षरि:*** *ॐ (त्रि-अक्षर) की जननी, माँ*
६३१. ***दिव्य-गन्धाढ्या:*** *दिव्य सुगंध से सुगन्धित माँ*
६३२. ***सिन्दूर-तिलकाञ्चिता:*** *माथे पर सिन्दूर तिलक से सुशोभित माँ*
६३३. ***उमा:*** *वैभवशाली माँ*
६३४. ***शैलेन्द्रतनया:*** *पर्वतराज (हिमालय) की पुत्री, माँ*
६३५. ***गौरी:*** *गौर वर्ण की माँ*
६३६. ***गन्धर्व-सेविता:*** *गंधर्वों की आराध्य माँ*

**विश्वगर्भा स्वर्णगर्भा अवरदा वागधीश्वरी ।**
**ध्यानगम्या अपरिच्छेद्या ज्ञानदा ज्ञानविग्रहा ॥ १२७॥**

६३७. ***विश्वगर्भा:*** *विश्व को अपने गर्भ में धारण करने वाली माँ (अर्थात विश्व-जननी, माँ)*
६३८. ***स्वर्णगर्भा:*** *ब्रह्माण्ड का हेतु माँ (अर्थात ब्रह्माण्ड का अस्तित्व माँ से ही है)*
६३९. ***अवरदा:*** *दुष्टों का नाश करने वाली माँ*
६४०. ***वागधीश्वरी:*** *वाक्शक्ति माँ*
६४१. ***ध्यानगम्या:*** *साधना से प्राप्त होने वाली माँ*
६४२. ***अपरिच्छेद्या:*** *अपरिमेय माँ*
६४३. ***ज्ञानदा:*** *(आत्म) ज्ञान देने वाली माँ*

६४४. ***ज्ञानविग्रहा:*** *(आत्म) ज्ञानावतार माँ (अर्थात आत्म-ज्ञान की उत्पत्ति माँ से ही हुई है)*

**सर्ववेदान्त-संवेद्या सत्यानन्द-स्वरूपिणी ।**
**लोपामुद्रार्चिता लीला-कृप्त-ब्रह्माण्ड-मण्डला ॥ १२८॥**

६४५. ***सर्ववेदान्त-संवेद्या:*** *समस्त वेद-वेदान्तों की ज्ञानी माँ*
६४६. ***सत्यानन्दस्व-रूपिणी:*** *सच्चिदानंद स्वरूपिणी माँ*
६४७. ***लोपामुद्रार्चिता:*** *लोपामुद्रा (महर्षि अगस्त्य जी की अर्धांगिनीं) द्वारा आराध्य माँ*
६४८. ***लीला-कृप्त-ब्रह्माण्ड-मण्डला:*** *ब्रह्माण्ड का खेल खेल में ही सृजन और पोषण करने वाली माँ*

**अदृश्या दृश्यरहिता विज्ञात्री वेद्यवर्जिता ।**
**योगिनी योगदा योग्या योगानन्दा युगन्धरा ॥ १२९॥**

६४९. ***अदृश्या:*** *सांसारिक नेत्रों से अदृश्य रहने वाली माँ (अर्थात माँ के दर्शन के लिए दिव्य-चक्षु चाहिए जो माँ की साधना से ही प्राप्त किए जा सकते हैं)*
६५०. ***दृश्यरहिता:*** *माँ के लिए कुछ भी अदृश्य नहीं (अर्थात सर्व-व्यापी माँ)*
६५१. ***विज्ञात्री:*** *भौतिक ब्रह्माण्ड के सत्य से भिज्ञ माँ*
६५२. ***वेद्यवर्जिता:*** *ऐसा ब्रह्माण्ड में कुछ नहीं, जिसका ज्ञान माँ को न हो*
६५३. ***योगिनी:*** *योग शक्ति की स्वामिनी माँ*
६५४. ***योगदा:*** *योग ज्ञान देने वाली माँ*
६५५. ***योग्या:*** *हर प्रकार से योग्य माँ (अर्थात सम्पूर्ण माँ)*
६५६. ***योगानन्दा:*** *योग द्वारा प्राप्त सच्चिदानंद माँ*
६५७. ***युगन्धरा:*** *अनंत माँ*

**इच्छाशक्ति-ज्ञानशक्ति-क्रियाशक्ति-स्वरूपिणी ।**
**सर्वाधारा सुप्रतिष्ठा सदसद्रूप-धारिणी ॥ १३०॥**

६५८. ***इच्छाशक्ति-ज्ञानशक्ति-क्रियाशक्ति-स्वरूपिणी:*** *संकल्प-शक्ति, ज्ञान-शक्ति एवं क्रिया-शक्ति की देवी माँ (अर्थात माँ के प्रसाद से ही प्राणीओं में इच्छा-शक्ति, आत्म-ज्ञान एवं शुभ-कर्म की प्रवृति जाग्रत होती है)*

६५९. ***सर्वाधारा:*** *सभी प्राणीओं का आधार माँ*

६६०. ***सुप्रतिष्ठा:*** *दृढ़ता से स्थापित माँ (अर्थात माँ को कोई विचलित नहीं कर सकता)*

६६१. ***सदसद्रूप-धारिणी:*** *चर एवं अचर (दोनों ही रूप) स्वरूपिणी माँ*

**अष्टमूर्तिर् अजाजैत्री लोकयात्रा-विधायिनी ।**
**एकाकिनी भूमरूपा निर्द्वैता द्वैतवर्जिता ॥ १३१॥**

६६२. ***अष्टमूर्तिर्:*** *आठों अवस्थाओं में विद्यमान माँ (अर्थात अष्टमूर्ति - क्षिति, जल, तेज, वायु, आकाश, यजमान, अर्क एवं चंद्र में विद्यमान माँ)*

६६३. ***अजाजैत्री:*** *अज्ञान दूर करने वाली माँ*

६६४. ***लोकयात्रा-विधायिनी:*** *संसार में रहकर प्राणियों के साथ किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए, उसे निर्धारित करने वाली माँ*

६६५. ***एकाकिनी:*** *एकता का पाठ पढ़ाने वाली माँ*

६६६. ***भूमरूपा:*** *समस्त पृथ्वी के समूहों की स्वामिनी माँ*

६६७. ***निर्द्वैता:*** *अद्वैतवादी माँ (अद्वैतवाद - सनातन धर्म का सिद्धांत जिसमें मात्र ब्रह्म को परमार्थिक सत्ता माना जाता है एवं जीव-जगत की सत्ता अवास्तविक या असत्य मानी जाती है)*

६६८. ***द्वैतवर्जिता:*** *द्वैतवाद से परे माँ (द्वैतवाद - अद्वैतवाद से भिन्न एवं उसका विरोध करनेवाला सिद्धांत, जीव एवं आत्मा में भेद मानने वाला सिद्धांत, आत्मा-परमात्मा में भेद दर्शाने वाला सिद्धांत)*

**अन्नदा वसुदा वृद्धा ब्रह्मात्मैक्य-स्वरूपिणी ।**
**बृहती ब्राह्मणी ब्राह्मी ब्रह्मानन्दा बलिप्रिया ॥ १३२॥**

६६९. ***अन्नदा:*** *प्राणीओं का पोषण करने वाली माँ*
६७०. ***वसुदा:*** *धन-धान्य देने वाली माँ*
६७१. ***वृद्धा:*** *सनातन माँ*
६७२. ***ब्रह्मात्मैक्य-स्वरूपिणी:*** *ब्रह्मात्मा स्वरूपिणी माँ (माँ ही ब्रह्म एवं आत्मा हैं)*
६७३. ***बृहती:*** *विशाल माँ*
६७४. ***ब्राह्मणी:*** *ब्रह्म-ज्ञानी माँ*
६७५. ***ब्राह्मी:*** *वाक् देवी माँ*
६७६. ***ब्रह्मानन्दा:*** *ब्रह्मानंद में लिप्त माँ*
६७७. ***बलिप्रिया:*** *यज्ञ-प्रसाद की प्रिया माँ*

**भाषारूपा बृहत्सेना भावाभाव-विवर्जिता ।**
**सुखाराध्या शुभकरी शोभना-सुलभा-गतिः ॥ १३३॥**

६७८. ***भाषारूपा:*** *सभी भाषाओं की ज्ञाता माँ*
६७९. ***बृहत्सेना:*** *एक बड़ी सेना का नेतृत्व करने वाली माँ*
६८०. ***भावाभाव-विवर्जिता:*** *भावनाओं से परे माँ (माँ एक न्यायाधीश हैं, अतः भावनाओं से परे होकर प्राणीओं के शुभ एवं अशुभ कर्मों का न्याय करती हैं)*
६८१. ***सुखाराध्या:*** *माँ की आराधना से सुख की प्राप्ति होती है*
६८२. ***शुभकरी:*** *मंगल करने वाली माँ*
६८३. ***शोभना-सुलभा-गतिः*** *सुलभ एवं पवित्र साधना से प्राप्त होने वाली माँ*

**राज-राजेश्वरी राज्य-दायिनी राज्य-वल्लभा ।**
**राजत्कृपा राजपीठ-निवेशित-निजाश्रिता ॥ १३४॥**

६८४. ***राज-राजेश्वरी:*** *सम्राटों की सम्राट माँ*
६८५. ***राज्य-दायिनी:*** *साम्राज्य देने वाली माँ*
६८६. ***राज्य-वल्लभा:*** *(अपने भक्तों के) साम्राज्यों की रक्षक माँ*
६८७. ***राजत्कृपा:*** *(अपने भक्त) सम्राटों पर कृपा करने वाली माँ*
६८८. ***राजपीठ-निवेशित-निजाश्रिता:*** *शरणागत सम्राटों को राज-सिंहासन पर बिठाने वाली माँ*

**राज्यलक्ष्मीः कोशनाथा चतुरङ्ग-बलेश्वरी ।**
**साम्राज्य-दायिनी सत्यसन्धा सागरमेखला ॥ १३५॥**

६८९. ***राज्यलक्ष्मी:*** *(सम्राटों के) राज्यों की लक्ष्मी माँ (अर्थात अपने भक्त सम्राटों के राज्यों को धन-धान्य एवं वैभव देने वाली माँ)*
६९०. ***कोशनाथा:*** *(अपने भक्त सम्राटों के राज्यों की) कोषाध्यक्ष माँ*
६९१. ***चतुरङ्ग-बलेश्वरी:*** *सेना के चार अंग- हस्ती, अश्व, रथ, पदाति, का नेतृत्व करने वाली माँ*
६९२. ***साम्राज्य-दायिनी:*** *(भक्त सम्राटों को) साम्राज्य देने वाली माँ*
६९३. ***सत्यसन्धा:*** *सत्य के प्रति समर्पित माँ*
६९४. ***सागरमेखला:*** *समुद्र को लपटने वाली माँ (अर्थात समुद्र को नियंत्रित करने वाली माँ)*

**दीक्षिता दैत्यशमनी सर्वलोक-वशङ्करी ।**
**सर्वार्थदात्री सावित्री सच्चिदानन्द-रूपिणी ॥ १३६॥**

६९५. ***दीक्षिता:*** *(गुरु) दीक्षा देने वाली माँ*
६९६. ***दैत्यशमनी:*** *दैत्यों का संहार करने वाली माँ*
६९७. ***सर्वलोक-वशङ्करी:*** *ब्रह्माण्ड को अपने नियंत्रण में रखने वाली माँ*
६९८. ***सर्वार्थदात्री:*** *(भक्तों की) इच्छा-पूर्ति हेतु वरदान देने वाली माँ*
६९९. ***सावित्री:*** *ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति करने वाली माँ*
७००. ***सच्चिदानन्द-रूपिणी:*** *सच्चिदानंद स्वरूपिणी माँ*

**देश-कालापरिच्छिन्ना सर्वगा सर्वमोहिनी ।**
**सरस्वती शास्त्रमयी गुहाम्बा गुह्यरूपिणी ॥ १३७॥**

*७०१. **देश-कालापरिच्छिन्ना:** समय एवं क्षेत्र से अमापित माँ (अर्थात माँ किसी एक समय अथवा किसी एक क्षेत्र में निवासित नहीं हैं, वह हर समय एवं हर क्षेत्र में विद्यमान हैं)*
*७०२. **सर्वगा:** सर्व-व्यापी माँ*
*७०३. **सर्वमोहिनी:** सभी को मोहित करने वाली माँ*
*७०४. **सरस्वती:** विद्या-दायिनी माँ (स्वयं सरस्वती स्वरूपिणी माँ )*
*७०५. **शास्त्रमयी:** स्वयं ही (धार्मिक) शास्त्र माँ*
*७०६. **गुहाम्बा:** गुह (सुब्रमण्य) की जननी, माँ*
*७०७. **गुह्यरूपिणी:** गुप्त रुप में विद्यमान माँ*

**सर्वोपाधि-विनिर्मुक्ता सदाशिव-पतिव्रता ।**
**सम्प्रदायेश्वरी साधु ई गुरुमण्डल-रूपिणी ॥ १३८॥**

*७०८. **सर्वोपाधि-विनिर्मुक्ता:** सभी बंधनों से मुक्त माँ*
*७०९. **सदाशिव-पतिव्रता:** (अपने पति) भगवान् शिव शंकर को सदैव समर्पित माँ*
*७१०. **सम्प्रदायेश्वरी:** सम्प्रदायों की सरंक्षक माँ (अर्थात माँ सनातन सम्प्रदायों के पवित्र परम्पराओं की रक्षा करती हैं)*
*७११. **साधु:** सभी के प्रति सम-भाव रखने वाली माँ*
*७१२. **ई:** ईश्वर स्वरूपिणी माँ*
*७१३. **गुरूमण्डल-रूपिणी:** गुरु परम्परा में सर्वोच्च गुरु माँ*

**कुलोत्तीर्णा भगाराध्या माया मधुमती मही ।**
**गणाम्बा गुह्यकाराध्या कोमलाङ्गी गुरुप्रिया ॥ १३९॥**

७१४. ***कुलोत्तीर्णा:*** *कुल (भक्तों के वंश) को तारने वाली माँ*
७१५. ***भगाराध्या:*** *भग-गुण धारीओं (भग गुण - ज्ञान, वैराग्य, धर्म, यश, ऐश्वर्य एवं श्री) से आराध्य माँ*
७१६. ***माया:*** *स्वयं ही माया, माँ*
७१७. ***मधुमती:*** *शहद समान मधुर माँ*
७१८. ***मही:*** *पृथ्वी-लोक की स्वामिनी माँ*
७१९. ***गणाम्बा:*** *(भगवान् शिव शंकर के) गणों की जननी, माँ*
७२०. ***गुह्यकाराध्या:*** *गुह्यकाओं (गुफा में रहने वाले योगिओं) द्वारा आराध्य माँ*
७२१. ***कोमलाङ्गी:*** *कोमल अंगों वाली माँ*
७२२. ***गुरुप्रिया:*** *गुरु की प्रिया, माँ (भगवान् शिव शंकर ही माँ के गुरु हैं, अतः भगवान् शिव शंकर की प्रिया, माँ)*

**स्वतन्त्रा सर्वतन्त्रेशी दक्षिणामूर्ति-रूपिणी ।**
**सनकादि-समाराध्या शिवज्ञान-प्रदायिनी ॥ १४०॥**

७२३. ***स्वतन्त्रा:*** *सभी बंधनों से स्वतंत्र माँ*
७२४. ***सर्वतन्त्रेशी:*** *सभी तांत्रिकों (एवं तंत्र मन्त्रों) की स्वामिनी माँ*
७२५. ***दक्षिणामूर्ति-रूपिणी:*** *कर्म-काण्ड, यज्ञ आदि में दक्षिणा (आहुति) को स्वीकार करने वाली देवी स्वरूपिणी माँ*
७२६. ***सनकादि-समाराध्या:*** *सनकादिक ऋषियों (ब्रह्मा के मानस पुत्रों) द्वारा आराध्य माँ*
७२७. ***शिवज्ञान-प्रदायिनी:*** *पवित्र (मंगल) ज्ञान दायिनी माँ*

**चित्कला आनन्द-कलिका प्रेमरूपा प्रियङ्करी ।**
**नामपारायण-प्रीता नन्दिविद्या नटेश्वरी ॥ १४१॥**

७२८. ***चित्कला:*** *ब्रह्म-चेतना माँ*
७२९. ***आनन्दकलिका:*** *आनंद दायिनी माँ*
७३०. ***प्रेमरूपा:*** *प्रेम रूप माँ*

*७३१. **प्रियङ्करी:** (भक्तों की) प्रिय इच्छा को फलीभूत करने वाली माँ*
*७३२. **नामपारायण-प्रीता:** नाम-जाप करने वालों (भक्तों) से प्रसन्न होने वाली माँ*
*७३३. **नन्दिविद्या:** नंदी मन्त्र (ॐ तत्पुरुषाय विद्महे, नन्दिकेश्वराय धीमहि, तन्नो वृषभरू प्रचोदयात्) की जननी, माँ*
*७३४. **नटेश्वरी:** भगवान् शिव शंकर की अर्धांगिनी, माँ*

**मिथ्या-जगदधिष्ठाना मुक्तिदा मुक्तिरूपिणी ।**
**लास्यप्रिया लयकरी लज्जा रम्भादिवन्दिता ॥ १४२॥**

*७३५. **मिथ्या-जगदधिष्ठाना:** मायावी ब्रह्माण्ड की अधिष्ठात्री देवी माँ*
*७३६. **मुक्तिदा:** मोक्ष दायिनी माँ*
*७३७. **मुक्तिरूपिणी:** मोक्ष स्वरूपिणी माँ (अर्थात मोक्ष दायिनी माँ)*
*७३८. **लास्यप्रिया:** लास्य नृत्य की प्रिया माँ (स्त्रियों का एक विशेष नृत्य जिसमें कोमल अंग भंगिमाओं के द्वारा मधुर भावों का प्रदर्शन होता है तथा जो श्रृंगार आदि कोमल रसों को उद्दीप्त करता है। इसमें गायन तथा वादन दोनों का योग रहता है)*
*७३९. **लयकरी:** (भक्ति-संगीत) लय में तन्मय करने वाली माँ*
*७४०. **लज्जा:** सुशील माँ*
*७४१. **रम्भादिवन्दिता:** रम्भा आदि (स्वर्ग की अप्सराओं) से आराध्य माँ*

**भवदाव-सुधावृष्टिः पापारण्य-दवानला ।**
**दौर्भाग्य-तूलवातूला जराध्वान्त-रविप्रभा ॥ १४३॥**

*७४२. **भवदाव-सुधावृष्टिः** वन-अग्नि में वर्षा समान (अपने भक्तों पर) अमृत की वर्षा करने वाली माँ*
*७४३. **पापारण्य-दवानला:** (भक्तों के) पापों को नष्ट करने के लिए वन-अग्नि के समान माँ*
*७४४. **दौर्भाग्य-तूलवातूला:** (भक्तों के) दुर्भाग्यों को भगाने के लिए (दूर करने*

*के लिए) झंझावात समान माँ*

७४५. ***जराध्वान्त-रविप्रभा:*** *(भक्तों के) अज्ञान (अंधकार) को दूर करने के लिए सूर्य किरण समान माँ*

**भाग्याब्धि-चन्द्रिका भक्त-चित्तकेकि-घनाघना ।**
**रोगपर्वत-दम्भोलिर् मृत्युदारु-कुठारिका ॥ १४४॥**

७४६. ***भाग्याब्धि-चन्द्रिका:*** *(भक्तों का) सौभाग्य जगाने के लिए पूर्ण चन्द्रमा स्वरूपिणी माँ*

७४७. ***भक्त-चित्तकेकि-घनाघना:*** *जिस प्रकार बादल मोरों के हृदयों को आनंदित करता है, उसी प्रकार भक्तों के हृदयों को आनंदित करने वाली (बादल स्वरूपिणी) माँ*

७४८. ***रोगपर्वत-दम्भोलिर्:*** *असाध्य (कठिन) रोगों को वज्र की भांति दूर करने वाली माँ (अर्थात जिस प्रकार वज्र शत्रुओं का संहार करता है, उसी प्रकार माँ असाध्य रोगों को भी निर्मूल कर देतीं हैं)*

७४९. ***मृत्युदारु-कुठारिका:*** *काल को कुठारी भांति काटने वाली माँ (अर्थात मृत्यु को भी माँ उसी प्रकार काट डालती हैं, भगा देतीं हैं, जिस प्रकार कुठारी काष्ठ को काट डालती है)*

**महेश्वरी महाकाली महाग्रासा महाशना ।**
**अपर्णा चण्डिका चण्डमुण्डासुर-निषूदिनी ॥ १४५॥**

७५०. ***महेश्वरी:*** *सर्वोच्च भगवती माँ*

७५१. ***महाकाली:*** *महाकाल स्वरूप भगवान् शिव शंकर की अर्धांगिनी माँ (महाकाली स्वरुप में माँ के पाँच मुख और आठ भुजाएँ मानी जाती हैं)*

७५२. ***महाग्रासा:*** *(प्रलय के समय) सर्वोच्च भक्षक माँ*

७५३. ***महाशना:*** *(भक्ष्य, अभक्ष्य) सभी प्रकार के भोजन खाने वाली सर्वोच्च माँ (अग्नि देव की भांति माँ भी सभी भक्ष्य एवं अभक्ष्य भोजन खाने में समर्थ हैं)*

७५४. ***अपर्णा***: *पत्र (पत्ते) तक खाना छोड़कर साधना करने वाली माँ (पार्वती के रूप में माँ ने भगवान् शिव शंकर को पति के रूप में प्राप्त करने के लिए घोर तपस्या की, यहां तक की पत्तों को भी भोजन में खाना बंद कर दिया, तब उनका नाम अपर्णा पड़ा)*

७५५. ***चण्डिका:*** *असुरों पर क्रोधित माँ*

७५६. ***चण्डमुण्डासुर-निषूदिनी:*** *चंड एवं मुंड असुरों का संहार करने वाली माँ*

**क्षराक्षरात्मिका सर्व-लोकेशी विश्वधारिणी ।**
**त्रिवर्गदात्री सुभगा त्र्यम्बका त्रिगुणात्मिका ॥ १४६॥**

७५७. ***क्षराक्षरात्मिका:*** *क्षर एवं अक्षर (नाशवान एवं अविनाशी) दोनों ही प्राणियों में विद्यमान माँ*

७५८. ***सर्व-लोकेशी:*** *समस्त लोकों की स्वामिनी माँ*

७५९. ***विश्वधारिणी:*** *विश्व का आधार माँ*

७६०. ***त्रिवर्गदात्री:*** *जीवन के तीनों लक्ष्य को प्रदान करने वाली माँ (प्राणियों के जीवन लक्ष्यों को प्रमुखतः तीन वर्गों में विभाजित किया गया है। **क.** अल्पकालीन लक्ष्य - यह लक्ष्य एकदम निकट भविष्य में किसी ध्येय, स्थिति अथवा वस्तु, जिसको हम प्राप्त करना चाहते हैं, उसका प्रतिनिधित्व करता है। इस लक्ष्य प्रबन्ध से निकट भविष्य का मार्ग प्रशस्त होता है। **ख.** मध्यवर्ती लक्ष्य – मध्यवर्ती लक्ष्य बहुधा किसी एक सामान्य ध्येय, स्थिति आदि के लिये समूह में कार्य करने का प्रतिनिधित्व करता है। यह लक्ष्य भविष्य की दिशा को निर्धारित करता है। समाज में प्राणी की भूमिका का ज्ञान कराता है। **ग.** दीर्घकालीन लक्ष्य – चुना गया व्यवसाय प्राप्त करना, विवाह करना, स्वयं का मकान बनवाना आदि दीर्घकालीन लक्ष्य के उदाहरण हैं। दीर्घकालीन लक्ष्यों की प्रगति का मापन समय के आधार पर होता है।)*

७६१. ***सुभगा:*** *सौभाग्य प्रदायिनी माँ*

७६२. ***त्र्यम्बका:*** *(सोम, सूर्य एवं अनल) तीन नेत्रों वाली माँ*

*७६३. **त्रिगुणात्मिका:** त्रिगुण (तमस, रजस एवं सत) की सार माँ*

**स्वर्गापवर्गदा शुद्धा जपापुष्प-निभाकृतिः ।**
**ओजोवती द्युतिधरा यज्ञरूपा प्रियव्रता ॥ १४७॥**

*७६४. **स्वर्गापवर्गदा:** (मृत्यु पश्चात) स्वर्ग एवं मोक्ष प्रदायिनी माँ*
*७६५. **शुद्धा:** पावन माँ*
*७६६. **जपापुष्प-निभाकृतिः** गुड़हल के पुष्प समान (सुन्दर) शरीर वाली माँ*
*७६७. **ओजोवती:** आभामयी माँ*
*७६८. **द्युतिधरा:** प्रकाश-आभा से भरपूर माँ*
*७६९. **यज्ञरूपा:** स्वयं ही यज्ञ माँ*
*७७०. **प्रियव्रता:** व्रत (उपवास) की अनुरक्त माँ (संकल्पों की अनुरक्त माँ)*

**दुराराध्या दुराधर्षा पाटली-कुसुम-प्रिया ।**
**महती मेरुनिलया मन्दार-कुसुम-प्रिया ॥ १४८॥**

*७७१. **दुराराध्या:** कठिन तपस्या से प्राप्त होने वाली माँ*
*७७२. **दुराधर्षा:** (दुष्टों के प्रति) असहिष्णु माँ*
*७७३. **पाटली-कुसुम-प्रिया:** हलके लाल तुरही के पुष्पों की अनुरक्त माँ*
*७७४. **महती:** महान माँ*
*७७५. **मेरुनिलया:** मेरु पर्वत निवासिनी माँ*
*७७६. **मन्दार-कुसुम-प्रिया:** मन्दार (स्वर्ग का एक वृक्ष) पुष्प की अनुरक्त माँ*

**वीराराध्या विराड्रूपा विरजा विश्वतोमुखी ।**
**प्रत्यग्रूपा पराकाशा प्राणदा प्राणरूपिणी ॥ १४९॥**

*७७७. **वीराराध्या:** वीरों द्वारा आराध्य माँ*
*७७८. **विराड्रूपा:** ब्रह्माण्डीय माँ*
*७७९. **विरजा:** रजस तत्व विहीन माँ (अर्थात सत स्वरूपी माँ)*

*७८०. **विश्वतोमुखी:** सर्वत्र वासी विश्व प्रेमी माँ*
*७८१. **प्रत्यग्रूपा**: चैतन्य-मयी माँ*
*७८२. **पराकाशा:** ब्रह्माण्डीय एवं भू प्राणीओं की हेतु माँ*
*७८३. **प्राणदा:** जीवन देने वाली माँ*
*७८४. **प्राणरूपिणी:** (प्राणीओं में) प्राण स्वरूपिणी माँ*

**मार्ताण्ड-भैरवाराध्या मन्त्रिणीन्यस्त-राज्यधू: ।**
**त्रिपुरेशी जयत्सेना निस्त्रैगुण्या परापरा ॥ १५०॥**

*७८५. **मार्ताण्ड-भैरवाराध्या:** दुर्जेय सूर्य देव की आराध्य माँ*
*७८६. **मन्त्रिणीन्यस्त-राज्यधू:** राज्य-मंत्रियों को उत्तरदायित्व देने वाली माँ (अर्थात साम्राज्य प्रशासन चलाने वाली माँ)*
*७८७. **त्रिपुरेशी:** त्रिपुरा की साम्राज्ञी माँ (अर्थात कामाख्या मंदिर की अधिष्ठात्री देवी माँ)*
*७८८. **जयत्सेना:** सेना को विजय दिलाने वाली माँ*
*७८९. **निस्त्रैगुण्या:** त्रिगुणों (तमस, रजस एवं सत) से परे माँ*
*७९०. **परापरा:** परा एवं अपरा (यौगिक एवं आध्यात्मिक) दोनों ही अवस्था में विद्यमान माँ*

**सत्य-ज्ञानानन्द-रूपा सामरस्य-परायणा ।**
**कपर्दिनी कलामाला कामधुक् कामरूपिणी ॥ १५१॥**

*७९१. **सत्य-ज्ञानानन्द-रूपा:** सत्य, ज्ञान एवं परमानंद स्वरूपिणी माँ*
*७९२. **सामरस्य-परायणा:** हर स्थिति में एक ही प्रकार की अनुभूति रखने वाली माँ*
*७९३. **कपर्दिनी:** भगवान् शिव शंकर (कपर्दी - जटाजूटधारी भगवान् शिव शंकर) की अर्धांगिनी, माँ*
*७९४. **कलामाला:** (६४) कलाओं से युक्त माला पहनने वाली माँ*
*७९५. **कामधुक्:** (भक्तों की) सभी इच्छाओं को पूर्ण करने वाली माँ*

*७९६. **कामरूपिणी:** काम स्वरूपिणी माँ ( अर्थात अत्यंत सुन्दर माँ)*

**कलानिधिः काव्यकला रसज्ञा रसशेवधिः ।**
**पुष्टा पुरातना पूज्या पुष्करा पुष्करेक्षणा ॥ १५२॥**

*७९७. **कलानिधिः** समस्त कलाओं में निपुण माँ*
*७९८. **काव्यकला:** काव्य (रचना) में निपुण माँ*
*७९९. **रसज्ञा:** अमृत धारिणी माँ*
*८००. **रसशेवधिः** अमृत का सेवन करने वाली माँ*
*८०१. **पुष्टा:** पोषण कराने वाली माँ*
*८०२. **पुरातना:** सनातन माँ*
*८०३. **पूज्या:** सभी की आराध्या माँ*
*८०४. **पुष्करा:** नील-कमल स्वरूपिणी माँ (अर्थात अत्यंत सुन्दर माँ)*
*८०५. **पुष्करेक्षणा:** कमल पत्र जैसे सुन्दर नेत्रों वाली माँ*

**परंज्योतिः परंधाम परमाणुः परात्परा ।**
**पाशहस्ता पाशहन्त्री परमन्त्र-विभेदिनी ॥ १५३॥**

*८०६. **परंज्योतिः** परम प्रकाशमयी माँ*
*८०७. **परंधाम:** परम धाम (कैलाश पर्वत) निवासिनी माँ*
*८०८. **परमाणुः** सूक्ष्म रूप में विद्यमान माँ*
*८०९. **परात्परा:** परम सर्वोच्च माँ*
*८१०. **पाशहस्ता:** कमन्द-धारी माँ*
*८११. **पाशहन्त्री:** (सांसारिक) बंधनों से मुक्त करने वाली माँ*
*८१२. **परमन्त्र-विभेदिनी:** शत्रुओं के तांत्रिक (अशुभ) मन्त्रों के प्रभाव को नष्ट करने वाली माँ*

**मूर्ता अमूर्ता अनित्यतृप्ता मुनिमानस-हंसिका ।**
**सत्यव्रता सत्यरूपा सर्वान्तर्यामिनी सती ॥ १५४॥**

*८१३. **मूर्ता:** साकार माँ*
*८१४. **अमूर्ता:** निराकार माँ*
*८१५. **अनित्यतृप्ता:** प्रत्येक स्थिति (यहाँ तक कि अस्थिर स्थिति में भी) में संतुष्ट रहने वाली माँ*
*८१६. **मुनिमानस-हंसिका:** ऋषियों के हृदय में हंस की भांति स्थित माँ*
*८१७. **सत्यव्रता**: सत्य धर्म का पालन करने वाली माँ*
*८१८. **सत्यरूपा:** स्वयं ही सत्य स्वरूपिणी, माँ*
*८१९. **सर्वान्तर्यामिनी:** सभी (भक्तों) के हृदय में वास करने वाली माँ*
*८२०. **सती:** सत का पालन करने वाली माँ (अथवा दक्ष-पुत्री, माँ)*

**ब्रह्माणी ब्रह्म जननी बहुरूपा बुधार्चिता ।**
**प्रसवित्री प्रचण्डा आज्ञा प्रतिष्ठा प्रकटाकृतिः ॥ १५५॥**

*८२१. **ब्रह्माणी:** ब्रह्म ज्ञान को प्राप्त माँ*
*८२२. **ब्रह्म:** स्वयं ही ब्रह्म, माँ*
*८२३. **जननी:** जन्म देने वाली एवं पोषण करने वाली माँ*
*८२४. **बहुरूपा:** अनेक स्वरूपों में विद्यमान माँ*
*८२५. **बुधार्चिता:** बुद्धिमानों द्वारा आराध्य माँ*
*८२६. **प्रसवित्री:** ब्रह्माण्ड की जननी, माँ*
*८२७. **प्रचण्डा:** (असुरों के प्रति) विस्मयकारी क्रोध से पूर्ण माँ*
*८२८. **आज्ञा:** दिव्य धर्मादेश देने वाली माँ*
*८२९. **प्रतिष्ठा:** सम्माननीय माँ*
*८३०. **प्रकटाकृतिः** (भक्तों की साधना से) साकार रूप में प्रकट होने वाली माँ*

**प्राणेश्वरी प्राणदात्री पञ्चाशत्पीठ-रूपिणी ।**
**विशृङ्खला विविक्तस्था वीरमाता वियत्प्रसूः ॥ १५६॥**

*८३१. **प्राणेश्वरी**: (पञ्च) प्राण की स्वामिनीं माँ (पञ्च-प्राण: प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान)*
*८३२. **प्राणदात्री:** जीवन दायिनी माँ*

*८३३. **पञ्चाशत्पीठ-रूपिणी:** सभी पचास प्रकारों की अर्चना की केंद्र माँ (३३ प्रकार के देवी-देवताओं की पूजा, १६ सनातन धर्म संस्कारों की पूजा एवं १ कुल देवी पूजा)*
*८३४. **विशृङ्खला:** स्वतंत्र माँ*
*८३५. **विविक्तस्था:** एकांत स्थानों में निवास करने वाली माँ*
*८३६. **वीरमाता:** वीरों की माँ*
*८३७. **वियत्प्रसू:** व्योम (अंतरिक्ष) में निवास करने वाली माँ*

**मुकुन्दा मुक्तिनिलया मूलविग्रह-रूपिणी ।**
**भावज्ञा भवरोगघ्नी भवचक्र-प्रवर्तिनी ॥ १५७॥**

*८३८. **मुकुन्दा:** (सांसारिक) बंधनों से मुक्त करने वाली माँ*
*८३९. **मुक्तिनिलया:** मोक्ष देने वाली माँ*
*८४०. **मूलविग्रह-रूपिणी:** दिव्य मूर्ति के मूल भाग में स्थित माँ (मंदिर में प्रतिष्ठापित देवी देवता की मूर्ति के मध्य भाग को मूल विग्रह कहा जाता है)*
*८४१. **भावज्ञा:** (भक्तों के) समस्त भावों की ज्ञाता माँ*
*८४२. **भवरोगघ्नी:** भव-सागर के बंधनों को नष्ट करने वाली माँ (अर्थात जन्म-मृत्यु के चक्र से छुटकारा दिलाने वाली माँ)*
*८४३. **भवचक्र-प्रवर्तिनी:** जन्म-मृत्यु के चक्र (भव-चक्र) को पलटने वाली माँ*

**छन्दःसारा शास्त्रसारा मन्त्रसारा तलोदरी ।**
**उदारकीर्तिर् उद्दामवैभवा वर्णरूपिणी ॥ १५८॥**

*८४४. **छन्दःसारा:** सभी वेद-वेदान्तों का सार, माँ*
*८४५. **शास्त्रसारा:** सभी शास्त्रों का सार, माँ*
*८४६. **मन्त्रसारा:** सभी मन्त्रों का सार, माँ*
*८४७. **तलोदरी:** अस्थूल कटि वाली माँ*
*८४८. **उदारकीर्तिर्:** अत्यधिक ख्याति प्राप्त माँ*
*८४९. **उद्दामवैभवा:** असीमित वैभव वाली माँ*

*८५०. **वर्णरूपिणी:** वर्ण-जननी (अक्षरों की जननी) माँ*

**जन्ममृत्यु-जरातप्त-जनविश्रान्ति-दायिनी ।**
**सर्वोपनिष-दुद्-घुष्टा शान्त्यतीत-कलात्मिका ॥ १५९॥**

*८५१. **जन्म-मृत्यु-जरातप्त-जनविश्रान्ति-दायिनी:** जन्म-मृत्यु के चक्र एवं रोगों से पीड़ित प्राणीओं को शान्ति एवं विश्राम देने वाली माँ (अर्थात रोगों से मुक्ति एवं मृत्यु के पश्चात मोक्ष दायिनी माँ)*
*८५२. **सर्वोपनिष-दुद्-घुष्टा:** उपनिषदों द्वारा महिमामंडन प्राप्त माँ*
*८५३. **शान्त्यतीत-कलात्मिका:** शांति दायिनी माँ*

**गम्भीरा गगनान्तस्था गर्विता गानलोलुपा ।**
**कल्पना-रहिता काष्ठा अकान्ता कान्तार्ध-विग्रहा ॥ १६०॥**

*८५४. **गम्भीरा:** गूढ़ माँ*
*८५५. **गगनान्तस्था:** अंतरिक्ष निवासिनी माँ*
*८५६. **गर्विता:** गौरवशाली माँ*
*८५७. **गानलोलुपा:** संगीत की अनुरक्त माँ*
*८५८. **कल्पना-रहिता:** कल्पना से वंचित माँ*
*८५९. **काष्ठा:** (सत्य) मार्ग प्रदर्शित करने वाली माँ*
*८६०. **अकान्ता:** पाप एवं दुःख का अंत करने वाली माँ*
*८६१. **कान्तार्ध-विग्रहा:** अर्ध-नारीश्वर स्वरूपिणी माँ*

**कार्यकारण-निर्मुक्ता कामकेलि-तरङ्गिता ।**
**कनत्कनकता-टङ्का लीला-विग्रह-धारिणी ॥ १६१॥**

*८६२. **कार्यकारण-निर्मुक्ता:** कारण, कर्म एवं बंधन से मुक्त माँ*
*८६३. **कामकेलि-तरङ्गिता:** कामेश्वर (भगवान् शिव शंकर) के साथ आनंदित माँ*

*८६४. **कनत्कनकता-टङ्का:** स्वर्ण से निर्मित कर्ण-फूल पहनने वाली माँ*
*८६५. **लीला-विग्रह-धारिणी:** लीला (खेल-खेल) से ही विविध रूप धारण करने वाली माँ*

**अजा क्षयविनिर्मुक्ता मुग्धा क्षिप्र-प्रसादिनी ।**
**अन्तर्मुख-समाराध्या बहिर्मुख-सुदुर्लभा ॥ १६२॥**

*८६६. **अजा:** जिनके जन्म समय का किसी को ज्ञान नहीं, अर्थात अजन्मा माँ*
*८६७. **क्षयविनिर्मुक्ता:** क्षय से मुक्त माँ (अर्थात अविनाशी माँ)*
*८६८. **मुग्धा:** अपनी सुंदरता से मुग्ध कर देनी वाली माँ*
*८६९. **क्षिप्र-प्रसादिनी:** (साधना से) शीघ्र ही प्रसन्न होने वाली माँ*
*८७०. **अन्तर्मुख-समाराध्या:** मष्तिष्क द्वारा अन्तर्मन से आराध्य माँ*
*८७१. **बहिर्मुख-सुदुर्लभा:** सांसारिक प्रवृति वाले प्राणीओं को दुर्लभता से प्राप्त होने वाली माँ*

**त्रयी त्रिवर्गनिलया त्रिस्था त्रिपुरमालिनी ।**
**निरामया निरालम्बा स्वात्मारामा सुधासृतिः ॥ १६३॥**

*८७२. **त्रयी:** स्वयं ही त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश) माँ*
*८७३. **त्रिवर्गनिलया:** प्राणीओं के जीवन के तीनों दुःख (आध्यात्मिक, आधिभौतिक और अधिदैविक) से मुक्ति देने वाली माँ*
*८७४. **त्रिस्था:** त्रि-लोक वासिनी माँ (अर्थात सर्व-व्यापी माँ)*
*८७५. **त्रिपुरमालिनी:** तीनों लोकों को सुशोभित करने वाली माँ*
*८७६. **निरामया:** सभी प्रकार की व्याधियों से परे माँ (अर्थात माँ को कोई व्याधि नहीं सता सकती)*
*८७७. **निरालम्बा:** किसी पर आधारित नहीं, ऐसी माँ (अर्थात स्वतंत्र माँ)*
*८७८. **स्वात्मारामा:** अपने में ही आनंदित रहने वाली माँ*
*८७९. **सुधासृतिः** अमृत की श्रोत माँ*

**संसारपङ्क-निर्मग्न-समुद्धरण-पण्डिता ।**
**यज्ञप्रिया यज्ञकर्त्री यजमान-स्वरूपिणी ॥ १६४॥**

*८८०. **संसारपङ्क-निर्मग्न-समुद्धरण-पण्डिता:** सांसारिक कर्मों (अथवा जन्म-मरण चक्र) के दलदल में फंसे प्राणीओं को इन कर्मों से मुक्ति दिलाने वाली कला में निपुण माँ*
*८८१. **यज्ञप्रिया:** यज्ञ की अनुरक्त माँ (अर्थात माँ को यज्ञ अति प्रिय हैं)*
*८८२. **यज्ञकर्त्री:** यज्ञ करने वाली माँ (अर्थात जो प्राणी यज्ञ करने की इच्छा रखते हैं, उनके यज्ञ सम्पूर्ण करने वाली माँ)*
*८८३. **यजमान-स्वरूपिणी:** यज्ञ में यजमान स्वरूपिणी माँ (अर्थात अपने भक्तों को यजमान स्वरुप में यज्ञ सम्पूर्ण करने की प्रेरणा देने वाली माँ)*

**धर्माधारा धनाध्यक्षा धनधान्य-विवर्धिनी ।**
**विप्रप्रिया विप्ररूपा विश्वभ्रमण-कारिणी ॥ १६५॥**

*८८४. **धर्माधारा:** धर्म का आधार माँ*
*८८५. **धनाध्यक्षा:** धन-धान्य की स्वामिनी माँ*
*८८६. **धनधान्य-विवर्धिनी:** (अपने भक्तों के) धन-धान्य की वृद्धि करने वाली माँ*
*८८७. **विप्रप्रिया:** ब्राह्मणों (विद्वानों) की प्रिय माँ*
*८८८. **विप्ररूपा:** स्वयं ही ब्राह्मण (विद्वान्) स्वरूप माँ*
*८८९. **विश्वभ्रमण-कारिणी:** (ज्ञान प्राप्ति के लिए) देशाटन की प्रेरणा देने वाली माँ*

**विश्वग्रासा विद्रुमाभा वैष्णवी विष्णुरूपिणी ।**
**अयोनिर् योनिनिलया कूटस्था कुलरूपिणी ॥ १६६॥**

*८९०. **विश्वग्रासा:** (प्रलय के समय) विश्व को निगलने वाली माँ*
*८९१. **विद्रुमाभा:** अति सुन्दर मूंगे की भांति लाल वर्ण से प्रकाशित माँ*

*८९२. **वैष्णवी:** स्वयं ही विष्णु स्वरुप में माँ*
*८९३. **विष्णुरूपिणी:** विष्णु रूप में विश्व का पालन करने वाली माँ*
*८९४. **अयोनिर्:** अजन्मी माँ (माँ के जन्म-स्रोत को कोई नहीं जानता)*
*८९५. **योनिनिलया:** (ब्रह्माण्ड की) उत्पत्ति की कारण माँ*
*८९६. **कूटस्था:** सर्वोपरि माँ*
*८९७. **कुलरूपिणी:** कुल देवी स्वरूपिणी माँ*

**वीरगोष्ठीप्रिया वीरा नैष्कर्म्या नादरूपिणी ।**
**विज्ञानकलना कल्या विदग्धा बैन्दवासना ॥ १६७॥**

*८९८. **वीरगोष्ठीप्रिया:** वीरों की सभा की अनुरक्त माँ*
*८९९. **वीरा:** पराक्रमी माँ*
*९००. **नैष्कर्म्या:** कार्यों से विरत माँ*
*९०१. **नादरूपिणी:** ध्वनि की जननी, माँ*
*९०२. **विज्ञानकलना:** वैज्ञानिक माँ (ब्रह्म-ज्ञाता माँ)*
*९०३. **कल्या:** सृजन कर्ता माँ*
*९०४. **विदग्धा:** सर्व गुण संपन्न माँ*
*९०५. **बैन्दवासना:** बैन्दव चक्र (भोहों के मध्य स्थान) में स्थित माँ*

**तत्त्वाधिका तत्त्वमयी तत्त्वमर्थ-स्वरूपिणी ।**
**सामगानप्रिया सौम्या सदाशिव-कुटुम्बिनी ॥ १६८॥**

*९०६. **तत्त्वाधिका:** दिव्य ब्रह्मज्ञानी माँ*
*९०७. **तत्त्वमयी:** स्वयं ही ब्रह्म माँ*
*९०८. **तत्त्वमर्थ-स्वरूपिणी:** तत एवं त्वम् स्वरूपिणी माँ (माँ ही ब्रह्म एवं आत्मा हैं)*
*९०९. **सामगानप्रिया:** साम-वेद गायन की अनुरक्त माँ*
*९१०. **सौम्या:** मृदु एवं भद्र माँ*
*९११. **सदाशिव-कुटुम्बिनी:** सदा शिव (दयालु एवं कल्याणकारी भगवान् शिव*

*शंकर) की अर्धांगिनी, माँ*

**सव्यापसव्य-मार्गस्था सर्वापद्विनिवारिणी ।**
**स्वस्था स्वभावमधुरा धीरा धीरसमर्चिता ॥ १६९॥**

९१२. ***सव्यापसव्य-मार्गस्था:*** *साधना के प्रत्येक मार्ग द्वारा प्राप्त माँ (माँ तांत्रिक मार्ग जिसे बाम-पंथ साधना कहा जाता है, अथवा सात्विक यौगिक साधना जिसे दक्षिण-पंथ साधना कहा जाता है, दोनों ही मार्ग से प्राप्त होतीं हैं)*
९१३. ***सर्वापद्विनिवारिणी:*** *हर संकट का निवारण करने वाली माँ*
९१४. ***स्वस्था:*** *समस्त वेदनाओं से रहित स्वस्थ माँ*
९१५. ***स्वभावमधुरा:*** *मधुर स्वभाव वाली माँ*
९१६. ***धीरा****: बुद्धि देने वाली माँ*
९१७. ***धीरसमर्चिता:*** *विद्वानों द्वारा पूजित माँ*

**चैतन्यार्घ्य-समाराध्या चैतन्य-कुसुमप्रिया ।**
**सदोदिता सदातुष्टा तरुणादित्य-पाटला ॥ १७०॥**

९१८. ***चैतन्यार्घ्य-समाराध्या:*** *चेतन भाव (जैसे यज्ञ आदि) से पूजित माँ*
९१९. ***चैतन्य-कुसुमप्रिया:*** *पुष्प सुगंध (अथवा उसके भाव) की अनुरक्त माँ*
९२०. ***सदोदिता:*** *सदैव देदीप्यमान माँ*
९२१. ***सदातुष्टा:*** *सदैव संतुष्ट रहने वाली माँ*
९२२. ***तरुणादित्य-पाटला:*** *प्रभात के सूर्य समान उज्जवलित माँ*

**दक्षिणा-दक्षिणाराध्या दरस्मेर-मुखाम्बुजा ।**
**कौलिनी-केवला अनर्घ्य-कैवल्य-पददायिनी ॥ १७१॥**

९२३. ***दक्षिणा-दक्षिणाराध्या:*** *वाम-पंथी (तांत्रिक मार्गी) एवं दक्षिण-पंथी (योग मार्गी), दोनों ही प्रकार के भक्तों द्वारा आराध्य माँ*
९२४. ***दरस्मेर-मुखाम्बुजा:*** *कमल स्वरुप मुख पर भीनी मुस्कान वाली माँ*

९२५. ***कौलिनी-केवला:*** *कौल पथ (तंत्र साधना की एक पद्धिति) के अनुयायीओं द्वारा पूजित माँ*
९२६. ***अनर्घ्य-कैवल्य-पददायिनी:*** *अमूल्य मोक्ष दायिनी माँ*

**स्तोत्रप्रिया स्तुतिमती श्रुति-संस्तुत-वैभवा ।**
**मनस्विनी मानवती महेशी मङ्गलाकृतिः ॥ १७२॥**

९२७. ***स्तोत्रप्रिया:*** *मंत्रोच्चारण की अनुरक्त माँ*
९२८. ***स्तुतिमती:*** *स्तुति की अधिकारिणी माँ*
९२९. ***श्रुति-संस्तुत-वैभवा****: श्रुति में जिनका महिमामंडन किया गया है, ऐसी माँ*
९३०. ***मनस्विनी:*** *आत्म-नियंत्रित माँ*
९३१. ***मानवती:*** *सम्मानित माँ*
९३२. ***महेशी:*** *भगवान् शिव शंकर की अर्धांगिनी, माँ*
९३३. ***मङ्गलाकृतिः*** *मंगल (शुभ) माँ*

**विश्वमाता जगद्धात्री विशालाक्षी विरागिणी ।**
**प्रगल्भा परमोदारा परामोदा मनोमयी ॥ १७३॥**

९३४. ***विश्वमाता:*** *विश्व की जननी, माँ*
९३५. ***जगद्धात्री:*** *विश्व की रक्षक एवं पोषक माँ*
९३६. ***विशालाक्षी:*** *बड़े बड़े नेत्रों वाली (सुन्दर) माँ*
९३७. ***विरागिणी:*** *वैरागी माँ*
९३८. ***प्रगल्भा:*** *बुद्धिमान माँ*
९३९. ***परमोदारा:*** *अत्यंत उदार माँ*
९४०. ***परामोदा:*** *परम आनंदमयी माँ*
९४१. ***मनोमयी:*** *अद्भुत मन-मोहक माँ*

**व्योमकेशी विमानस्था वज्रिणी वामकेश्वरी ।**
**पञ्चयज्ञ-प्रिया पञ्च-प्रेत-मञ्चाधिशायिनी ॥ १७४॥**

९४२. ***व्योमकेशी:*** *व्योमकेश (भगवान् शिव शंकर) की अर्धांगिनी, माँ*
९४३. ***विमानस्था***: *दिव्य रथ में आसीन माँ*
९४४. ***वज्रिणी:*** *वज्र (महा घातक अस्त्र) धारिणी माँ*
९४५. ***वामकेश्वरी:*** *वाम-केश्वर तंत्र (तंत्र की एक साधना) की स्वामिनी माँ*
९४६. ***पञ्चयज्ञ-प्रिया:*** *पांच प्रकार के यज्ञों (अग्निहोत्र यज्ञ, दर्शपूर्णमास यज्ञ, चातुर्मास्य यज्ञ, गौ-यज्ञ एवं सोम-यज्ञ) की अनुरक्त माँ*
९४७. ***पञ्च-प्रेत-मञ्चाधिशायिनी:*** *पञ्च-तत्वों (आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी) की स्वामिनी माँ (इन पञ्च-तत्वों को पञ्च-प्रेत अथवा पञ्च-भूत भी कहा जाता है)*

**पञ्चमी पञ्चभूतेशी पञ्च-संख्योपचारिणी ।**
**शाश्वती शाश्वतैश्वर्या शर्मदा शम्भुमोहिनी ॥ १७५॥**

९४८. ***पञ्चमी:*** *पांचवीं ईश्वर माँ (ईश्वर के पाँच रूप हैं- पर, व्यूह, विभव, अंतर्यामी और अर्चविता, माँ पांचवी रूप हैं)*
९४९. ***पञ्चभूतेशी***: *पञ्च-तत्वों (आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी) की स्वामिनी माँ*
९५०. ***पञ्च-सङ्ख्योपचारि:*** *अर्चना विधि की पांच वस्तुओं (इत्र, पुष्प, धूप-बत्ती, दिया एवं भोग) से आराध्य माँ*
९५१. ***शाश्वती:*** *अनादि माँ*
९५२. ***शाश्वतैश्वर्या:*** *अविनाशी माँ*
९५३. ***शर्मदा:*** *आनंद दायिनी माँ*
९५४. ***शम्भुमोहिनी:*** *भगवान् शिव शंकर को मोहित करने वाली उनकी अर्धांगिनी, माँ*

**धरा धरसुता धन्या धर्मिणी धर्मवर्धिनी ।**
**लोकातीता गुणातीता सर्वातीता शमात्मिका ॥ १७६॥**

९५५. ***धरा:*** *पृथ्वी स्वरूपिणी माँ*
९५६. ***धरसुता:*** *धर (हिमवान) की पुत्री, माँ*
९५७. ***धन्या:*** *धन-धान्य की स्वामिनी माँ*
९५८. ***धर्मिणी:*** *धर्म (सत्य) का अनुसरण करने वाली माँ*
९५९. ***धर्मवर्धिनी:*** *धर्म (सत्य) को प्रोत्साहित करने वाली माँ*
९६०. ***लोकातीता:*** *ब्रह्माण्ड देने वाली (अर्थात ब्रह्माण्ड की जननी) माँ*
९६१. ***गुणातीता:*** *(शुभ) गुण देने वाली माँ*
९६२. ***सर्वातीता:*** *(भक्तों को) सब कुछ देने वाली माँ*
९६३. ***शमात्मिका:*** *शान्ति एवं परमानंद देने वाली माँ*

**बन्धूक-कुसुमप्रख्या बाला लीलाविनोदिनी ।**
**सुमङ्गली सुखकरी सुवेषाढ्या सुवासिनी ॥ १७७॥**

९६४. ***बन्धूक-कुसुमप्रख्या****: बंधूक पुष्प (एक प्रकार का विशेष अति सुन्दर पुष्प जो अपराह्न में अति सुगंध के साथ खिलता है) समान सुन्दर एवं सुगन्धित माँ*
९६५. ***बाला:*** *बाल स्वरूपिणी (अर्थात सदैव युवती) माँ*
९६६ ***.लीलाविनोदिनी:*** *(अपनी) लीलाओं का आनंद लेने वाली माँ*
९६७. ***सुमङ्गली:*** *सदैव मंगल करने वाली माँ*
९६८. ***सुखकरी:*** *सदैव प्रसन्नता देने वाली माँ*
९६९. ***सुवेषाढ्या:*** *आभूषणों से सुशोभित अति सुन्दर माँ*
९७०. ***सुवासिनी:*** *सधवा (आंनदित पारिवारिक जीवन वाली) माँ*

**सुवासिन्यर्चन-प्रीता आशोभना शुद्धमानसा ।**
**बिन्दु-तर्पण-सन्तुष्टा पूर्वजा त्रिपुराम्बिका ॥ १७८॥**

९७१. ***सुवासिन्यर्चन-प्रीता:*** *सुहागन स्त्रियों की अर्चना से प्रसन्न होने वाली माँ*
९७२. ***आशोभना:*** *सदैव देदीप्यमान माँ*
९७३. ***शुद्धमानसा:*** *अपने भक्तों के मष्तिष्क को पवित्र करने वाली माँ*
९७४. ***बिन्दु-तर्पण-सन्तुष्टा:*** *बिंदु (श्रीचक्र) अर्पण करने वालों से प्रसन्न होने वाली माँ (श्रीचक्र एक तांत्रिक चक्र या यंत्र है जिसका उपयोग सिद्धि प्राप्त करने के लिए देवी के पूजन में होता है)*
९७५. ***पूर्वजा:*** *सनातन माँ*
९७६. ***त्रिपुराम्बिका:*** *त्रिपुर नगर की स्वामिनी माँ (भारत के पूर्वी क्षेत्र में बाणासुर द्वारा निर्मित एक भव्य नगर जहां त्रिपुर-सुंदरी, जो धन, ऐश्वर्य, भोग और मोक्ष की अधिष्ठात्री पार्वती रूप देवी हैं, उनकी स्तुति की जाती है)*

**दशमुद्रा-समाराध्या त्रिपुराश्री-वशङ्करी ।**
**ज्ञानमुद्रा ज्ञानगम्या ज्ञानज्ञेय-स्वरूपिणी ॥ १७९॥**

९७७. ***दशमुद्रा-समाराध्या:*** *दस मुद्रों द्वारा पूजित माँ (दस मुद्रा – सर्वसाक्षोभिणी, सर्वविद्राविनि, सर्वाकर्षिणि, सर्ववशङ्करि, सर्वोन्मादिनी, सर्वमहाङ्कुशा, सर्वखेचरी, सर्वबीजा, सर्वयोनि, सर्वत्रिखंडा)*
९७८. ***त्रिपुराश्री-वशङ्करी:*** *त्रिपुर नगर के वैभव (धन-धान्य) की स्वामिनी माँ*
९७९. ***ज्ञानमुद्रा:*** *ज्ञान मुद्रा की स्वामिनी माँ (तंत्र विद्या की एक मुद्रा जिसमें दाहिने हाथ की तर्जनी को अँगूठे से मिलाकर हाथ में रखा जाता है एवं बाएँ हाथ की उँगलियों को कमल-संपुट की आकृति देकर सिर से लेकर बाएँ जंघे तक घुमाया जाता है। इस विद्या से बुद्धिमता प्राप्त होती है।)*
९८०. ***ज्ञानगम्या:*** *ज्ञान (योग साधना ज्ञान) से प्राप्त होने वाली माँ*
९८१. ***ज्ञानज्ञेय-स्वरूपिणी:*** *ज्ञान एवं ज्ञानी माँ*

**योनिमुद्रा त्रिखण्डेशी त्रिगुणा अम्बा त्रिकोणगा ।**
**अनघा अद्भुत-चारित्रा वाञ्छितार्थ-प्रदायिनी ॥ १८०॥**

९८२. ***योनिमुद्रा:*** *योनिमुद्रा की स्वामिनी माँ (योनिमुद्रा तांत्रिक मुद्राओं में से एक है जो यौन शक्ति को बढ़ावा देने के लिए प्रयोग में लाई जाती है।)*

९८३. ***त्रिखण्डेशी:*** *त्रिखंड मुद्रा की स्वामिनी माँ (त्रिखंड मुद्रा तांत्रिक मुद्राओं में से एक है जो सिद्धि प्राप्त करने के लिए उपयोग में लाई जाती है)*

९८४. ***त्रिगुणा****: त्रि-गुण (सत, रजस एवं तमस) की स्वामिनी माँ*

९८५. ***अम्बा:*** *ब्रह्माण्ड की जननी, माँ*

९८६. ***त्रिकोणगा:*** *(अनंत) त्रिकोण (जन्म, मृत्यु एवं मोक्ष) में निवास करने वाली माँ*

९८७. ***अनघा:*** *पवित्र माँ*

९८८. ***अद्भुत-चारित्रा:*** *आश्चर्यजनक (शुभ) कार्यों को करने वाली माँ*

९८९. ***वाञ्छितार्थ-प्रदायिनी:*** *(भक्तों की) वांछित इच्छाओं की पूर्ति करने वाली माँ*

**अभ्यासातिशय-ज्ञाता षडध्वातीत-रूपिणी ।**
**अव्याज-करुणा-मूर्तिर् अज्ञान-ध्वान्त-दीपिका ॥ १८१॥**

९९०. ***अभ्यासातिशय-ज्ञाता:*** *आध्यात्मिक कठिन साधनाओं द्वारा प्राप्त होने वाली माँ*

९९१. ***षडध्वातीत-रूपिणी:*** *जीवन की छह अवस्थाओं को निर्देशित करनी वाली माँ (जीवन की छै अवस्थाएं: बालपन, किशोर, विद्यार्थी, विवाहित, वानप्रस्थ एवं संन्यास)*

९९२. ***अव्याज-करुणा-मूर्तिर्:*** *पवित्र करुणामयी माँ*

९९३. ***अज्ञान-ध्वान्त-दीपिका:*** *अज्ञान के अंधकार को दीपक के प्रकाश समान दूर करने वाली माँ*

**आबाल-गोप-विदिता सर्वानुल्लङ्घ्य-शासना ।**
**श्रीचक्रराज-निलया श्रीमत्-त्रिपुरसुन्दरी ॥ १८२॥**

९९४. ***आबाल-गोप-विदि:*** *बालक एवं गौ-पालकों की सरंक्षक माँ*
९९५. ***सर्वानुल्लङ्घ्य-शासना:*** *जिनकी आज्ञा का उल्लंघन करने का साहस किसी में नहीं, ऐसी शासक माँ*
९९६. ***श्रीचक्रराज-निलया:*** *श्रीचक्र के केंद्र में निवास करने वाली माँ (श्रीचक्र तांत्रिक विद्या का एक चक्र है)*
९९७. ***श्रीमत्-त्रिपुरसुन्दरी:*** *त्रिपुर नगर की अत्यंत सुंदरी स्वामिनी माँ*

**श्रीशिवा शिव-शक्त्यैक्य-रूपिणी ललिताम्बिका ।**

९९८. ***श्रीशिवा:*** *शुभ एवं दिव्य माँ*
९९९. ***शिव-शक्तैक्य-रूपिणी:*** *शिव एवं शक्ति, दोनों ही रूप में, स्थित माँ*
१०००. ***ललिताम्बिका:*** *दिव्य ललिता (अत्यंत सुन्दर) माँ*

**एवं श्रीललिता देव्या नाम्नां साहस्रकं जगुः ॥**

*भावार्थ: आध्यात्मिकता जाग्रत करने वाले दिव्य देवी श्री ललिता के सहस्त्र नाम*

**॥ इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे उत्तरखण्डे श्रीहयग्रीवागस्त्यसंवादे श्रीललिता सहस्रनाम स्तोत्र कथनं सम्पूर्णम् ॥**

*श्रीब्रह्माण्डपुराण के उत्तरखंड में कथित श्री हयग्रीव (भगवान् विष्णु का एक नाम) एवं महर्षि अगस्त्य के मध्य हुआ श्रीललिता सहस्रनाम स्तोत्र का वार्तालाप सम्पूर्ण हुआ।*

# श्रीललितापञ्चरत्नम्

**प्रात: स्मरामि ललिता-वदनारविन्दं विम्बाधरं पृथुल-मौक्तिक-शोभिनासम्।**
**आकर्णदीर्घनयनं मणिकुण्डलाढ्यं मन्दस्मितं मृगमदोज्ज्वलभालदेशम्॥१॥**

*भावार्थ: प्रातःकाल ललिता देवी के उस मनोहर मुख-कमल का स्मरण करता हूँ, जिनके बिम्ब समान रक्तवर्ण अधर, विशाल मौक्तिक (मोती के बुलाक) से सुशोभित नासिका और कर्ण पर्यन्त फैले हुए विस्तीर्ण नैन हैं, जो मणिमय कुण्डल और मन्द मुसकान से युक्त हैं तथा जिनका ललाट कस्तूरिका तिलक से सुशोभित है।*

**प्रातर्भजामि ललिताभुजकल्पवल्लीं रक्ताङ्गुलीय-लसदङ्गुलि-पल्लवाढ्याम्।**
**माणिक्यहेम-वलयाङ्गद-शोभमानां पुण्ड्रेक्षुचाप-कुसुमेषु-सृणीदधानाम्॥२॥**

*भावार्थ: मैं श्री ललितादेवी की भुजा रूपिणी कल्पलता का प्रातःकाल स्मरण करता हूँ जो लाल अंगूठी से सुशोभित सुकोमल अंगुलि रूप पल्लवों वाली तथा रत्नखचित सुवर्ण कंकण और अंगदादि से भूषित है एवं जिन्होंने पुण्ड्र-ईख के धनुष, पुष्पमय बाण और अंकुश धारण किये हैं।*

**प्रातर्नमामि ललिताचरणारविन्दं भक्तेष्टदाननिरतं भवसिन्धुपोतम्।**
**पद्मासनादि-सुरनायकपूजनीयं पद्माङ्कुश-ध्वज-सुदर्शन-लाञ्छनाढ्यम्॥३॥**

*भावार्थ: मैं श्री ललितादेवी के चरण कमलों को, जो भक्तों को अभीष्ट फल देने वाले और संसार सागर के लिये सुदृढ़ जहाज रूप हैं तथा कमलासन श्री ब्रह्मा जी आदि देवेश्वरों से पूजित और पद्म, अंकुश, ध्वज एवं सुदर्शनादि मंगलमय चिह्नों से युक्त हैं, प्रातःकाल नमस्कार करता हूँ।*

**प्रात: स्तुवे परशिवां ललितां भवानी त्रय्यन्त-वेद्यविभवां करुणानवद्याम्।**
**विश्वस्य सृष्टिविलयस्थिति-हेतुभूतां विद्येश्वरीं निगम-वाङ्मनसातिदूराम्॥४॥**

*भावार्थ: मैं प्रातःकाल परम कल्याण रूपिणी श्री ललिता भवानी की स्तुति करता हूँ जिनका वैभव वेदान्तवेद्य है जो करुणामयी होने से शुद्ध स्वरूपा हैं, विश्व की उत्पत्ति, स्थिति और लय की मुख्य हेतु हैं, विद्याकी अधिष्ठात्री देवी हैं तथा वेद, वाणी और मन की गति से अति दूर हैं।*

**प्रातर्वदामि ललिते तव पुण्यनाम कामेश्वरीति कमलेति महेश्वरीति।**
**श्रीशाम्भवीति जगतां जननी परेति वाग्देवतेति वचसा त्रिपुरेश्वरीति॥५॥**

*भावार्थ: हे ललिते! मैं तेरे पुण्यनाम कामेश्वरी, कमला, महेश्वरी, शाम्भवी, जगज्जननी, परा, वाग्देवी तथा त्रिपुरेश्वरी आदि का प्रातःकाल अपनी वाणी द्वारा उच्चारण करता हूँ।*

**य: श्लोकपञ्चकमिदं ललिताम्बिकाया: सौभाग्यदं सुललितं पठति प्रभाते।**
**तस्मै ददाति ललिता झटिति प्रसन्ना विद्यां श्रियं विमल-**
**सौख्यमनन्तकीर्तिम्॥६॥**

*भावार्थ: माता ललिता के अति सौभाग्यप्रद और सुललित इन पाँच श्लोकों को जो पुरुष प्रातःकाल पढ़ता है उसे शीघ्र ही प्रसन्न होकर ललिता देवी विद्या, धन, निर्मल सुख और अनन्त कीर्ति देती हैं।*

**॥श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं श्रीललितापञ्चरत्नम् तत्सत्॥**

# गुरु-शब्द

*ललिता मां को आद्याशक्ति माना जाता है। अन्य विद्याएँ भोग या मोक्ष में से एक ही देती हैं परंतु भगवती महा-त्रिपुर-सुंदरी ललिता महाविद्या अपने उपासक को भुक्ति और मुक्ति दोनों प्रदान करती हैं। इन आद्याशक्ति षोडशी महाविद्या के स्थूल, सूक्ष्म, पर तथा तुरीय चार रूप हैं।*

*एक बार पराम्बा पार्वतीजी ने भगवान् शिव से पूछा, 'भगवन्, आपके द्वारा प्रकाशित तन्त्रशास्त्र की साधना से जीव के आधि-व्याधि, शोक-संताप, दीनता-हीनता तो दूर हो जायेंगे किन्तु गर्भवास और मरण के असह्य दुःख की निवृति तो इससे नहीं होगी। कृपा करके इस दुःख से निवृत्ति और मोक्षपद की प्राप्ति का कोई उपाय बताइये।'*

*परम कल्याणमयी पराम्बा के अनुरोध पर भगवान् शंकर ने षोडशी श्री विद्या साधना प्रणाली को प्रकट किया। भगवान् शङ्कराचार्य ने भी श्री विद्या के रूप में इन्हीं षोडशी देवी की उपासना की थी। इसीलिये आज भी सभी शाङ्कर पीठों में भगवती षोडशी राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी की श्री यन्त्र के रूप में आराधना करने की परम्परा चली आ रही है।*

*इस लोक में श्री विद्या का सामान्य ज्ञान रखने वाले कुछ साधक तो सुलभ हैं परंतु विशेष ज्ञाता अत्यन्त दुर्लभ हैं। कारण, श्रीविद्या रहस्यमयी गुप्तविद्या है। इसका मंत्रोपदेश गुरु परम्परा द्वारा योग्य साधकों को ही दिया जाता है। भगवती की आराधना प्रदर्शनी के लिये नहीं होनी चाहिये। उत्तम तो यही है कि जिनके पास पर्याप्त समय हो, विश्वास हो, श्रद्धा हो, जो नित्य इसका जप आदि कर सकने में सक्षम हों वे ही योग्य गुरु से श्री विद्या के मन्त्र की दीक्षा लें और नित्य जपादि करें। हालांकि योग्य गुरु न मिलने पर आगमोक्त "मन्त्र ग्रहण विधि" का आश्रय लेकर भी साधक स्वयमेव दीक्षित हो सकता है परन्तु मार्गदर्शन तो गुरु ही करता है। इस श्रीविद्या का प्रकाशन हर किसी के समक्ष नहीं करना चाहिये। सामान्य आराधकों को स्तोत्रों के पाठ से ही भगवती की आराधना करनी चाहिये।*

*दुर्गुणों का सर्वथा त्याग कर श्री विद्या की आराधना में सुपात्र बनना अति आवश्यक है। गुणवानों की निरन्तर निन्दा करने वाले, आर्जव-शून्य (जिसमें इंद्रियों का दासत्व, सीधे पन का अभाव हो, कुटिल हो), नित्य स्त्री प्रसंग करने वाले, उद्दण्ड,*

*मन-वाणी-कर्म से गुरू-भक्ति-हीनता आदि दोषों से युक्त व्यक्ति से श्री विद्या की सदा रक्षा करनी चाहिये। 'षोडशिकार्णव' में कहा गया है, "नास्तिकों को, सुनने की अनिच्छा वालों को एवं अर्थ का अनर्थ ढाने वालों को यह विद्या कभी नहीं देनी चाहिये। अन्यथा उपदेष्टा गुरु शिष्य के पापों से लिप्त हो जाता है।"*

*ध्यान की महिमा मन्त्र जप से भी अधिक बतलाई गई है। आद्याशक्ति श्रीविद्या के ये तीन प्रकार के मुख्य स्वरूप हैं- श्री बाला-त्रिपुर-सुन्दरी, श्री षोडशी-त्रिपुर-सुन्दरी और श्री ललिता-त्रिपुर-सुन्दरी।*

*श्रीविद्या की विस्तृत पूजा के विधि-विधान बहुत समय साध्य हैं, अतः खड्गमाला, अष्टोत्तरशत नाम, सहस्त्रनाम आदि स्तोत्रों के द्वारा भी श्री ललिता महाविद्या की आराधना की जाती है। तन्त्र ग्रन्थों में षोडशी महाविद्या के प्रातः स्मरण, शतनाम, सहस्त्रनाम, मानस पूजन, कवच, हृदय, खड्गमाला आदि बहुत से उत्तम स्तोत्र मिलते हैं जिनके माध्यम से भगवती षोडशी की स्तोत्रात्मक स्तुति उत्तम प्रकार से की जाती है। आद्य शंकराचार्य जी द्वारा रचित 'सौंदर्य लहरी' नामक स्तोत्र सौ श्लोकों का है।*

*श्रीविद्या के सामान्य आराधकों को भगवती के विविध स्तोत्रों का सहारा ले लेना चाहिये। धर्मग्रन्थों में भगवती महा-त्रिपुर-सुन्दरी के विविध स्तोत्रों का विशाल संग्रह प्राप्त होता है। यहां भगवती ललिताम्बा का प्रातः स्मरण स्तोत्र प्रस्तुत है, शङ्कराचार्यजी के द्वारा रचित इस स्तोत्र को ललितापंचक स्तोत्र अथवा ललिता पञ्चरत्न स्तोत्र भी कहा जाता है।*

*माँ ललिताम्बा सभी को सुख, धन-धान्य, वैभव, आत्मिका एवं मरण उपरान्त मोक्ष प्रदान करे|*

***ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः***

## डॉ यतेंद्र शर्मा

एक हिन्दू सनातन परिवार में जन्मे डॉ यतेंद्र शर्मा की रूचि बचपन से ही सनातन धर्म ग्रंथों का पठन पाठन एवं श्रवण में रही है। संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा उन्होंने अपने पितामह श्री भगवान् दास जी एवं नरवर संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सालिग्राम अग्निहोत्री जी से प्राप्त की और पांच वर्ष की आयु में महर्षि पाणिनि रचित संस्कृत व्याकरण कौमुदी को कंठस्थ किया। उन्होंने तकनीकी विश्वविद्यालय ग्राज़ ऑस्ट्रिया से रसायन तकनीकी में पी.अच्.डी की उपाधि विशिष्टता के साथ प्राप्त की। सन १९८९ से डॉ यतेंद्र शर्मा अपने परिवार सहित पर्थ, ऑस्ट्रेलिया, में निवास कर रहें हैं, तथा पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के खनन उद्योग में कार्य रत हैं।

सन २०१६ में उन्होंने अपने कुछ धार्मिक मित्रों के साथ एक धार्मिक संस्था 'श्री राम कथा संस्थान पर्थ' की स्थापना की। यह संस्था श्री भगवान् स्वामी रामानंद जी महाराज (१४वीं- १५वीं शताब्दी) की शिक्षाओं से प्रभावित है, तथा समय समय पर गोस्वामी तुलसी दास जी रचित 'श्री राम चरित मानस' एवं अन्य धार्मिक कथाओं का प्रवचन, सनातन धर्म के महान संतों, महर्षियों, माताओं का चरित्र वर्णन एवं धार्मिक कथाओं के संकलन में अपना योगदान करने का प्रयास करती रहती है।

**श्री राम कथा संस्थान**
**३५ मायना रिट्रीट, हिलरीज़, पर्थ**
**ऑस्ट्रेलिआ – ६०२५**
**Website: https://shriramkatha.org**
**Email: srkperth@outlook.com**